bjpkamaljyoti@gmail.com मूल्य : ₹10 अंक – 9, दिसम्बर प्रथम/दिव्य काशी, भव्य काशी अंक 2021, कुल पृष्ठ – 48

वर्तमान

कमल ज्योति

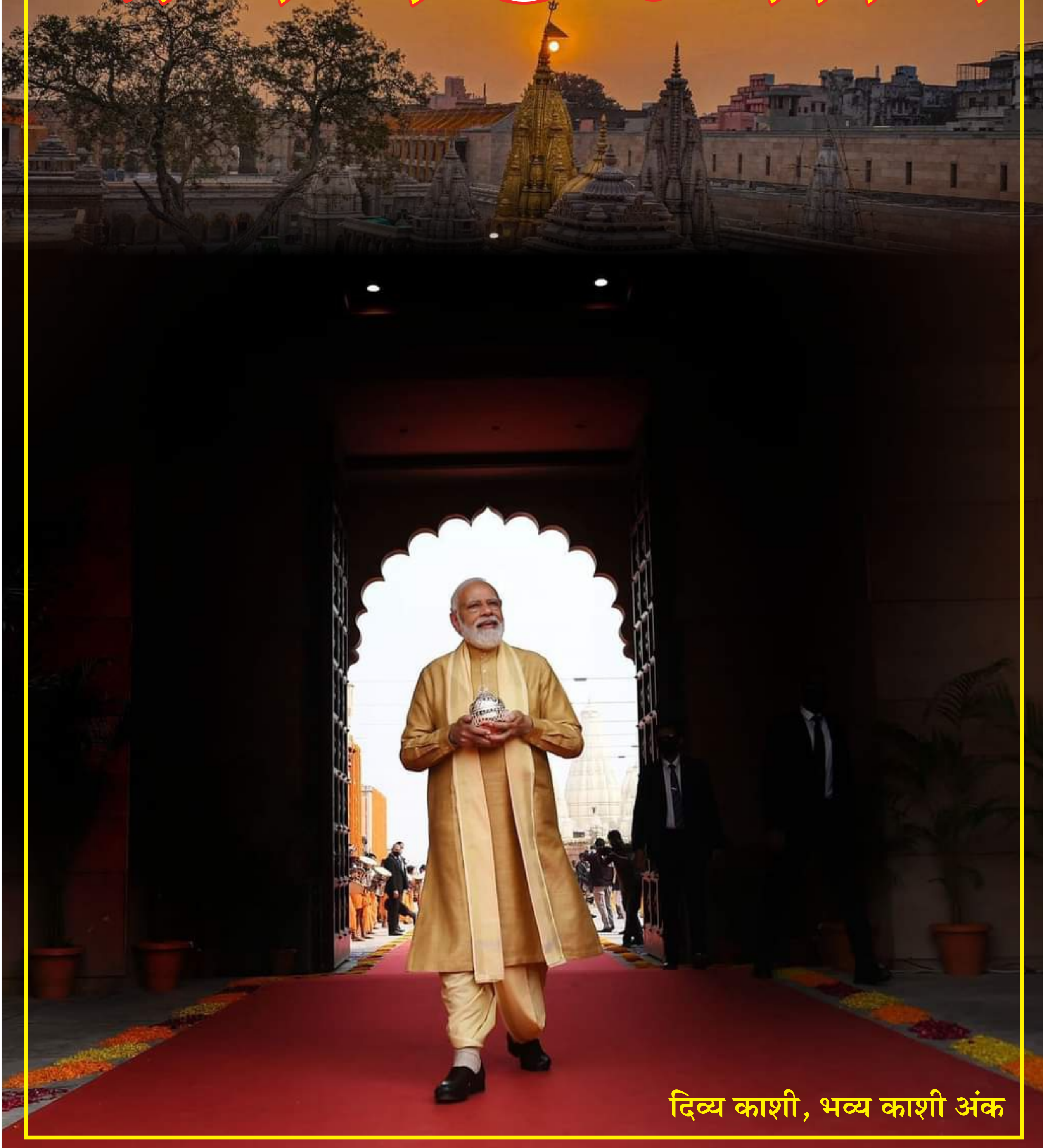

दिव्य काशी, भव्य काशी अंक

गोरखपुर फर्टीलाइजर एवं एम्स का शिलान्यास

सरयू नहर राष्ट्रीय परियोजना राष्ट्र को समर्पित

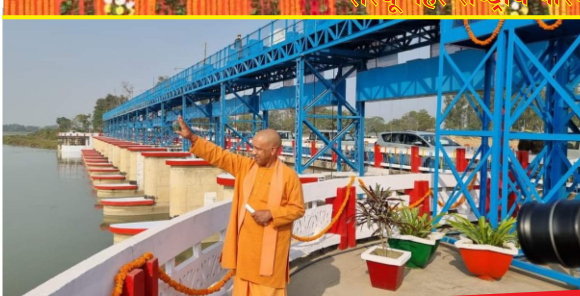

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री स्वतंत्र देव सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

जय भारती!

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संपादकीय

प्रविष्टा त्रिपथा गंगा तस्मिन क्षेत्रे मम प्रिय!

13 दिसंबर 2021। सोमवार का दिन। प्रधानमंत्री जी ने 13 दिसंबर को दोपहर 1 बजकर 37 मिनट से 1 बजकर 57 मिनट के बीच 20 मिनटों में अपने ड्रीम प्रोजेक्ट विश्वनाथ धाम का लोकार्पण किया। उस समय रेवती नक्षत्र रहा। सोमवार और रेवती नक्षत्र का योग मातंग योग बनता है। मातंग यानी हाथी। हाथी काफी बलवान होता है और हाथी मंगल और शुभ है। काशी विश्वनाथ कारीडोर का भव्य, अलौकिक, अकल्पनीय लोकार्पण विशाल कार्यक्रम में हुआ। भगवान शिव के इस प्राचीन दिव्य धाम के भव्य आलौकिक लोकार्पण को संपूर्ण विश्व ने देखा।

तीन लोक से न्यारी है महादेव के त्रिशूल पर बसी काशी। यह वह नगरी है जिसके अधिपति बाबा विश्वनाथ, पालक माता अन्नपूर्णा तथा रक्षक स्वयं बाबा कालभैरव हैं। जहां श्मशान भी शिव की लीलाभूमि है और मां गंगा का अंतिम स्पर्श मोक्ष का द्वार। मृत्युभय से मुक्त काशी जीवन का शाश्वत उत्सव है और आज तो यह उल्लास जैसे गंगा से उठकर आकाशगंगा को छूना चाहता है। अवसर ही ऐसा अविस्मरणीय है। प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त हळ्ईं, कल सोमवार 13 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी श्रीकाशी विश्वनाथ धाम का लोकार्पण करेंगे।

अविश्वसनीय किंतु सत्य! अविनाशी काशी में यह मुहावरा चरितार्थ हुआ है, हो रहा है। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम की योजना के मूर्तरूप लेने के साथ ही काशी के मर्मस्थल का भूगोल बदल गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट 'श्रीकाशी विश्वनाथ धाम' संकल्पना के रूपाकार ग्रहण करने के साथ ही विश्वनाथ धाम की वर्तमान छवि इसी स्वतंत्रता के 75 सालों में अर्जित-अनुभूत एक प्रधानमंत्री के विशेष संकल्प की ऐतिहासिक परिणति है। कई पीढ़ियों का जन्म इसी विश्वनाथ धाम की भूमि पर, शिक्षा-दीक्षा विश्वनाथ मंदिर द्वारा संचालित विश्वनाथ सनातन धर्म हायर सेकेंडरी स्कूल में, खेलकूद और 'संघ' की शाखा ज्ञानवापी मैदान में और इसी तरह 'बाबा' के अमोघ पुण्यक्षेत्र से मिली ऊर्जा जीवन का संबल बनी होगी। आज गलियों की भूलभुलैया में सिमटा पूरा क्षेत्र सचमुच एक 'धाम' बन चुका है। एक अदम्य साहस और संकल्प के परिणामस्वरूप श्रीकाशी विश्वनाथ धाम का अस्तित्व 'न भूतो न भविष्यति' की प्रतिध्वनि है।

इसे चमत्कार ही कहेंगे। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम के लिए क्षेत्र के 400 से अधिक भवनों का अधिग्रहण और कुछ लोगों द्वारा स्वेच्छा से किया गया समर्पण- सब कुछ अचंभित करने वाला। विश्वनाथ धाम के प्रस्तावित विस्तार क्षेत्र में स्थित लोगों ने अपने पैतृक आवास, अपनी मातृ संस्था - विद्यालय, गंगाघाट, बचपन के संगी-साथी, बड़े हनुमान मंदिर के अखाड़े, छोटे-बड़े मंदिरों के क्षेत्र का सम्मोहन सब कुछ पर श्रीकाशी विश्वनाथ धाम की वर्तमान छटा, विस्तार और नयनाभिराम दृश्य सब पर भारी रहा है। केवल सांसद ही नहीं, प्रधानमंत्री चुनने के गर्व से गौरवान्वित काशी में यह बड़ा बदलाव है, जिसका पूरा विश्व साक्षी हैं। 13 दिसंबर को जब प्रधानमंत्री ने श्रीकाशी विश्वनाथ धाम का लोकार्पण किया और 'अपनी काशी' में इसे बाबा और बाबा के भक्तों को समर्पित किया तब 'इतिहास से भी प्राचीन' काशी या वाराणसी का इतिहास भी स्वयं नया अध्याय लिख गया।

वर्ष 2014 के चुनाव के बाद गंगातट से मां गंगा द्वारा खुद को बुलाए जाने की घोषणा करते हुए सांसद नरेन्द्र मोदी ने जो संकल्प व्यक्त किए थे, श्रीकाशी विश्वनाथ धाम परियोजना उसी का मूर्त रूप है। कई स्तरों पर गहन विचार मंथन के बाद यह परियोजना अस्तित्व में आई और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं 2018 में इसका शिलान्यास किया। आड़ी-तिरछी भूलभुलैया वाली काशी की गलियों के बीच स्थित प्राचीन विश्वनाथ मंदिर तथा पूरे क्षेत्र को एक नया ऐतिहासिक रूप और विस्तार देने के संकल्प के साथ प्रारंभ इस परियोजना के अंतर्गत प्राचीनकाल में इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होलकर द्वारा निर्मित प्राचीन मंदिर के भक्तों के लिए आधुनिक सुविधायुक्त परिसर की भेंट इसकी विशेषता है।

पश्चिमी के देशों में 'गोल्डन टेंपल' नाम से विख्यात इस मंदिर के दो शिखरों को स्वर्णमंडित करने के लिए पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह ने 1,000 सेर सोना दान दिया था। ये दोनों स्वर्ण शिखर आज भी मंदिर की शोभा और पहचान हैं। श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर अपने अस्तित्व काल से ही मुगलों के निशाने पर रहा। परिणामस्वरूप वर्तमान विश्वनाथ मंदिर के परिसर में ही औरंगजेब की मस्जिद है। पास ही में रजिया बेगम की मस्जिद है। इसके

संपादकीय

बावजूद बाबा विश्वनाथ के प्रति आस्था और विश्वास की अटूट परंपरा सदियों से अक्षुण्ण रही है।

मान्यता है कि काशी में बाबा विश्वनाथ को नमन के लिए गंगा ने अपनी धारा ही बदल दी, किंतु विश्वनाथ मंदिर और गंगधार के बीच अनेक अवरोधकारी निर्माण थे, जिन्हें श्रीकाशी विश्वनाथ धाम परियोजना के अंतर्गत हटाकर गंगा की धारा और श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर के बीच सीधा और निर्बाध समागम-संबंध स्थापित कर दिया गया है। तब मंदिर से गंगा का सीधा दर्शन वस्तुतः अत्यंत जटिल और दुरूह कार्य था परंतु धाम परियोजना में यह संभव हो सका। लोकार्पण के लिए जब स्वयं प्रधानमंत्री ने गंगा घाट पर स्नान के उपरांत गंगाजल का पात्र लेकर विश्वनाथ मंदिर तक ढाई-तीन सौ मीटर की दूरी पैदल तय की तब एक नया अध्याय बुन गया। देश की विभिन्न पवित्र नदियों से साधु-संतों द्वारा लाए गए जल से बाबा का अभिषेककिया गया। देशभर के साधु-संन्यासियों, महंतों, महामंडलेश्वरों सहित विभिन्न पंथों-संप्रदायों के धर्मगुरुओं की उपस्थिति में धाम का लोकार्पण- 'बाबा और बाबा के भक्तों के लिए' हो गया।

श्री काशी विश्वनाथ धाम की आकर्षक संरचना और सुविधाएं अभूतपूर्व हैं। भारत के द्वादश (12) ज्योतिर्लिंगों में एक श्रीकाशी विश्वनाथ के मंदिर तक गंगा घाट से गर्भगृह के पास परिसर तक 50 फीट चौड़ा सीधा नया मार्ग, 18 पंच सितारा स्तर के कमरों का अतिथिगृह, 5,000 लोगों की क्षमता का विस्तृत गर्भगृह परिसर, भक्तों के लिए विश्रामगृह, दो दर्जन दुकानों वाले व्यावसायिक केंद्र, संग्रहालय, प्रेक्षागृह तथा अन्य सुविधाएं इस धाम की विशिष्टता प्रदर्शित करते हैं। मंदिर परिसर में प्रतिदिन तीन से पांच हजार दर्शनार्थियों, पर्यटकों के लिए तथा श्रावण मास के सोमवार और शिवरात्रि जैसे महत्वपूर्ण पर्वों पर तीन लाख लोगों के लिए समुचित प्रबंध किए गए हैं।

काशी विश्वनाथ का मंदिर अब गंगा से सीधे जुड़ गया है। श्रद्धालु जलासेन घाट, मणिकर्णिका और ललिता घाट पर गंगा स्नान कर सीधे बाबा धाम में प्रवेश कर सकेंगे।

विशालकाय बाबा धाम के 3 यात्री सुविधा केंद्रों में श्रद्धालुओं को अपना सामान सुरक्षित रखने, बैठने और आराम की सुविधा मिलेगी।

कला और संस्कृति की नगरी काशी में कलाकारों के लिए एक और सांस्कृतिक केंद्र की सौगात मिलेगी। दो मंजिला इमारत सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए है।

विश्वनाथ धाम आने वाले श्रद्धालुओं के लिए योग और ध्यान केंद्र के रूप में वैदिक केंद्र को स्थापित किया गया है।

धाम क्षेत्र में बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए स्पिरिचुअल बुक सेंटर धार्मिक पुस्तकों का नया केंद्र होगा।

श्रद्धालुओं के लिए बाबा की भोगशाला भी स्थापित की गई है। यहां एक साथ 150 श्रद्धालु बैठकर बाबा विश्वनाथ का प्रसाद ग्रहण कर सकेंगे।

सनातन धर्म में काशी में मोक्ष की मान्यता है। विश्वनाथ धाम में मुमुक्षु भवन बनाया गया है। इससे लगभग 100 कदम की दूरी पर महाश्मशान मणिकर्णिका है।

विश्वनाथ धाम में प्रवेश के लिए 4 विशालकाय द्वार बनाए गए हैं। पहले यहां सिर्फ संकरी गलियां थीं।

सुरक्षा के लिए हाइटेक कंट्रोल रूम बनाया गया है। पूरे धाम क्षेत्र में ब्ब्ज्ट कैमरे लगाए गए हैं।

धाम में आपातकालीन चिकित्सा सुविधा से लेकर एंबुलेंस तक की व्यवस्था रहेगी।

वन डिस्ट्रिक्ट-वन प्रोडक्ट शाप, हस्तशिल्प के सामान की दुकानें और फूड कोर्ट भी बनाए गए हैं।

काशी को आनंद कानन भी कहा जाता था। इसे देखते हुए बाबा धाम में हरियाली की पर्याप्त व्यवस्था की गई है महादेव के प्रिय रुद्राक्ष, बेल, पारिजात के पौधों के साथ ही अशोक के पेड़ और तरह-तरह के फूल धाम परिसर में लगाए जा रहे हैं।

धाम में दिव्यांगों और बुजुर्गों के आवागमन के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। रैंप और एस्कलेटर की अत्याधुनिक सुविधा धाम में उपलब्ध है।

पुराणों में वर्णित है कि काशी नगर की स्थापना भगवान शिव ने लगभग 10 हजार साल पूर्व की थी। इसे कासिनगर और कासिपुर के नाम से भी जाना जाता था। सम्राट अशोक के समय में इसकी राजधानी का नाम पोतलि था। जातक कथाओं के अनुसार ही इसका एक नाम रामनगर भी है। एक ऐसा शहर जहां सब कुछ सुंदर और आनंददायक है। पतंजलि के महाभाष्य अष्टाध्यायी के सूत्र पतंजलि में लिखा है वणिजो वाराणसी जित्वरीत्युपाचरन्ति... अर्थात ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में व्यापारी लोग वाराणसी को जित्वरी नाम से पुकारते थे। जित्वरी का अर्थ है जयनशीला अर्थात जहां पहुंचकर पूरी जय अर्थात व्यापार में पूरा लाभ हो।

प्राचीन उपनिषद जाबालोपनिषद में काशी को अविमुक्त नगर कहा गया है। काशी शब्द सबसे पहले अथर्ववेद की पैप्पलाद शाखा से आया है और इसके बाद शतपथ में भी उल्लेख है। स्कंद पुराण के काशी खंड में नगर की महिमा 15 हजार श्लोकों में कही गई है। मत्स्य पुराण में भगवान शिव वाराणसी का वर्णन करते हुए कहते हैं वाराणस्यां नदी पु सिद्धगन्धर्वसेविता। प्रविष्टा त्रिपथा गंगा तस्मिन क्षेत्रे मम प्रिये।। हे प्रिये, सिद्ध गंधर्वों से सेवित वाराणसी में जहां पुण्य नदी त्रिपथगा गंगा बहती है वह क्षेत्र मुझे प्रिय है।

akatri.t@gmail.com

काशी वो है, जहाँ सत्य ही संस्कार है : नरेन्द्र मोदी

अभी मैं बाबा के साथ साथ नगर कोतवाल कालभैरव जी के दर्शन करके भी आ रहा हूँ, देशवासियों के लिए उनका आशीर्वाद लेकर आ रहा हूँ। काशी में कुछ भी खास हो, कुछ भी नया हो, उनसे पूछना आवश्यक है। मैं काशी के कोतवाल के चरणों में भी प्रणाम करता हूँ। हमारे पुराणों में कहा गया है कि जैसे ही कोई काशी में प्रवेश करता है, सारे बंधनों से मुक्त हो जाता है। भगवान विश्वेश्वर का आशीर्वाद, एक अलौकिक ऊर्जा यहाँ आते ही हमारी अंतर–आत्मा को जागृत कर देती है। आज की तिथि इतिहास रच रही है काशी आकर सभी बंधनों से मुक्ति मिलती है, जो मंदिर लुप्त हो गए थे उनकी पुनर्स्थापना की है, यह हमारी सनातन संस्कृति का प्रतीक है। विश्वनाथ धाम का ये पूरा नया परिसर एक भव्य भवन भर नहीं है,

ये प्रतीक है, हमारे भारत की सनातन संस्कृति का!
ये प्रतीक है, हमारी आध्यात्मिक आत्मा का!
ये प्रतीक है, भारत की प्राचीनता का, परम्पराओं का!
भारत की ऊर्जा का, गतिशीलता का!

पहले यहाँ जो मंदिर क्षेत्र केवल तीन हजार वर्ग फीट में था, वो अब करीब 5 लाख वर्ग फीट का हो गया है।

अब मंदिर और मंदिर परिसर में 50 से 75 हजार श्रद्धालु आ सकते हैं। यानि पहले माँ गंगा का दर्शन–स्नान, और वहाँ से सीधे विश्वनाथ धाम

काशी तो काशी है! काशी तो अविनाशी है।

काशी में एक ही सरकार है, जिनके हाथों में डमरू है, उनकी सरकार है।

जहां गंगा अपनी धारा बदलकर बहती हों, उस काशी को भला कौन रोक सकता है। मैं आज अपने हर उस श्रमिक भाई–बहन का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिसका पसीना इस भव्य परिसर के निर्माण में बहा है।

कोरोना के विपरीत काल में भी, उन्होंने यहां पर काम रुकने नहीं दिया।

मुझे अभी अपने इन श्रमिक साथियों से मिलने का, उनका आशीर्वाद लेने का सौभाग्य मिला है

काशी शब्दों का विषय नहीं है, संवेदनाओं की सृष्टि है।

काशी वो है– जहां जागृति ही जीवन है!
काशी वो है– जहां मृत्यु भी मंगल है!
काशी वो है– जहां सत्य ही संस्कार है!
काशी वो है– जहां प्रेम ही परंपरा है!

भारतवासी की भुजाओं में वो बल है, जो अकल्पनीय को साकार कर देता है।

हम तप जानते हैं, तपस्या जानते हैं, देश के लिए दिन रात खपना जानते हैं।

चुनौती कितनी ही बड़ी क्यों ना हो, हम भारतीय मिलकर उसे परास्त कर सकते हैं

आज का भारत अपनी खोई हुई विरासत को फिर से संजो रहा है।

यहां काशी में तो माता अन्नपूर्णा खुद विराजती हैं।

मुझे खुशी है कि काशी से चुराई गई मां अन्नपूर्णा की प्रतिमा, एक शताब्दी के इंतजार के बाद अब फिर से काशी में स्थापित की जा चुकी है।

मेरे लिए जनता जनार्दन ईश्वर का ही रूप है, हर भारतवासी ईश्वर का ही अंश है, इसलिए मैं कुछ मांगना चाहता हूं।

मैं आपसे अपने लिए नहीं, हमारे देश के लिए तीन संकल्प चाहता हूं– स्वच्छता, सृजन और आत्मनिर्भर भारत के लिए निरंतर प्रयास

गुलामी के लंबे कालखंड ने हम भारतीयों का आत्मविश्वास ऐसा तोड़ा कि हम अपने ही सृजन पर विश्वास खो बैठे।

आज हजारों वर्ष पुरानी इस काशी से, मैं हर देशवासी का आह्वान करता हूं– पूरे आत्मविश्वास से सृजन करिए, इन्नोवेट करिए, इन्नोवेटिव तरीके से करिए

तीसरा एक संकल्प जो आज हमें लेना है, वो है आत्मनिर्भर भारत के लिए अपने प्रयास बढ़ाने का।

ये आजादी का अमृतकाल है। हम आजादी के 75वें साल में हैं।

जब भारत सौ साल की आजादी का समारोह बनाएगा, तब का भारत कैसा होगा, इसके लिए हमें अभी से काम करना होगा।

सद्गुरू के संकल्पों की सिद्धि हो : मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वाराणसी दौरे के दूसर दिन स्वर्वेद महामंदिर धाम में विहंगम योग के 98वें वार्षिकोत्सव को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने महात्मा गांधी, महाभारत, पानी बचाने, काशी के विकास और आत्मनिर्भर से लेकर कई बातों पर बात की।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संबोधन में कहा कि कल काशी ने भव्य विश्वनाथ धाम महादेव के चरणों में अर्पित किया, और आज विहंगम योग संस्थान का ये अद्भुत आयोजन हो रहा है। इस दैवीय भूमि पर ईश्वर अपनी अनेक इच्छाओं की पूर्ति के लिए संतों को ही निमित्त बनाता है।

आज गीता जयंती का पुण्य अवसर है। आज के ही दिन कुरुक्षेत्र की युद्ध की भूमि में जब सेनाएं आमने सामने थीं। तो मानवता को योग, आध्यात्म और परमार्थ का परम ज्ञान मिला था।

सद्गुरु सदाफलदेव ने समाज के जागरण के लिए विहंगम योग को जन–जन तक पहुंचाने के लिए यज्ञ किया था। आज वो संकल्प बीज हमारे सामने इतने विशाल वट वृक्ष के रूप में खड़ा है।

हमारा देश इतना अद्भुत है कि यहां जब भी समय विपरीत होता है, तो कोई न कोई संत–विभूति, समय की धारा को मोड़ने के लिए अवतरित हो जाते हैं। ये भारत ही है, जिसकी आजादी के सबसे बड़े नायक को दुनिया महात्मा बुलाती है।

आज देश आजादी की लड़ाई में अपने गुरुओं, संत और तपस्वियों के योगदान को स्मरण कर रहा है। नई पीढ़ी को उनके योगदान से परिचित करा रहा है। मुझे खुशी है कि विहंगम योग संस्थान भी इसमें सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

बनारस जैसे शहरों ने मुश्किल से मुश्किल समय में भी भारत की पहचान, कला, उद्यमिता के बीजों को सहेजकर रखा है। आज जब हम बनारस के विकास की बात करते हैं, तो इससे पूरे भारत के विकास का रोडमैप भी बनता है। रिंग रोड का काम भी काशी ने रिकॉर्ड समय पर पूरा किया है। बनारस आने वाली कई सड़कें भी अब चौड़ी हो गई हैं। जो लोग सड़क के रास्ते बनारस आते हैं, वो सुविधा से कितना फर्क पड़ा है, इसे अच्छे से समझते हैं।

गोदौलिया में जो सुंदरीकरण का काम हुआ है, वह देखने योग्य है। मंडुवाडीह में बनारस रेलवे स्टेशन भी देखा। इस स्टेशन का भी अब कायाकल्प हो चुका है। पुरातन को समेटे हुए नवीनता को धारण करना, बनारस देश को नई दिशा दे रहा है। बनारस के विकास का सकारात्मक असर यहां आने वाले पर्यटकों पर भी पड़ रहा है। 2014–15 के मुकाबले में 2019–20 में यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या दोगुनी हो गई है। 2019–20 कोरोना कालखंड में अकेले बाबतपुर एयरपोर्ट से ही 30 लाख से ज्यादा लोगों का आना–जाना हुआ है।

स्वाधीनता संग्राम के समय सद्गुरु ने हमें स्वदेशी का मंत्र दिया था। आज उसी भाव में देश ने अब 'आत्मनिर्भर भारत मिशन' शुरू किया है। आज देश के स्थानीय व्यापार–रोजगार, उत्पादों को ताकत दी जा रही है, लोकल को ग्लोबल बनाया जा रहा है।

हमारा गौ–धन हमारे किसानों के लिए केवल दूध का ही स्रोत न रहे, बल्कि हमारी कोशिश है कि गौवंश प्रगति के अन्य आयामों में भी मदद करे। आज देश गोबरधन योजना के जरिए बायो–फ्यूल और ऑर्गेनिक फार्मिंग को बढ़ावा दे रहा है।

मोदी ने कहा कि आज आप सभी से कुछ संकल्प लेने का आग्रह करना चाहता हूं। ये संकल्प ऐसे होने चाहिए, जिसमें सद्गुरु के संकल्पों की सिद्धि हो और जिसमें देश के मनोरथ भी शामिल हों। ये ऐसे संकल्प हो सकते हैं, जिन्हें अगले दो साल में गति दी जाए, मिलकर पूरा किया जाए।

एक संकल्प ये हो सकता है कि हमें बेटी को पढ़ाना है, उसका स्किल डेवलपमेंट भी करना है। अपने परिवार के साथ–साथ जो लोग समाज में जिम्मेदारी उठा सकते हैं, वो एक दो गरीब बेटियों के स्किल डेवलपमेंट की भी जिम्मेदारी उठाएं। एक और संकल्प हो सकता है पानी बचाने को लेकर। हमें अपनी नदियों, मां गंगा को, सभी जल स्रोतों को स्वच्छ रखना है।

बनारस के रोडमैप से देश के विकास का रोडमैप बनता है : प्रधानमंत्री

काशी प्रवास के दो द्विवसीय दौरे पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 14 दिसंबर को भाजपा शासित राज्यों के 12 राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक की। जिसमें सरकार की नीतियों, योजनाओं के प्रचार–प्रसार, आगामी विधानसभा चुनाव, जनता से जुड़ाव जैसे तमाम बिंदुओं पर गहन मंथन हुआ है। यहां से तय कार्यक्रम के मुताबिक पीएम स्वर्वेद महामंदिर धाम भी पहुंचे और विहंगम योग के 98वें वार्षिकोत्सव को संबोधित किया। प्रधानमंत्री जी के संबोधन के पूर्व सभी मुख्यमंत्रियों ने अपने राज्यों में कराए गए विकास कार्यों का प्रस्तुतीकरण दिया।

मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक

100वीं वर्षगांठ के लिए लें संकल्प

प्रधानमंत्री ने कहा कि दो साल बाद हम विहंगम योग की 100वीं वर्षगांठ मनाएंगे तो क्यों न हम दो साल बाद के इस अवसर के लिए कुछ संकल्प लें। एक और संकल्प हो सकता है पानी बचाने को लेकर। हमें अपनी नदियों को, गंगा जी को, सभी जलस्रोतों को स्वच्छ रखना है। जैसे एक संकल्प हो सकता है– हमें बेटी को पढ़ाना है, उसका स्किल डेवलपमेंट भी करना है। अपने परिवार के साथ–साथ जो लोग समाज में जिम्मेदारी उठा सकते हैं, वो एक–दो गरीब बेटियों के स्किल डेवलपमेंट की भी जिम्मेदारी उठाएं।

पीएम ने कहा आज देश का मंत्र है– सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास। आज देश मैं के भाव से उठकर राष्ट्र के भाव को आत्मसात कर रहा है। आज जब हम पूरी दुनिया को योग दिवस मनाते हुए, योग का अनुसरण करते हुए देखते हैं तो लगता है कि सद्गुरु का आशीर्वाद फलिभूत हो रहा है। स्वाधीनता संग्राम के समय सद्गुरु ने हमें मंत्र दिया था– स्वदेशी का। आज उसी भाव में देश ने अब 'आत्मनिर्भर भारत मिशन' शुरू किया है। आज देश के स्थानीय व्यापार–रोजगार को, उत्पादों को ताकत दी जा रही है, लोकल को ग्लोबल बनाया जा रहा है।

मुख्यमंत्रियों को दिये निर्देश

सबका साथ–सबका विकास के सपने को धरातल पर लाएं

संगठन में सभी के बीच संवाद जारी रहे

नीतियों और योजनाओं के प्रचार–प्रसार में कमी नहीं रहे

हर हाल में योजनाओं का लाभ लोगों तक पहुंचे

सियासी रण में विजय पताका फहराने पर मंथन

आज देश आजादी की लड़ाई में अपने गुरुओं और

तपस्वियों के बलिदान को नमन कर रहा है। जब हम बनारस के विकास की बात करते हैं तो इससे पूरे देश के विकास का रोड–मैप भी बन जाता है। काशी में विकास का लाभ पर्यटन के साथ–साथ कला क्षेत्र को भी मिलेगा। काशी के कौशल को नई ताकत मिल रही है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी नई सुविधाओं के साथ काशी मेडिकल हब के रूप में विकसित हो रहा है। कल रात 12–12.30 बजे बाद जैसे ही मुझे अवसर मिला, मैं अपनी काशी में जो काम चल रहा है, जो काम हुए हैं उन्हें दिखने निकल पड़ा था। काशी में कितने ही लोगों से मेरी बात हुई। स्टेशन का भी कायाकल्प हो चुका है। बनारस देश को नई दिशा दे रहा है। 2014–15 के मुकाबले 2019–20 में यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या दोगुनी तक हो गई है और हवाई पर्यटकों की संख्या 30 लाख तक पहुंच गई है। अगर इच्छाशक्ति हो तो परिवर्तन आ सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि वाराणसी में हर तरह का बदलाव हुआ है। उन्होंने कहा कि इस बदलाव से काशी ने दिखा दिया है कि इच्छा शक्ति हो तो कुछ भी संभव है। उन्होंने केदारनाथ का भी जिक्र कर कहा कि अब वहां रिकार्ड श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। यही विश्वास पूरे देश में दिख रहा है। सद्‌गुरु सफलदेव ने कहा है, दया करे सब देव पर ऊंच नीच नहीं जान।

ये भारत ही जहां के आजादी के सबसे बड़े आंदोलन के नेता को महात्मा बुलाती है, जहां आजादी की लड़ाई के साथ धार्मिक चेतना भी साथ चलती रही। संत सदाफलदेव जी ने भी आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जेल में ही उन्होंने स्वर्वेद पर चिंतन किया और बाहर आकर उसे मूर्त रूप दिया। हमारे स्वाधीनता संग्राम का इतिहास वैसे नहीं दर्ज किया गया जैसा किया जाना चाहिए था। हमारा देश इतना अद्‌भुत है कि यहां जब भी समय विपरीत होता है, कोई ना कोई संत विभूति समय की धारा को मोड़ने के लिए अवतरित हो जाती है।

स्वर्वेद मंदिर का दर्शन

श्री मोदी स्वर्वेद मंदिर के 98वें वर्षगांठ पर लोगों को संबोधित करने के लिये गये। पीएम ने कहा काशी ने बाबा विश्वनाथ के मंदिर का स्वागत किया और अब यहां विहंगम योग संस्थान का यह आयोजन है। आज हम देख रहे हैं कि योग संस्थान का 98वां वर्षगांठ, सद्‌गुरु सफलदेव महाराज के जेल यात्रा के 100 वर्ष और गीता जयंती भी है। इन सबकी मैं आप लोगों को बधाई देता हूं। सद्‌गुरु सदाफलदेव जी ने समाज के जागरण के लिए विहंगम योग को जन–जन तक पहुंचाने के लिए यज्ञ किया था। आज वह संकल्प बीज हमारे बीच एक वटवृक्ष के रूप में हमारे सामने खड़ा है। इस दौरान प्रधानमंत्री ने पूरे महामंदिर धाम को देखा और वहां के पुजारियों से मंदिर की खासियतों की जानकारी ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वर्वेद मंदिर का दौरा किया और सदाफलदेव की प्रतिमा पर पुष्प भी अर्पित किए। इस दौरान उनके साथ यूपी की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और सीएम योगी आदित्यनाथ भी मौजूद रहे।

शिवः काशी

डॉ0 रेखा पाण्डेय

शिवः काशी, शिवः काशी, काशी काशी, शिवः शिवः
यदि आप पूरे विश्व के शहरों की यात्रा करना चाहते हैं और अनुभव करना चाहते हैं, तो भारत को छोड़ दें, आपको भारत के उत्तरी क्षेत्र की ओर जाने की आवश्यकता है, जहाँ उत्तर प्रदेश राज्य में आपको जीवन के निर्माता शिव की भूमि मिले यह कहना है हिंदू पुराण। विभिन्न रूप से वाराणसी, बनारस और काशी के रूप में जाना जाता है। यह शहर दुनिया का सबसे पुराना रहने वाला शहर है। मार्क ट्वेन काशी के माहात्म्य को अपने इन शब्दों में कहते हैं "बनारस इतिहास से भी पुराना है, जो परंपरा से भी पुराना है, किंवदंती से भी पुराना है और सभी से दोगुना है। उन्हें एक साथ रखा"। वाराणसी काशी के प्राचीन शहर का एक आधुनिक नाम है, क्योंकि यह गंगा, वरुणा और असि नदी की सहायक नदियों के किनारे स्थित है। ये सहायक नदियाँ उत्तरी और दक्षिणी सीमाओं के साथ चलती हैं। बनारस को वाराणसी शब्द का एक मात्र भ्रष्टाचार माना जाता है। आइए हम करीब से देखें।

काशी का इतना माहात्म्य है कि सबसे बडे पुराण स्कन्द महापुराण में काशी खण्ड के नाम से एक विस्तृत पृथक विभाग ही है। इस पुरी के बारह प्रसिद्ध नाम– काशी, वाराणसी, अविमुक्त क्षेत्र, आनन्दकानन, महाश्मशान, रुद्रावास, काशिका, तपरूस्थली, मुक्ति भूमि, शिवपुरी, त्रिपुरारिराज नगरी और विश्वनाथ नगरी हैं।

स्कन्दपुराण काशी की महिमा का गुण–गान करते हुए कहता है–

भूमिष्ठापिन यात्र भूस्त्रिदिवतोऽप्युच्चौरधःस्थापिया।
या बद्धाभुविमुक्तिदास्युरमृतंयस्यांमृताजन्तवः।।
या नित्यंत्रिजगत्पवित्रतटिनीतीरेसुरैःसेव्यते।
सा काशी त्रिपुरारिराजनगरीपायादपायाज्जगत।।

जो भूतल पर होने पर भी पृथ्वी से संबद्ध नहीं है, जो जगत की सीमाओं से बंधी होने पर भी सभी का बन्धन काटनेवाली (मोक्षदायिनी) है, जो महात्रिलोकपावनी गंगा के तट पर सुशोभित तथा देवताओं से सुसेवितहै, त्रिपुरारि भगवान विश्वनाथ की राजधानी वह काशी संपूर्ण जगत् की रक्षा करे। सनातन धर्म के ग्रंथों के अध्ययन से काशी का लोकोत्तर स्वरूप विदित होता है। कहा जाता है कि, यह पुरी भगवान शंकर के त्रिशूल पर बसी है। अतः प्रलय होने पर भी इसका नाश नहीं होता है। वरुणा और असि नामक नदियों के बीच पांच कोस में बसी होने के कारण इसे वाराणसी भी कहते हैं। काशी नाम का अर्थ भी यही है–जहां ब्रह्म प्रकाशित हो। भगवान शिव काशी को कभी नहीं छोडते। जहां देह त्यागने मात्र से प्राणी मुक्त हो जाय, वह अविमुक्त क्षेत्र यही है। सनातन धर्मावलंबियों का दृढ विश्वास है कि काशी में देहावसान के समय भगवान शंकर

मरणोन्मुख प्राणी को तारकमन्त्र सुनाते हैं। इससे जीव को तत्वज्ञान हो जाता है और उसके सामने अपना ब्रह्म स्वरूप प्रकाशित हो जाता है। शास्त्रों का उद्घोष है–

यत्र कुत्रापिवाकाश्यांमरणेसमहेश्वरः।

जन्तोर्दक्षिणकर्णेतुमत्तारंसमुपादिशेत।।

काशी में कहीं पर भी मृत्यु के समय भगवान विश्वेश्वर (विश्वनाथ जी) प्राणियों के दाहिने कान में तारक मन्त्र का उपदेश देते हैं। तारक मन्त्र सुनकर जीव भव–बन्धन से मुक्त हो जाता है। यह मान्यता है कि केवल काशी ही सीधे मुक्ति देती है, जबकि अन्य तीर्थस्थान काशी की प्राप्ति कराके मोक्ष प्रदान करते हैं। इस संदर्भ में काशीखण्ड में लिखा भी है–

अन्यानिमुक्तिक्षेत्राणिकाशीप्राप्तिकराणिच।

काशींप्राप्य विमुच्येतनान्यथातीर्थकोटिभिः।।

ऐसा इसलिए है कि पांच कोस की संपूर्ण काशी ही विश्व के अधिपति भगवान विश्वनाथ का आधिभौतिक स्वरूप है। काशीखण्ड पूरी काशी को ही ज्योतिलिंग का स्वरूप मानता है–

अविमुक्तंमहत्क्षेत्रं पञ्चक्रोशपरीमितम।

ज्योतिलि्गम्तदेकंहि ज्ञेयंविश्वेश्वराभिधम।।

पांच कोस परिमाण के अविमुक्त (काशी) नामक क्षेत्र को विश्वेश्वर (विश्वनाथ) संज्ञक ज्योतिर्लिंग–स्वरूप मानना चाहिए।

अनेक प्रकाण्ड विद्वानों ने काशी मरणान्मुक्तिः के सिद्धांत का समर्थन करते हुए बहुत कुछ लिखा और कहा है। रामकृष्ण मिशन के स्वामी शारदानंद जी द्वारा लिखित श्री रामकृष्ण–लीला प्रसंग नामक पुस्तक में श्री रामकृष्ण परमहंस देव का इस विषय में प्रत्यक्ष अनुभव वद्दणत है। वह दृष्टांत बाबा विश्वनाथ द्वारा काशी में मृतक को तारकमन्त्र प्रदान करने की सत्यता उजागर करता है। लेकिन यहां यह भी बात ध्यान रहे कि काशी में पाप करने वाले को मरणोपरांत मुक्ति मिलने से पहले अति भयंकर भैरवी यातना भी भोगनी पडती है। सहस्रों वर्षों तक रुद्रपिशाच बनकर कुकर्मो का प्रायश्चित करने के उपरांत ही उसे मुक्ति मिलती है। किंतु काशी में प्राण त्यागने वाले का पुनर्जन्म नहीं होता।

फाल्गुन शुक्ल–एकादशी को काशी में रंगभरी एकादशी कहा जाता है। इस दिन बाबा विश्वनाथ का विशेष शृंगार होता है और काशी में होली का पर्वकाल प्रारंभ हो जाता है।

मुक्ति दायिनी काशी की यात्रा, यहां निवास और मरण तथा दाह–संस्कार का सौभाग्य पूर्वजन्मों के पुण्यों के प्रताप तथा बाबा विश्वनाथ की कृपा से ही प्राप्त होता है। तभी तो काशी की स्तुति में कहा गया है–

यत्र देहपतनेऽपिदेहिनांमुक्तिरेवभवतीतिनिश्चितम।

पूर्वपुण्यनिचयेनलभ्यतेविश्वनाथनगरीगरीयसी।।

विश्वनाथ जी की अति श्रेष्ठ नगरी काशी पूर्व जन्मों के पुण्यों के प्रताप से ही प्राप्त होती है। यहां शरीर छोडने पर प्राणियों को मुक्ति अवश्य मिलती है। काशी बाबा विश्वनाथ की नगरी है। काशी के अधिपति भगवान विश्वनाथ कहते हैं – इदं मम प्रियं क्षेत्रं **पञ्चक्रोशीपरीमितम्**। पांच कोस तक विस्तृत यह क्षेत्र (काशी) मुझे अत्यंत प्रिय है। पतितपावनी काशी में स्थित विश्वेश्वर (विश्वनाथ) ज्योतिर्लिंग सनातन काल से हिंदुओं के लिए परम आराध्य है, किंतु जनसाधारण इस तथ्य से प्रायः अनभिज्ञ ही है कि यह ज्योतिर्लिग पांच कोस तक विस्तार लिए हुए है–

पञ्चक्रोशात्मकं लिङ्गंज्योतिःपंसनातनम।

ज्ञानरूपा पञ्चक्रोशात् मक यह पुण्यक्षेत्र काशी के नाम से भी जाना जाता है–ज्ञानरूपा तुकाशीयं पञ्चक्रोशपरिमिता। पद्म पुराण में लिखा है कि सृष्टि के प्रारंभ में जिस ज्योतिर्लिंग का ब्रह्मा और विष्णु जी ने दर्शन किया, उसे ही वेद और संसार में काशी नाम से पुकारा गया–

यल्लिङ्गंदृष्टवन्तौहि नारायणपितामहौ।

तदेवलोकेवेदेचकाशीतिपरिगीयते।।

पांच कोस की काशी चौतन्य रूप है। इसलिए यह प्रलय के समय भी नष्ट नहीं होती। प्राचीन ब्रह्म वैवर्त्त पुराण में इस संदर्भ में स्पष्ट उल्लेख है कि अमर ऋषिगण प्रलय काल में श्री सनातन महाविष्णु से पूछते हैं—हे भगवन!वह छत्र के आकार की ज्योति जल के ऊपर कैसे प्रकाशित है, जो प्रलय के समय पृथ्वी के डूबने पर भी नहीं डूबती? महाविष्णुजी बोले—हे ऋषियों! लिंग रूप धारी सदाशिव महादेव का हमने (सृष्टि के आरम्भ में) तीनों लोकों के कल्याण के लिए जब स्मरण किया, तब वे शम्भु एक बित्ता परिमाण के लिंग—रूप में हमारे हृदय से बाहर आए और फिर वे बढते हुए अतिशय वृद्धि के साथ पांच कोस के हो गए—

लिङ्गरूपधररूशम्भुहर्दयाद्बहिरागतः।

महतींवृद्धिमासाद्य पञ्चक्रोशात्मकोऽभवत।।

यह काशी वही पंचक्रोशात्मकज्योतिर्लिगहै। काशीरहस्य के दूसरे अध्याय में यह कथानक मिलता है। स्कन्द पुराण के काशीखण्डमें स्वयं भगवान शिव यह घोषणा करते हैं—

अविमुक्तं महत्क्षेत्रं पञ्चक्रोशपरिमितम्।

ज्योतिर्लिङ्गम्तदेकंहि ज्ञेयंविश्वेश्वराऽभिधम।

पांच कोस परिमाण का अविमुक्त (काशी) नामक जो महाक्षेत्र है, उस सम्पूर्ण पंचक्रोशात्मकक्षेत्र को विश्वेश्वर नामक एक ज्योतिर्लिङ्गही मानें। इसी कारण काशी प्रलय होने पर भी नष्ट नहीं होती। काशीखण्डमें भगवान शंकर पांच कोस की पूरी काशी में बाबा विश्वनाथ का वास बताते हैं—

एकदेशस्थितमपियथा मार्तण्डमण्डलम।

दृश्यतेसवर्गसर्वैःकाश्यांविश्वेश्वरस्तथा।।

जैसे सूर्यदेव एक जगह स्थित होने पर भी सबको दिखाई देते हैं, वैसे ही संपूर्ण काशी में सर्वत्र बाबा विश्वनाथ का ही दर्शन होता है।

स्वयं विश्वेश्वर (विश्वनाथ) भी पांच कोस की अपनी पुरी (काशी) को अपना ही रूप कहते हैं— पञ्चक्रोश्या परिमितातनुरेषापुरी मम। काशी की सीमा के विषय में शास्त्रों का कथन है—असी—वरणयोर्मध्ये पञ्चक्रोशमहत्तरम। असी और वरुणा नदियों के मध्य स्थित पांच कोस के क्षेत्र (काशी) की बडी महिमा है। महादेव माता पार्वती से काशी का इस प्रकार गुणगान करते हैं—

सर्वक्षेत्रेषु भूपृष्ठे काशी क्षेत्रं च मेवपुरू।

भूलोक के समस्त क्षेत्रों में काशी साक्षात् मेरा शरीर है।

पञ्चक्रोशात् मकज्योतिर्लिंग—स्वरूपाकाशी सम्पूर्ण विश्व के स्वामी श्री विश्वनाथ का निवास—स्थान होने से भव—बंधन से मुक्तिदायिनीहै। धर्मग्रन्थों में कहा भी गया है—काशी मरणान्मुक्तिरू।काशी की परिक्रमा करने से सम्पूर्ण पृथ्वी की प्रदक्षिणा का पुण्यफलप्राप्त होता है। भक्त सब पापों से मुक्त होकर पवित्र हो जाता है। तीन पंचक्रोशी—परिक्रमाकरने वाले के जन्म—जन्मान्तर के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। काशीवासियोंको कम से कम वर्ष में एक बार पंचकोसी—परिक्रमा अवश्य करनी चाहिए क्योंकि अन्य स्थानों पर किए गए पाप तो काशी की तीर्थयात्रा से उत्पन्न पुण्याग्निमें भस्म हो जाते हैं, परन्तु काशी में हुए पाप का नाश केवल पंचकोसी—प्रदक्षिणा से ही संभव है। काशी में सदाचार—संयम के साथ धर्म का पालन करना चाहिए। यह पर्यटन की नहीं वरन् तीर्थाटन की पावन स्थली है। वस्तुतः काशी और विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंगमें तत्त्वतः कोई भेद नहीं है। निःसंदेह सम्पूर्ण काशी ही बाबा विश्वनाथ का स्वरूप है।

काशी—महात्म्य में ऋषियों का उद्घोष है—

काशी सर्वाऽपिविश्वेशरूपिणीनात्रसंशयः।

अतएव काशी को विश्वनाथजीका रूप मानने में कोई संशय न करें और भक्ति—भाव से नित्य जप करें—

शिवः काशी शिवः काशी, काशी काशी शिवः शिवः।

संकल्प से सिद्धि

श्री सुनील बंसल

इतिहास और परंपराओं से प्राचीन नगर काशी ने इतिहास में एक बार फिर से अपना नाम लिखा। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रयत्नों से अपनी पूर्ण दिव्यता के साथ गौरवान्वित हो रहा है। वाराणसी एक सीमित क्षेत्र है जो सिर्फ काशी में दो नदियों वरुणा और अस्सी नदी के बीच का क्षेत्र है, जबकि काशी एक विस्तृत क्षेत्र है जो इतिहास में 12 योजन में फैला था। बनारस का नया नाम वाराणसी, इस पवित्र शहर से होकर गुजरने वाली दो नदियों वरुणा और असि के नाम पर रखा गया। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान शिव के ही एक रूप 'बना' के नाम पर बनारस पडा है।

वरुणा नदी और असि नदी दोनों ही वाराणसी से गुजरती हैं। वैसे तो वाराणसी से कई छोटी–बड़ी नदियां गुजरती हैं लेकिन इन दो नदियों का शहर के साथ कुछ अलग ही लगाव है। ये दोनों नदियां शहर में बहने वाली छोटी नदियों में शुमार हैं। वाराणसी में वरुणा नदी उत्तर में गंगा नदी के साथ मिलती है तो असि नदी दक्षिण में गंगा से मिलती है। वरुणा और असि नदियों के अलावा पवित्र गंगा नदी भी वाराणसी से होकर गुजरती है। वाराणसी को मंदिरों का शहर, भारत की धार्मिक राजधानी, भगवान शिव की नगरी, दीपों का शहर, ज्ञान नगरी जैसे नामों से भी जाना जाता है। वाराणसी शहर का अस्तित्व और इसका इतिहास बहुत पुराना है।

वाराणसी का मूल नगर काशी था। पौराणिक कथाओं के अनुसार, काशी पवित्र सप्तपुरियों में से एक है। स्कंद पुराण, रामायण एवं महाभारत सहित प्राचीनतम ऋग्वेद सहित कई ग्रन्थों में नगर का उल्लेख आता है। सामान्यतः वाराणसी शहर को सनातनकालीन प्राचीन माना जाता है। यह नगर मलमल और रेशमी कपड़ों,

इत्रों, हाथी दाँत और शिल्प कला के लिये व्यापारिक एवं औद्योगिक केन्द्र रहा है। गौतम बुद्ध (जन्म 567 ई.पू.) के काल में, वाराणसी काशी की राजधानी था। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने नगर को धार्मिक, शैक्षणिक एवं कलात्मक गतिविधियों का केन्द्र बताया है और इसका विस्तार गंगा नदी के किनारे 5 कि॰मी॰ तक लिखा है।

काशी विश्वनाथ कारीडोर

सबसे पहले 1034 में मंदिर के टूटने का उल्लेख मिलता है। बाद में मोहम्मद गोरी और औरंगजेब आदि ने भी काशी विश्वनाथ मंदिर को तोड़ा। मंदिर बार–बार टूटता और जुड़ता रहा पर अपनी भव्यता और चमक तो उसे अब जाकर मिली है। यह अहिल्याबाई होल्कर और करोड़ों भारतीयों के सपनों के साकार होने जैसा है।

काशी विश्वनाथ कारीडोर अपने आततायी अतीत को सुधारने का संकल्प है। यानि सदियों की आध्यात्मिक विरासत का कायाकल्प। इस कारीडोर के बहाने इतिहास ने नई करवट ली है। इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि एक हज़ार साल के अन्याय का प्रतिकार बिना किसी ध्वंस के हुआ है। सिर्फ़ सृजन के ज़रिए. इसका स्वागत होना चाहिए। कारीडोर बाबा विश्वनाथ मंदिर के मुक्ति का उत्सव है। काशी मुक्ति का शहर है। मुक्ति की कामना में लोग यहां खींचे चले आते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इसी मुक्ति कामी चेतना ने काशी विश्वनाथ मंदिर के एक हज़ार साल पुराने गौरव को लौटाया है।

एक हज़ार साल से काशी विश्वनाथ मंदिर ध्वंस का जो दंश भोग रहा था, काशी विश्वनाथ कारीडोर ने उससे मुक्ति दिलाया है। ग्यारहवीं शताब्दी तक इस मंदिर की शक्ल ऐसी ही थी, जैसी आज बनायी गयी है। काशी विश्वनाथ सिर्फ़ एक मंदिर नहीं बल्कि मंदिरों का संकुल था. मंदिर परिसर के चारों तरफ़ कॉरिडोर की शक्ल में कक्ष थे, जहां संस्कृत, तंत्र और आध्यात्म की शिक्षा दी जाती थी. विद्यार्थी यहीं टिक कर धर्म और दर्शन की शिक्षा लेते थे। सत्रहवीं शताब्दी में औरंगजेब ने इस मंदिर संकुल को तोड़ने का आदेश इसलिए दिया कि उसका बाग़ी भाई दारा शिकोह यहां संस्कृत पढ़ता था। दारा शिकोह ने औरंगजेब और इस्लाम से बग़ावत की थी. इसलिए औरंगजेब ने 18 अप्रैल 1669 को मंदिर तोडने का फ़रमान जारी किया। फ़ारसी में लिखे इस फ़रमान में दर्ज था कि वहां मूर्ख पंडित, रद्दी किताबों से दुष्ट विद्या पढ़ाते हैं।

बार–बार जुड़ता रहा है मंदिर

औरंगजेब ने मंदिर तुड़वा कर एक मस्जिद भी तामीर करा दी। जिसे बाद में ज्ञानवापी मस्जिद कहा गया। ज्ञानवापी यानी ज्ञान का कुंआ। उसके बाद कई चरणों में काशीवासियों, होल्कर और सिन्धिया सरदारों की मदद से मंदिर बनता बिगड़ता रहा। लेकिन उसकी वह भव्यता नहीं लौटी। औरंगजेब के जाने बाद मंदिर के पुनर्निर्माण का संघर्ष जारी रहा। 1752 से लेकर 1780 तक मराठा सरदार दत्ता जी सिन्धिया और मल्हारराव होल्कर ने मंदिर की मुक्ति के प्रयास किए। पर 1777 और 80 के बीच इंदौर की महारानी अहिल्या बाई होल्कर को सफलता मिली। अहिल्याबाई ने मंदिर तो बनवा दिया पर वह उसका पुराना वैभव और गौरव नहीं लौटा पाईं। 1836 में महाराजा रणजीत सिंह ने इसके शिखर को स्वर्ण मंडित कराया पर भगवान शंकर मंदिरों के 'थर्मस फ़्लास्क' में सांस लेते रहे। संकुल के दूसरे मंदिरों पर पुजारियों का क़ब्ज़ा हो गया और धीरे–धीरे मंदिर परिसर ऐसी बस्ती में बदल गया जिसके घरों में प्राचीन मंदिर क़ैद हो गए। कारीडोर को बनवाकर प्रधानमंत्री ने अहिल्या बाई के सपनों को विस्तार दिया। परिसर के प्राचीन मंदिर जो चुरा कर घरों में क़ैद कर लिए गए थे उन्हें मुक्त कराया।

इतिहास का तीसरा प्रस्थान बिंदु

इतिहास के अपने प्रस्थान बिन्दु होते हैं। काशी विश्वनाथ मंदिर के निर्माण का यह तीसरा प्रस्थान बिन्दु है। जब भी इतिहास में इसका ज़िक्र आएगा, मंदिर का पुनरुद्धार करने वाली अहिल्या बाई होल्कर, इसके शिखर को स्वर्ण मंडित करने वाले महाराजा रणजीत सिंह और मंदिर को उसकी ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आभा लौटाने वाले नरेन्द्र मोदी का नाम सामने होगा।

आज जिस काशी विश्वनाथ मंदिर संकुल या कारीडोर का निर्माण हुआ है वह एक हज़ार साल से विध्वंस की विभीषिका झेल रहा था। शास्त्र बताते हैं कि मनुष्य की उत्पत्ति से पहले काशी की उत्पत्ति हुई थी. शिव आदिदेवता हैं और यह शिव की नगरी है। कह सकते हैं कि हिन्दू धर्म की जड़ें अयोध्या, मथुरा से ज़्यादा काशी विश्वनाथ में गहरी हैं। राम का व्यक्तित्व मर्यादित है। कृष्ण का उन्मुक्त और शिव असीमित व्यक्तित्व के स्वामी हैं। वे आदि हैं और अंत भी. बाकी सब देव हैं। वे महादेवहैं। इसलिए काशी विश्वनाथ से जनमानस का जुड़ाव ज़्यादा है।

सबसे पहले इस मंदिर के टूटने का उल्लेख 1034 में मिलता है। 11वीं सदी में राजा हरिश्चंद्र ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया। 1194 में मोहम्मद गोरी ने इसे लूटने के बाद तोड़ा। स्थानीय लोगों ने इसे फिर बनवाया। 1447 में जौनपुर के सुल्तान ने इसे फिर से तोड़ा। सर्वसमावेशी नीति के चलते टोडरमल ने 1585 में फिर इसका जीर्णोद्धार करवाया। टूटने बनने का सिलसिला जारी रहा। इस बार काशी विश्वनाथ के खलनायक शाहजहां थे।1632 में शाहजहां ने इसे तोड़ने का आदेश दे, सेना भेज दी। संघर्ष हुआ। काशी के लोगों की एक जुटता के आगे मुग़ल सेना को वापस लौटना पड़ा। हालांकि इस संघर्ष में काशी के 63 मंदिर शहीद हुए। काशी विश्वनाथ मंदिर से औरंगजेब के ग़ुस्से की एक वजह यह थी यह परिसर संस्कृत शिक्षा बड़ा केन्द्र था और दाराशिकोह यहां संस्कृत पढ़ता था। साक़ी मुस्तइद खां की किताब 'मासिर –ए–आलमगीरी' के मुताबिक़ 16 जिलकदा हिजरी– 1079 यानी 18 अप्रैल 1669 को एक फ़रमान जारी कर औरंगजेब ने मंदिर तोड़ने का आदेश दिया। इस बार एक दीवार को छोड़ जो आज भी मौजूद है, समूचा मंदिर गिरा दिया गया। 15 रब– उल–आखि़र यानी 2 सितम्बर 1669 को बादशाह को खबर दी गयी कि मंदिर न सिर्फ़ गिरा दिया है, बल्कि उसकी जगह मस्जिद की तामीर करा दी गयी है। पर साथ ही परिसर के हिस्से में पंडितों ने मंदिर का अस्तित्व बनाए रखा लेकिन मंदिर उपेक्षित रहा मस्जिदबड़ी और मंदिर छोटा था।

परम्परा और इतिहास में यह मंदिर कालजयी सांस्कृतिक परंपराओं और उच्चतम आध्यात्मिक मूल्यों का जीवंत प्रतीक रहा है। यही समृद्ध परम्परा यहां देश भर के संतों को खींच कर लाती रही। जैन आए बुद् आए, आदि शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, गोस्वामी तुलसीदास, महर्षि दयानंद सरस्वती, गुरुनानक सब यहां आए, सबकी आंखे यहीं खुलीं।

भगवान बुद्ध के जन्म से पहले, 6 वीं सेंटौरी बीसी में, भारतवर्धन को सोलह महाजनपदास में विभाजित किया गया था, काशी उनमें से एक था और इसकी राजधानी वाराणसी थी। इसके आसपास के क्षेत्र के साथ आधुनिक बनारस को काशी महाजनपद कहा जाता था। वाराणसी लंबे समय से सीखने का केंद्र है। इसका नाम पुराण, महाभारत और रामायण में आता है। काशी का नाम राजा काशी के नाम से जाना जाता था जो इस वंश का सातवां राजा था। सातवीं पीढ़ी के एक प्रसिद्ध राजा धनवंतरी के बाद, इस क्षेत्र पर शासन किया, जिसका नाम आयुर्वेद के संस्थापक के रूप में दवा के क्षेत्र में प्रसिद्ध है।

हालांकि, काशी साम्राज्य महाभारत युद्ध से पहले शताब्दी के दौरान मगध के ब्रह्मुद्गत्ता वंश का प्रभुत्व था, लेकिन महाभारत काल के बाद में ब्राह्मुद्त्ती वंश का उदय हुआ। इस पीढ़ी के लगभग 100 राजवंशों को इस क्षेत्र पर अपनी सर्वोच्चता माना जाता है, इनमें से कुछ शासकों चक्रवर्ती सम्राट बन जाते हैं। काशी के राजा मनोज ने अपने कब्जे में कौशल, अंगा और मगध के राज्य लाए और अपने साम्राज्य को अपने प्रदेशों से जोड़ा। जैन ग्रंथों में, काशी का राजा अश्वसव नामित 23 वीं तीर्थंकर पार्श्वनाथ का पिता था। 1775 में काशी साम्राज्य ब्रिटिश साम्राज्य के प्रभाव में आया था। इस पीढ़ी के आखिरी राजा बिभूती नारायण सिंह थे, जिन्होंने उदय होने तक लगभग आठ साल तक शासन किया था।

अविमुक्त क्षेत्र काशी – सनातन संस्कृति

श्री स्वतंत्रदेव सिंह

वाराणसी संसार के प्राचीनतम बसे शहरों में से एक और भारत का प्राचीनतम बसा शहर है। उत्तर प्रदेश राज्य का प्रसिद्ध नगर है। इसे 'बनारस' और 'काशी' भी कहते हैं। हिन्दू धर्म इसे अविमुक्त क्षेत्र कहा जाता है। इसके अलावा बौद्ध एवं जैन धर्म में भी इसे पवित्र माना जाता है। वाराणसी की संस्कृति का गंगा नदी, श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर एवं इसके धार्मिक महत्त्व से अटूट रिश्ता है। ये शहर सहस्रों वर्षों से भारत का, विशेषकर उत्तर भारत का सांस्कृतिक एवं धार्मिक केन्द्र रहा है। वाराणसी को प्रायः 'मंदिरों का शहर', 'भारत की धार्मिक राजधानी', 'भगवान शिव की नगरी', 'दीपों का शहर', 'ज्ञान नगरी' आदि विषेषणों से संबोधित किया जाता है। प्रसिद्ध अमरीकी लेखक मार्क ट्वेन लिखते हैं। बनारस इतिहास से भी पुरातन है, परंपराओं से पुराना है, किंवदंतियों (लीजेन्ड्स) से भी प्राचीन है और जब इन सबको एकत्र कर दें, तो उस संग्रह से भी दोगुना प्राचीन है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का बनारस घराना वाराणसी में ही जन्मा एवं विकसित हुआ है। भारत के कई दार्शनिक, कवि, लेखक, संगीतज्ञ वाराणसी में रहे हैं, जिनमें कबीर, वल्लभाचार्य, रविदास, स्वामी रामानंद, त्रैलंग स्वामी, शिवानन्द गोस्वामी, मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पंडित रवि शंकर, गिरिजा देवी, पंडित हरि प्रसाद चौरसिया एवं उस्ताद बिस्मिल्लाह खां आदि कुछ हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने हिन्दू धर्म का परम–पूज्य ग्रंथ रामचरितमानस यहीं लिखा था और गौतम बुद्ध ने अपना प्रथम प्रवचन यहीं निकट ही सारनाथ में दिया था।

वाराणसी में चार बड़े विश्वविद्यालय स्थित हैं। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, सेंट्रल इंस्टीट्यूट आफ हाइयर टिबेटियन स्टडीज़ और संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय। यहां के निवासी मुख्यतः काशिका भोजपुरी बोलते हैं, जो हिन्दी की ही एक बोली है।

संस्कृति और विरासत

भारत में हिन्दू धर्म एवं सभ्यता के केंद्र के रूप में काशी यानि वाराणसी का विशेष महत्व है. बनारस की कई विशेषताएँ हैं एवं इसके कई नाम हैं जो इसे भारत की सांस्कृतिक राजधानी बनाता है।

पुरातत्व, पौराणिक कथाओं, भूगोल, संस्कृति अध्यात्म, कला , वाराणसी का इतिहास , उत्तरवाहिनी गंगा पर अपनी अनूठी स्थिति, भारत के इतिहास के माध्यम से इसकी यात्रा, भगवान शंकर के त्रिशूल पर बसी यह नगरी आदि विशेषताएँ इसे सबसे पुराना जीवित शहर का महत्व प्रदान करता है।

धार्मिक वाराणसी– वाराणसी कई धर्म, स्थान एवं पूजन पद्धतियों के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थान और संस्थान के लिए जाना जाता है । आप पाएंगे कि इस शहर में अभी भी विभिन्न संप्रदायों के प्राचीन उपासना पद्धतियों का प्रचलन है। यह बुद्ध, जैन तीर्थंकर, शैव और वैष्णव संतों या कबीर और तुलसी जैसे पवित्र संतों की कर्मस्थली रही है ।

बनारस की कला, शिल्प और वास्तुकला यह दर्शनीय है कि वाराणसी एक वास्तुशिल्प का पूर्ण संग्रहालय है। यह इतिहास के दौरान बदलते पैटर्न और आंदोलनों को प्रस्तुत करता है इसमें पेंटिंग और मूर्तिकार शैलियों की एक समृद्ध और मूल प्रकार और लोक कला के समान समृद्ध खजाने हैं। वार्शान्तर में वाराणसी ने मास्टर कारीगरों का निर्माण किया है और वाराणसी ने अपने साड़ी, हस्तशिल्प, वस्त्र, खिलौने, गहने, धातु के काम, मिट्टी और लकड़ी के काम, पत्ती और फाइबर शिल्प के लिए नाम और प्रसिद्धि अर्जित की है। प्राचीन शिल्प के साथ, बनारस आधुनिक उद्योगों में भी पीछे नहीं रहे हैं।

गंगा– पवित्र नदी में भी सर्वाधिक पवित्र– इसकी पौराणिक कथाएं, भूगोल, सामाजिक–आर्थिक पहलुओं, इसकी विशाल घाट , विभिन्न कथाएं , किवदंतियाँ और प्रदूषण की वर्तमान स्थिति।

सर्व विद्या, सर्व ज्ञान की राजधानी– भारत में शिक्षा के प्राचीनतम केन्द्र, विश्व प्रसिद्ध विद्वानों और उनके शास्त्रार्थों, महान विद्वानों, विश्वविद्यालयों, कॉलेज, स्कूलों, मदरसों, पाठशालाओं और गुरु शिष्य परंपराएं, महाकाव्यों, प्रसिद्ध साहित्यिक कार्य, भाषाओं और बोलियों, पत्रकारिता परंपराएं – समाचार पत्र और पत्रिका, और प्रसिद्ध पुस्तकालय, यह सभी वाराणसी की विशिष्टियां हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक विवरण – पवित्र, प्रमुख और सामाजिक स्थानों की संस्था, सांस्कृतिक बहुलतावादी, भाषाई और जातीय समूहों। समृद्धि, बुद्धिजीवियों, मौखिक परंपराओं, जातियों और रीति–रिवाजों, व्यक्तित्वों, व्यवसायों, सांप्रदायिक सौहार्द को यहाँ एक सूत्र में समाहित किया जाता है । ग्रामीण वाराणसी की खोज करं और अंत में (और गहरी अंतर्दृष्टि के साथ) बनारसी पान , ठंडई , कचौड़ी , लस्सी, स्वादिष्ट मिठाईयां , विशिष्ट अलंग और मौज मस्ती की खुशी यहाँ प्राप्त होती है.

संगीत, कला, नाटक और मनोरंजन का शहरः बनारस अपनी संगीत परंपरा गायन एवं वादन दोनों के लिए और ख्यातिलब्ध संगीतकारों के लिए मशहूर रहा है. बनारस घराने की अपनी खुद की नृत्य एवं गीत परंपरा है। इसे लोक संगीत और नाटक (विशेष रामलीला) का एक बहुत समृद्ध भण्डार है . संगीत समारोहों , मेलों और त्योहारों तथा अखाड़ों एवं खेल की समृद्ध परंपरा से परिपूर्ण है ।

औद्योगिक शहर भारी, हल्के और कुटीर उद्योगों, स्थानीय हस्तशिल्प, पर्यटन और अन्य छोटे पैमाने पर औद्योगिक इकाइयों के तेजी से विकासशील शहर की दिशा में अग्रसर है। डीएलडब्ल्यू, भेल, इलेक्ट्रिक, साइकिल, पंप्स, पेपर, ग्लास, उर्वरक आदि।

वाराणसी एवं चिकित्सकीय परंपरा : प्लास्टिक सर्जरी, सुश्रुत, धन्वंतरी (देव चिकित्सा के देवता), दिवोदास के प्राचीन आयुर्वेदिक ज्ञानभंडार का केंद्र रहा है. वर्तमान में सभी प्राचीन और आधुनिक चिकित्सा प्रणालियों के संस्थान यहाँ उपलब्ध हैं ।

अगोचर बनारसः वाराणसी के आसपास के स्थानों , संस्थानों, स्वतंत्रता संग्राम और शहीदों की कहानी, काशीराज का इतिहास, सारनाथ का इतिहास, गाज़ीपुर के मिर्जापुर के भदोही (कालीन शहर) का इतिहास, प्रसिद्ध यात्रियों और ,निजाम 'के पर्यटक, और अंत में बनारस के पैनोरमा की अनुभूती, इसकी संस्कृति की निरंतरता, बनारस की पहचान इसे अद्भुत एवं अलौकिक महत्व प्रदान करती है।

भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का एक प्रसिद्ध नगर है. इसे 'बनारस' और 'काशी' भी कहते हैं. इसे हिन्दू धर्म में एक पवित्र नगर माना गया है और इसे अविमुक्त क्षेत्र कहा जाता है. इसके अलावा बौद्ध एवं जैन धर्म में भी यह एक महत्वपूर्ण शहर है. यह संसार के प्राचीन बसे शहरों में से एक है. काशी नरेश (काशी के महाराजा) वाराणसी शहर के मुख्य सांस्कृतिक संरक्षक एवं सभी धार्मिक क्रिया–कलापों के अभिन्न अंग हैं. वाराणसी की संस्कृति का गंगा नदी एवं इसके धार्मिक महत्त्व से अटूट रिश्ता है। ये शहर सहस्रों वर्षों से भारत का, विशेषकर उत्तर भारत का सांस्कृतिक एवं धार्मिक केन्द्र रहा है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का बनारस घराना वाराणसी में ही जन्मा एवं विकसित हुआ है. भारत के कई दार्शनिक, कवि, लेखक, संगीतज्ञ वाराणसी में रहे

हैं, जिनमें कबीर, वल्लभाचार्य, रविदास, स्वामी रामानंद, त्रैलंग स्वामी, शिवानन्द गोस्वामी, मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पंडित रवि शंकर, गिरिजा देवी, पंडित हरि प्रसाद चौरसिया एवं उस्ताद बिस्मिल्लाह खां आदि कुछ हैं. गोस्वामी तुलसीदास ने हिन्दू धर्म का परम–पूज्य ग्रंथ रामचरितमानस यहीं लिखा था और गौतम बुद्ध ने अपना प्रथम प्रवचन यहीं निकट ही सारनाथ में दिया था।

वाराणसी में चार बड़े विश्वविद्यालय स्थित हैं।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ हाइयर टिबेटियन स्टडीज़ और संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय. यहां के निवासी मुख्यतः काशिका भोजपुरी बोलते हैं, जो हिन्दी की ही एक बोली है. वाराणसी को प्रायः 'मंदिरों का शहर', 'भारत की धार्मिक राजधानी', 'भगवान शिव की नगरी', 'दीपों का शहर', 'ज्ञान नगरी' आदि विषेशणों से संबोधित किया जाता है।

प्रसिद्ध अमरीकी लेखक मार्क ट्वेन लिखते हैं

'बनारस इतिहास से भी पुरातन है, परंपराओं से पुराना है, किवदंतियों (लीजेन्ड्स) से भी प्राचीन है और जब इन सबको एकत्र कर दें, तो उस संग्रह से भी दोगुना प्राचीन है.'

इतिहास

पौराणिक कथाओं के अनुसार, काशी नगर की स्थापना हिन्दू भगवान शिव ने लगभग 5000 वर्ष पूर्व की थी, जिस कारण ये आज एक महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थल है. ये हिन्दुओं की पवित्र सप्तपुरियों में से एक है. स्कन्द पुराण, रामायण, महाभारत एवं प्राचीनतम वेद ऋग्वेद सहित कई हिन्दू ग्रन्थों में इस नगर का उल्लेख आता है. समान्यत वाराणसी शहर को लगभग 3000 वर्ष प्राचीन माना जाता है. परन्तु हिन्दू परम्पराओं के अनुसार काशी को इससे भी अत्यंत प्राचीन माना जाता है. नगर मलमल और रेशमी कपड़ों, इत्रों, हाथी दांत और शिल्प कला के लिये व्यापारिक एवं औद्योगिक केन्द्र रहा है. गौतम बुद्ध (जन्म 567 ईपू) के काल में, वाराणसी काशी राज्य की राजधानी हुआ करता था. बनारस के दशाश्वमेध घाट के समीप बने शीतला माता मंदिर का निर्माण अर्कवंशी क्षत्रियों ने करवाया था. प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने नगर को धार्मिक, शैक्षणिक एवं कलात्मक गतिविधियों का केन्द्र बताया है और इसका विस्तार गंगा नदी के किनारे 5 किमी तक लिखा है।

"धर्मो रक्षति रक्षितः"

जगद्गुरू आदि शंकराचार्य

हिन्दू धर्म को पुनर्स्थापित करने वाले आदि गुरु शंकराचार्य जी को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नमन किया।

आदि शंकराचार्य जी एक ऐसे व्यक्तित्व वाले महापुरुष थे, जिन्होंने मानव जाति को ईश्वर की वास्तविकता का अनुभव कराया। इतना ही नहीं कई बड़े महा ऋषि मुनि कहते हैं, कि जगतगुरु आदि शंकराचार्य स्वयं भगवान शिव के साक्षात अवतार थे। जगतगुरु आदि शंकराचार्य जी के जीवन एवं उनके कार्यों के बारे में वर्णन करना समुंद्र के सामने एक छोटी सी बूंद के सामान है।

जगतगुरु आदि शंकराचार्य ने मानव जाति को ईश्वर क्या है और ईश्वर की क्या महत्वता इस मृत्युलोक में है, इन सभी का अर्थ पूरे जगत को समझाया। आदि शंकराचार्य ने अपने पूरे संपूर्ण जीवन काल में ऐसे महत्वपूर्ण कार्य किए हैं, जिनका महत्व हमारे भारत की संस्कृति के लिए वरदान के भाती है।

आदि शंकराचार्य जी ने भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म को बहुत ही खूबसूरती से निखारा है और इसका पूरे विश्व भर में प्रचार–प्रसार किया है। आदि शंकराचार्य जी ने अपने ज्ञान के प्रकाश को अलग–अलग भाषाओं में प्रकाशमान किया और लोको सुबुद्धि और आस्था के प्रति सुदृढ़ रास्ता भी दिखाया। आदि शंकराचार्य जी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने चार मठों की स्थापना किया और इसके साथ ही कई शास्त्र और उपनिषद की भी रचना की थी।

'काशी' अर्थात 'ज्ञान प्रकाशिका'

श्री अरूण कान्त त्रिपाठी

शास्त्रों में **'काशी'** के लिए पुरी एवं तीर्थ शब्द का उल्लेख है। **'सप्तपुरियों'** में **'काशी'** भी है–

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारिका चैन सप्तैता मोक्षदायिका।।

काशी के अलावा उक्त छः मोक्ष देने वाली पुरियों में मरने वालों को पुनः काशी में जन्म लेना पड़ता है। लेकिन काशी में मरने पर पुनः जन्म नहीं बोला है। यह उल्लेख स्कन्दपुराण में है–

अन्यानि मुक्ति क्षेत्राणि काशी प्राप्तिकराणि हि।
काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः।।

काशी में मृत्यु के पश्चात मनुष्य ही नहीं, पशु–पक्षी, जीव–जन्तु सबकी मुक्ति हो जाती है। इसीकारण इसका नाम मुक्तिक्षेत्र भी है। देवाधिदेव, महादेव की यह राजधानी है। स्कन्दपुराण के अनुसार एक बार राजा दिवोदास को दिये ब्रह्माजी के वरदान के कारण भगवान शिव को काशी छोड़कर मंदराचल जाना पड़ा तथा सभी देव भी पृथ्वी छोड़कर मंदराचल चले गये। कालांतर में भगवान शिव की प्रेरणा से सूर्य, गणेश, ब्रह्माजी काशी आये परन्तु दिवोदास से काशी मुक्त नहीं हुई। अन्त में भगवान विष्णु की प्रेरणा से **'काशी'** दिवादास से मुक्त हुई। राजा दिवोदास ने **'दिवोदाश्वेसर'** लिंग की स्थापना के पश्चात् शिवधाम प्रस्थान किया तथा भगवान शिव पुनः अपनी प्रिय पुरी 'काशी' में विराजे।

भगवान शिव के आगमन के पश्चात् काशी में सभी देव, तीर्थ, नदी आदि ने भी प्रवेश किया।

स्कन्दपुराण के काशी खण्ड में वर्णन है कि महादेव–पार्वती के आगमन के पश्चात् नन्दी ने बताया कि– 'तीनो लोकों में जो मुक्ति देने वाले धर्म क्षेत्र, तीर्थ एवं देवता हैं, उन सबको यहा ले आया हूं–

यानि चान्यानि पुण्यनि स्थानानि मम भूतले।
तानि सर्वाण्यने कानि काशिपुर्या विशान्ति माम्।।

स्कन्दपुराण में यह भी उल्लेख है कि सातों पुरी तथा सभी तीर्थ अपनी शक्ति/ऊर्जा को बढाने के लिए अंश रूप में काशी में निवास करते हैं–

तथा सर्वाणितीर्थानि सप्तपुर्यश्च मानदे।
वसन्ति काशीमाश्रित्य स्वसामर्थ्यविवृद्धये।।

अर्थात् 'काशी' में सभी पुरियां तीर्थ 'महादेव' के सानिध्य में रहकर अपनी ऊर्जा का विकास करते हैं। फिर मुनष्य की बात ही क्या। यहां निवास करने वालों की ऊर्जा का विकास स्वतः ही होता रहता है। 'काशी' भगवान शिव को अतिप्रिय है। शिव–पार्वती प्रलय काल में भी इस काशी को नहीं छोड़तेहैं। काशी की श्रेष्ठता का वर्णन शिवपुत्र कार्तिकेयजी से करते हुए अगस्त्यमुनि ने कहा है कि – 'काशी क्षेत्र से आने वाली पवित्र वायु का भी मैं निरंतर स्पर्श चाहता हूं। जो जीतेन्द्रिय होकर तीन रात तक भी काशी में निवास करते हैं, उनकी चरण–धूलि का स्पर्श भी पवित्र कर देता है, ऐसा उल्लेख स्कन्दपुराण में है।

'काशी' (वाराणसी) और काशी के अधीश्वर विश्वनाथ अनन्त हैं। यह मान्यता एवं सच्चाई है। आधुनिक भू–वैज्ञानिक भी मानते हैं कि काशी विश्व का सबसे पुराना जीवित नगर है। काशी मोक्ष की नगरी है। इसी कारण इसे अविमुक्त क्षेत्र भी कहा जाता है। यह भगवान शिव द्वारा रचित एवं सृष्टि के पूर्व से ही है। यह उल्लेख स्कन्द पुराण के काशी खण्ड में है। अगस्त्य जी के अनुसार ब्रह्मा की सृष्टि से पूर्व ही काशी की सृष्टि भगवान शिव ने किया। इसी क्षेत्र में शिवा के साथ आनन्दबिहार से इसका नाम 'आनन्दवन' भी है। शिव के प्रकाश से प्रकाशित यह क्षेत्र ज्ञान का भी क्षेत्र है। इसी

कारण 'काशी' का अर्थ एवं नाम 'ज्ञान प्रकाशिका' भी है। ज्ञान द्वारा मुक्ति इस क्षेत्र की विशेषता है। कहा जाता है कि भगवान शिव 'तारकमंत्र' का उपदेश कर मृतकों को अपने क्षेत्र में मुक्ति देते हैं। प्रलय काल में शिव काशी को त्रिशूल पर धरती से ऊपर उठाते हैं, जिस कारण महाजलप्रलय में भी काशी का नाश नहीं होता। इसी कारण इसे 'अविनाशी' नगरी एवं शिव के त्रिशूल पर बसी नगरी की संज्ञा दी जाती है।

काशी खण्ड एवं अन्य पुराणों के विवरणों से स्पष्ट है कि 'काशी' एक पुरी अथवा तीर्थ मात्र नही है। यह आध्यात्मिक उर्जा का अक्षय स्रोत है। सभी तीर्थ, नदियां आदि कलियुग में लोगों का पाप धोते–धोते जब अपनी

उर्जा से क्षीण होने लगते है तो पुनः उर्जा पाने के लिए 'काशी' का आश्रय लेते हैं। कलियुग में मनुष्यों की कलिवृत्ति के कारण तीर्थों, पुण्यक्षेत्रों नदियों की आध्यात्मिक उर्जा का क्षय होना स्वाभाविक है। इसलिए महादेव की नगरी में निर ंतर बहती उर्जा/प्रकाश से प्रकाशित होने के लिए काशी में सभी देव, तीर्थ, नदी, पुण्यक्षेत्र यहां निरंतर निवास करते हैं। उनका एक अंश काशी में रहता है तथा शेष अंश मूलस्थान/तीर्थ अथवा क्षेत्र में रहता है। यह उसी प्रकार है जैसे घर में लगे इनवर्टर की बैटरी को चार्ज करना पड़ता है। वैसे ही तीर्थो ं को देवों को, पुण्यक्षेत्रों को भी पापी मनुष्यों के पाप धोने से नष्ट उर्जा की रक्षा केलिए काशी एक चार्जि ंग का मुख्य केन्द्र है। यह आज भी सत्य है। इसे वही जानसकता है, जिसे विश्वनाथजनाना चाहें। लेकिन उस सत्य को जानने क` बाद वह विश्वनाथ के आनन्दवन का सहचर हो जाता है।फिर भौतिकता नहीं अध्यात्मिकता ही उसके जीवन का अंग बन जाती है। व्यक्ति परम चैतन्य कासाक्षात्कार करता है और परम चैतन्य में मिलकर एकाकार हो जाता है। यही मोक्ष है। इसलिए काशी मोक्षपथ है। काशी के सेवन से भी मोक्ष का रास्ता खुलता है। यह एक अटल सत्य है।

1. काशी की ऊर्जा। काशी का ज्ञान। काशी का नाम जानने के बाद काशी का भूगोल जानना भी जरूरी है। क्योंकि बिना भू–क्षेत्र जाने धरती पर कहां–कहां भटकेंगे? कहां–कहां काशी खोजेंगे? काशी की लोकप्रियता और आध्यात्मिकता ने भारत भूमि पर भी उत्तर काशी, दक्षिण की काशी (कांची) जैसी पुरियों को स्थापित किया। लेकिन भगवान शिव की काशी जो तीनों लोकों से न्यारी है तथा शिव को प्यारी है, वह अपनी विशेषताओं और पहचान से युक्त विन्धपर्वत पर

स्थित शक्ति पीठ

विन्ध्याचल और तीर्थराज प्रयाग के समीप स्थित है। तीर्थराज प्रयाग से आनेवाली गंगा–यमुना और सरस्वती में किरणा एवं धूतपापा का मिलन काशी में 'पंचगंगा' घाट में होता है। इस प्रकार काशी 'पंचगंगा' का क्षेत्र भी है। इस कारण 'पंचनदतीर्थ' भी इस का नाम है। यहां

भगवना विष्णु बिन्दुमाधव के रूप में विराजते हैं। इसी घाट पर स्वामी रामानन्द रहते थे। संत कबीरदास इसी स्वामी रामानन्द के शिष्य थे। संत कबीर एवं संत रविदास का भी जुड़ाव 'पंचगंगा' घाट से रहा है। स्कन्दपुराण व अन्य पुराणों के अनुसार राजा दिवोदास के सहयोग से ब्रह्माजी ने दस अश्वमेध यज्ञ किया तभी से यह स्थान 'दशाश्वमेध' घाट के नाम से प्रसिद्ध है। काशी के विस्तार का वर्णन पुराणों में है। स्कन्दपुराण के अनुसार पापियों की खोटी बुद्धि का खण्डन करने वाली महान असि (खंग) रूप असि नदी काशी के दक्षिण में तथा विघ्ननिवारण करने वाली तथा क्षेत्र के मोक्ष रूपी धन की रक्षा करने वाली वरणा नदी काशी के उत्तर में है। वरणा एवं असि नदी के मध्य होने से काशी का एक नाम वाराणसी भी है। पूर्व में 'मां गंगा' का उत्तरवाहिनी प्रवाह है। अर्थात काशी में मां गंगा दक्षिण से उत्तर की ओर बहती हैं। इसे उलटीगंगा भी कहते हैं। यहां मां गंगा का प्रवाह द्वितीया के चन्द्रमा जैसा है। इसी चन्द्रमा को भगवान शिव अपने मस्तक पर धारण करते हैं। शिव कीजटाओं में 'मां गंगा' निवास करती हैं। इसीलिए शायद 'मां गंगा' काशी में शिव मस्तक में विराजमान अपनी शिवजटा सखी द्वितीया की चन्द्रमा के रूप में बहती हैं। मां गंगा के इस द्वितीया के चन्द्रमा स्वरूप कादर्शन आज भी मिलता है। भगवान शिव की काशी पूर्व में मां गंगा, उत्तर में वरूणा/वरणा, दक्षिण में असि नदी से रक्षित है तथा इस क्षेत्र के पश्चिमी द्वार अथवा पश्चिमी क्षेत्र की रक्षा के लिए शिव ने'देहली–विनायक' को नियुक्त किया। वर्तमान समय में 'देहली–विनायक' का स्थान चौखण्डी रेलवे स्टेशन के समीप पंचक्रोशी मार्ग पर है। स्कन्द पुराण के उक्त विवरण से स्पष्ट है कि काशी की चौहद्दी अथवा सीमा पूर्व में 'मां गंगा', पश्चिम में देहली–विनायक (चौखण्डी– पंचक्रोशी मार्ग), दक्षिण में असि नदी तथा उत्तर में वरणा (वरूणा) नदी के मध्य है। यही पौराणिक एवं आध्यात्मिक काशी है। इसी क्षेत्र में सभी तीर्थ, देव, नदी आदि निवास करते हैं। यही तीनों लोको से न्यारी काशी है।

2. भगवान शिव काशी में लिंग रूप में पूजित हैं। भगवान शिव के दो रूप हैं। एक है सकल (साकार) तथा दूसरा है अकल (निष्कल/निराकार)। लिंग शिव का निराकार रूप तथा मूर्ति (समस्त अंग एवं आकार सहित) सकल रूप में पूजित होते हैं। भगवान शिव की पूजा उक्त दोनों रूपों में होती है। यह विवरण शिवपुराण में है। वैसे तो काशी के कण–कण में शंकर का वास है। लेकिन पुराणों के अनुसार पांच प्रकार के शिवलिंगों का उल्लेख है। (1) स्वयम्भू शिवलिंग (स्वतः पृथ्वी से प्रकट), (2) देवताओं द्वारा स्थापित शिवलिंग, (3) ऋषियों द्वारा स्थापित शिवलिंग, (4) शिवभक्तों द्वारा स्थापित शिवलिंग एवं (5) अन्य शैव तीर्थों के प्रतीक शिवलिंग। काशीखण्ड में 511 शिवलिंगों का वर्णन है। इसमें 12 स्वयम्भू शिवलिंग (ओंकारेश्वर सहित), 46 देवताओं द्वारा स्थापित, 47 ऋषियों द्वारा प्रतिष्ठित, 07 ग्रहों द्वारा पूजित, 40 शिवगणों द्वारा पूजित तथा 295 अन्य शिवलिंग हैं। इसके अतिरिक्त 65 शिवलिंग–शैव तीर्थों के प्रतीक हैं। पंडित कुवेरनाथ सुकुल के अनुसार काशीखण्ड के अतिरिक्त लिंगपुराण में 22 तथा काशी रहस्य में एक और शिवायतन का उल्लेख है। इस प्रकार कुल संख्या 534 होती है। इस संख्या में निरंतर वृद्धि होती रही। प्रिंसेप के समय यह संख्या एक हजार थी। सन् 1868 में इनकी संख्या 1654 थी। वर्तमान में यह संख्या हजारों में है।

काशी के छोटे–बड़े हजारों शिव मंदिरों में सबका दर्शन पूजन सम्भव नहीं है। यदि पौराणिक दृष्टि से भी देखें तो इनकी संख्या 500 से अधिक है। स्वयंम्भू शिवलिंग पर भी विचार करें तो वह भी संख्या बारह (12) है। किस के दर्शन–पूजन से ही सब की पूजा एवं दर्शन का फल प्राप्त होता है? यह बड़ा प्रश्न है। प्राचीन लिंग पुराण के अनुसार अविमुक्त क्षेत्र के स्वामित्व वाले शिवायतन के शिवलिंग अविमुक्तेश्वर कादर्शन–पूजन सर्वश्रेष्ठ है। यदि मनुष्य के पास मात्र एक शिवलिंग के पूजन का अथवा दर्शन का समय होतो उसे 'अविमुक्तेश्वर' का ही दर्शन–पूजन करना चाहिए, क्योंकि अविमुक्त क्षेत्र काशी (वाराणसी) के वहीस्वामी हैं। अविमुक्तेश्वर अथवा विश्वेसर का दर्शन करने से पुनर्जन्म नहीं होता है। पुराणों के अनुसारप्रत्येक पर्व/त्योहार पृथ्वी के सभी तीर्थ एवं देवादि अविमुक्तेश्वर अथवा विश्वेसर के दर्शन के लिएउपस्थित होते हैं। उस समय सभी का माहात्म्य अविमुक्तेश्वर/विश्वेसर के लीन होता है। इस प्रकार यहआदिलिंग है। पर्व/त्योहार पर व अविमुक्तेश्वर अथवा विश्वेसर के दर्शन मात्र से करोड़ों तीर्थो देवों आदि का दर्शन प्राप्त होता है। पुराणों में यह विवरण इस प्रकार है–

तीर्थानी पंचक सार विश्वेशोनन्द कानने।
दशाश्वमेधं लोलार्क केशवो विन्दुमाधवः।।
पंचमी तु महाश्रेष्ठा प्रोच्यते मणिकार्णिका।

अविमुक्तेश्वर/विश्वेश्वर के दर्शन से पाशुपत व्रत का

फल प्राप्त होता है। ऐसा उल्लेख लिंग पुराण में है–

अन्यच्च देवदेवस्य स्यानं गुह्यं यशास्विनी।
लिंग विश्वेश्वर ं नाम सर्वदेवैस्तु वन्दितम्।।
तेन दृष्टेन लभ्यते व्रतात्याशुपता फलम्।

अर्थात् सभी देवों द्वारा पूजित विश्वेश्वर के दर्शन मात्र से पाशुपत व्रत फल प्राप्त होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि काशी में आये भक्त यदि एक से अधिक स्थानों पर विद्यमान शिवलिंगों का दर्शन नहींकर पाते तो उन्हें अविमुक्तेश्वर/विश्वेश्वर अर्थात वर्तमान काशी विश्वनाथ मंदिर का दर्शन करने की मान्यता है। काशी विश्वनाथ के दर्शन मात्र से काशी के समस्त तीर्थों, देवों का दर्शन हो जाता है।

3. तीनों लोकों से न्यारी काशी (वाराणसी) में सभी तीर्थ, देव एवं पुण्य क्षेत्र हैं। इस प्रकार सभी कावर्णन तो विषद होगा। लेकिन संक्षेत्र में यह विवेचन सम्भव है। काशी में भगवान विष्णु एवं कृष्ण के 45 पीठोंका उद्धरण हमें पुराणें में मिलता है। इन में सर्वाधिक कृष्ण स्वरूप है। इनका विवरण इस प्रकार है–आदिकेशव, ज्ञानकेशव, तार्क्ष्यकेशव, नारदकेशव, प्रहलादकेशव, आदित्यकेशव, आदिगदाधर, भृगुकेशव, वामनकेशव, नरनारायण, यज्ञवाराह, विदारनरसिंह, गोपीगोविन्द, लक्ष्मीनरसिंह, शेषमाधव, हयग्रीवकेशव,विन्दुमाधव, भीष्मकेशव, निर्वाणकेशव, त्रिभुवनकेशव, ज्ञानमाधव, निर्वाण नरसिंह, महाबल नरसिंह, प्रचंड नरसिंह, गिरिनरसिंह, महामयहरनरसिंह, अत्युग्र नरसिंह, ज्वालामाली नरसिंह, विकटनरसिंह, दधिवामान, त्रिविक्रम, वलिवामन, ताम्रवामन, धरणिवाराह, कोकावाराह, खर्वनरसिंह। सब के पूजन आदि के अलग–अलग फल हैं।

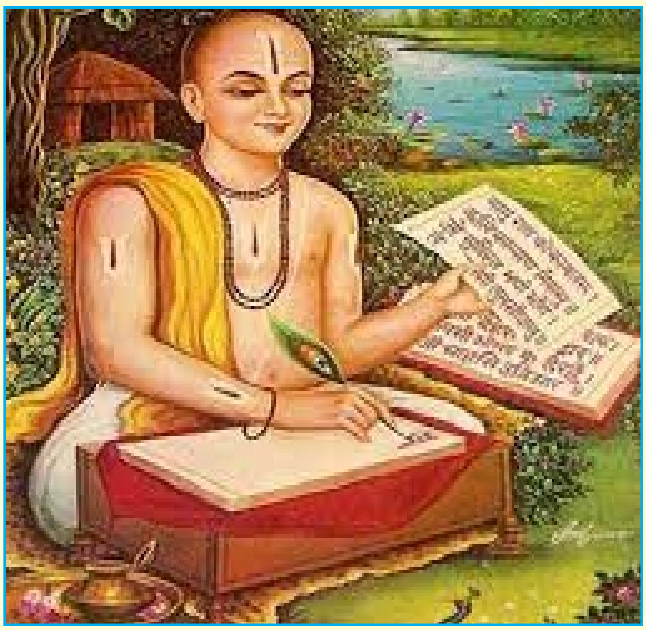

इस प्रकार पुराणों के अनुसार 72 देवी पीठों का काशी में उल्लेख है और वे वर्तमान में हैं। इन में नवचण्डी, नवशक्ति, नवदुर्गा, सोलह गौरी, 10 मातृपीठ, 28 अन्य देवीपीठ तथा चौसठयोगिनी पीठ सम्मिनित है। काशी में 11 विनायक, षड़ानन (कार्तिकेय पीठ), आठ दिशाओं में आठ भैरव पीठ तथा एक काल भैरव (काशी के कोतवाल) का भी उल्लेख पुराणों में है। शिव की काशी में– बेताल, नाग, 8 रूद गण, आदित्व पीठ हैं। लोलार्क सहित 44 आदित्य का उल्लेख है। पुराणों में 07 धर्मपीठों का भी वर्णन है। 25 तपस्थलियों का भी वर्णन पुराणों में है। दो गुफाओं एवं दो स्तम्भ/लाटों का वर्णन पुराणों में है। इनमें से एक लाट भैरव के नाम आज भी है तथा दूसरा महाश्मशान–स्तम्भ दण्डपाणि भैरव नाम से प्रसिद्ध है। उक्त के अतिरिक्त मंदाकिनी, मानसरोवर, कामाख्य मंदिर, कुरूक्षेत्र आदि अनेक तीर्थ एवं सरोवर भी है। रामेश्वर, जगन्नाथ मंदिर, विन्ध्याचल आदि तीर्थ एवं धाम यहां हैं। देशभर में आदिशंकराचार्य द्वारा स्थापित– पुरी, द्वारिका, बद्रीका एवं कांची पीठ सहित चार पीठों के शंकराचार्य अपनी–अपनी पीठों के क्षेत्र में ही कार्य के लिए स्वतंत्र है, कोई एक–दूसरे के क्षेत्र में केन्द्र नहीं बनायेगा। लेकिन चारों पीठों के शंकराचार्य काशी में अपनी पीठ का केन्द्र स्थापित करने क लिए स्वतन्त्र हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि काशी अपने में अनोखी है। यहां शैव मत के साथ–साथ वैष्णव एवं शाक्त मत की पीठें, मन्दिर एवं धर्मस्थल हैं।

4. मध्यकालीन काशी की स्थिति अति चिंतनीय रही। विदेशी हमलावरों तथा धर्मांध शासकों ने मन्दिरों एवं धर्मस्थलों को तोड़ा। ईस्ट इंडिया एवं ब्रिटिश शासन काल में नये धर्मस्थल बने। स्वतन्त्रता के बाद धर्मस्थलों की संख्या में निरंतर विकास हुआ। यह स्थिति पूरे देश में रही। काशी इसका अपवाद नहीं रही। ब्रिटिश काल में प्रिंसप ने बनारस पर पुस्तक लिखी। प्रिंसप ने लगभग एक हजार मंदिरों का बनारस (काशी) में उल्लेख किया

है। यही संख्या 1868 में 1654 हो गयी। इस प्रकार काशी में मंदिरों का विकास जारी रहा। वर्तमान में यह संख्या कई हजार हो चुकी है। मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन के दौरान कुछ नये आध्यात्मि केन्द्रों का विकास हुआ। इनमें स्वामी रामानन्द की तपस्थली, पंचगंगा घाट, संतकबीर की जन्मस्थली लहरतारा एवं तपस्थली कबीरचौरा को प्रतिष्ठा मिली। संतरविदास जन्मस्थल एवं तपस्थल सीरगोवर्धन की पीठ भी स्थापित हुई। वैष्णव संत लोटादासजी की तपस्थली लोटाटीला (ईश्वरगंगी) के साथ–साथ संत कीनाराम की कर्मस्थली एवं और पीठ की कुण्ड अध्यात्मिकता के नये केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ। स्वामी करपात्री जी द्वारा स्थापित धर्मसंघ (दुर्गाकुंड) धर्मजागरण का मुख्य केन्द्र है। महामना मालवीय जी की प्रेरणा से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में बना विश्वनाथ मंदिर अपनी विशालता, कलाकृति के कारण आस्था एवं आकर्षण का केन्द्र है। गोस्वामी तुलसीदास ने श्री रामचरित मानस की रचना साथ ही एवं अन्य ग्रन्थों के लिए काशी को अपना स्थान बनाया। गोस्वामी तुलसीदास का निवास स्थल अस्सीघाट था। इसलिए वर्तमान में अस्सीघाट की प्रसिद्धि गोस्वामी तुलसीदास से भी जुड़ी। गोस्वामी तुलसीदास के आराध्य बनकटी हनुमान एवं संकट मोचन वर्तमान में आस्था के प्रमुख केन्द्र है। काशी की रथ यात्रा का प्रारम्भ भी इसी दौरान हुआ। गोस्वामी तुलसीदास के काल से प्रारम्भ श्री रामलीला का विस्तार पूरे काशी नगर में है। परम्परागत ढ़ंग से होने वाली विश्वप्रसिद्ध रामनगर की रामलीला आधुनिक कालखंड का विकास है। इसी कड़ी में रामनगर की रासलीला भी है। मध्यकालीन धर्मान्धिता के बाद ब्रिटिश भारत में रियासतों एवं हिन्दू समाज के सहयोग से प्रारम्भ आयोजनों में रामनगर की रासलीला एवं रामलीला प्रमुख है। विशुद्धानन्द, गोपीनाथ कविराज एवं योगानन्द काशी की विभूति रहे। समय के विकास के साथ–साथ स्वतन्त्र भारत में भी अनेक समारोहों एवं पीठों का विकास हुआ। गायत्री शक्तिपीठ (नगवा), मानसमन्दिर एवं त्रिदेवमंदिर (दुर्गा कुण्ड) नवविकसित केन्द्रों में प्रमुख हैं। श्रावण महीने में मानस मन्दिर का मेला काशी की विरासत में सम्मिलित हुआ। इसी प्रकार इस्कान का दुर्गाकुण्ड स्थित केन्द्र श्रीकृष्ण भक्ति के मुख्य केन्द्र के रूप में वर्तमान में अपनी यात्रा में है। प्रजापिता ब्रह्मकुमारी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय केन्द्र पूरे नगर में है यद्यपि इसका काशी का केन्द्र सारनाथ में है। स्वामी नारायण पंथ का मुख्य मंदिर काशी में मछोदरी पर है। इस प्रकार हमें यह ज्ञात होता है कि अतीत से वर्तमान तक की यात्रा में भारत ही नहीं पूरे विश्व में काशी (वाराणसी) आज भी आकर्षण का केन्द्र है। काशी के इस आकर्षण की चर्चा में शिव की काशी के बाद वेदव्यास द्वारा स्थापित व्यासकाशी का भी विवरण महत्वपूर्ण है। गंगापार स्थित व्यासकाशी व्यास तपस्थली– वेदव्यास की कर्मस्थली के रूप में विख्यात है। चूंकि वेदव्यास अमर हैं। इस कारण आज भी वेदव्यास की निवास स्थली व्यास काशी ही है। भगवान शिव के द्वारा त्रिपुरासुर पर विजय के स्मृति दिवस अवसर पर काशी में कार्तिक पुर्णिमा के दिन देव दीपावली की अनादि कालीन परम्परा है। यह नये रूप में बीसवीं शताब्दी (1990) के दशक में प्रारम्भ हुई। आज यह भारत ही नहीं विश्व के सबसे बड़े दीप उत्सव के रूप में बदल गयी है। काशी के पौराणिक 84 घाटों के अलावा नवनिर्मित गंगा घाटों पर प्रतिवर्ष कार्तिक महीने की पूर्णिमा को सूर्यास्त के समय (सांयकाल) एक घंटे के अन्दर करोड़ों दीप काशी के सभी घाटों पर एक साथ जलते हैं। यह दीप महोत्सव कई किलोमीटर में फैले सभी गंगा घाटों पर एक साथ सम्पन्न होता है। काशी (वाराणसी) गंगा के दूसरे किनारे से देव दीपावली की छटा काशी के गंगाघाटों पर देखने से यही लगता है कि मानों पृथ्वी पर द्वितिया का चांद बड़े प्रकाश के साथ धरती पर उतरा है। इस दीपमाला की छटा मां गंगा की लहरों को और भी आकर्षक बनाती है। जिसे देख कर यही लगता है कि दीप प्रकाश से प्रकाशित घाट एवं मां गंगा एककार हो गये हैं। यह काशी का बीसवीं शताब्दी का प्रमुख एवं आकर्षक विश्व प्रसिद्ध मेला है। देव दीपावली के इस मेले से परम्परा को नवीन जीवन मिला। देवदीपावली देखने के लिए विष्व के कोने–कोने से दर्शनार्थी आते हैं। इस दिन के लिए होटलों, बजड़ों एवं नावों की अग्रिम बुकिंग, महीनों पहले ही हो जाती है। गंगा घाटों के अलावा काशी के सभी कुंड़ों तीर्थों पर भी उसी समय दीप जलते हैं और पूरी काशी अलौकिक प्रकाश से जुड़ जाती है। इस प्रकार काशी की परम्परा अनादि काल से आज तक कायम है। इसमें कुछ छूटी, कुछ टूटी लेकिन परम्परा का अनादि प्रवाह जारी है जो भी नये पंथ, नये पीठाधीश्वर भारत ही नहीं विश्व में हिन्दू परम्परा में प्रारम्भ होते हैं, वे अपना केन्द्र अब भी काशी में अवश्य बनाते हैं। आज भी काशी पूरे विश्व के आकर्षण का केन्द्र एवं अलौकिक तीर्थ के रूप में अपनी यात्रा में है।

भव्य-दिव्य काशी दर्शन

पोलिटिकल डायरी –7

"सजती सँवरती काशी, साकार होते संस्कृति के संकल्प"

भारतीय स्वतन्त्र का अमृतमहोत्सव वर्ष, 75 वर्ष पूर्व हजारों वर्षो की गुलामी (शक , हुण, मुग़ल ,अंग्रेजों) से अनेको संघर्षों, लाखों बलिदान के बाद स्वतंत्रता मिली। अपने राष्ट्र पर अपनों का शासन हुआ। दुनिया का प्राचीनतम राष्ट्र के "पुनर्निर्माण "के संकल्प हुए। हम अपनी धरोहरों को सहेजते निरंतर आगे बढ़ते रहें। लेकिन लोकतांत्रिक देश होने के कारण "धर्म निरपेक्ष" राष्ट्र बताकर अपने दल,नेता,परिवार का विकास गुणगान पूर्ववर्ती कथित राजनेताओं ने किया।लाखों अज्ञात शहीदों को गुमनामी के अंधेरी खाई में ढकेल दिया गया। पंथ निरपेक्ष राष्ट्र से कर्तव्य धर्म को अलग कर दिया गया।

धर्म को कर्मकांड कुरीतियों के संजाल में उलझा दिया गया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे सांस्कृतिक संगठन पर कई बार प्रतिबंध लगें ,सत्ता बचाने के लिये इंदिरा जी ने आपातकाल बता विपक्षियों को जेल में डाल अत्याचार किये। लेकिन भारतीय लोकतंत्र टूटा नही 1980 में भारतीय जनता पार्टी का उदय हुआ। और पहली बार कोई गैर कांग्रेसी नेता स्व.अटल बिहारी वाजपेयी जी देश के प्रधानमंत्री बने। अनेक राजनीतिक उथल पुथल के बाद देश में दूसरी बार गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी बने देश मे सांस्कृतिक, राजनैतिक एकात्मता मजबूत हुई। राष्ट्रपुर्न निर्माण का आधुनिक रुप लिये नया भारत आज खड़ा है। दुनिया भारत की तरफ हसरत भरी निगाहों से देख रही है। "वसुधैव कुटुम्बकम" "सर्वे भवंतु सुखिनः" सबका साथ ,सबका विकास ,सबका विश्वास,सबका प्रयास का संकल्पी भारत अपनी वैश्विक भूमिका के लिये तैयार हो रहा है।

वर्तमान में नरेंद्र मोदी जी का संसदीय क्षेत्र काशी क्वेटो से स्पर्धा कर रहा है। बाबा का धाम माता अहिल्याबाई होलकर के सपनों के अनुरुप नरेंद्र मोदी ,योगी जी के टीम के कुशल नेतृत्व प्रबंधन में निखर रहा है ।13 दिसंबर को मोदी जी काशी विश्वनाथ धाम का उद्घाटन किया है। मालवीय जी के सपनों की काशी जिसका विश्वविद्यालय के कुलगीत में वर्णन है वैसी ही काशी होती जा रही।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलगीत की रचना प्रसिद्ध वैज्ञानिक शान्ति स्वरूप भटनागर ने की थी।

मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी।
यह तीन लोकों से न्यारी काशी।
सुज्ञान सत्य और सत्यराशी॥
बसी है गंगा के रम्य तट पर, यह सर्वविद्या की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी॥
नये नहीं हैं ये ईंट पत्थर।
है विश्वकर्मा का कार्य सुन्दर॥
रचे हैं विद्या के भव्य मन्दिर, यह सर्वसृष्टि की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी॥
यहाँ की है यह पवित्र शिक्षा।
कि सत्य पहले फिर आत्म–रक्षा॥
बिके हरिश्चन्द्र थे यहीं पर, यह सत्यशिक्षा की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी॥
वह वेद ईश्वर की सत्यवाणी।
बने जिन्हें पढ़ के सत्यज्ञानी॥
थे व्यासजी ने रचे यहीं पर, यह ब्रह्म–विद्या की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी॥
वह मुक्तिपद को दिलाने वाले।
सुधर्म पथ पर चलाने वाले॥
यहीं फले फूले बुद्ध शंकर, यह राज–ऋषियों की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी॥
विविध कला अर्थशास्त्र गायन।
गणित खनिज औषधि रसायन॥
प्रतीचि–प्राची का मेल सुन्दर, यह विश्वविद्या की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी॥
यह मालवीयजी की देशभक्ति।
यह उनका साहस यह उनकी शक्ति॥
प्रकट हुई है नवीन होकर, यह कर्मवीरों की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी॥

मोदी जी ,योगी जी के काशी धाम उद्घाटन में तीन संकल्प स्वच्छ्ता, सर्जन,आत्मनिर्भर भारत हम देश वासियों का प्रथम कर्तव्य है कि इन धरोहरों को स्वच्छ, सुंदर , गरिमामय बनाये रखने में अपनी नागरिक भूमिका निभायें जिससे उत्तरप्रदेश संस्कृतिक आध्यात्मिक आत्मनिर्भर भारत का का मार्गदर्शक अगुआ बन सके और अमृतमहोत्सव वर्ष में शहीदों ,सन्त ,मनीषियों का भारत पुनः बन "वसुधैव कुटुम्बकम" की अपनी भूमिका निभा सके।

प्रधानमंत्री का राष्ट्र के नाम संबोधन

कृषि विकास और किसान कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता : नरेन्द्र मोदी

तीनों कृषि कानूनों का उद्देश्य यह था कि देश के किसानों को, खासकर छोटे किसानों को और ताकत मिले, उन्हें अपनी उपज की सही कीमत और उपज बेचने के लिए ज्यादा से ज्यादा विकल्प मिले

गत 19 नवंबर को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश को संबोधित किया। राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने गुरु नानक जयंती के अवसर पर लोगों को बधाई दी। उन्होंने इस बात पर भी प्रसन्नता व्यक्त की कि डेढ़ साल के अंतराल के बाद करतारपुर साहिब कॉरिडोर अब फिर से खुल गया है।

श्री मोदी ने कहा कि अपने पांच दशक के सार्वजनिक जीवन में मैंने किसानों की चुनौतियों को बहुत करीब से देखा है। इसीलिए जब देश ने मुझे 2014 में प्रधानमंत्री के रूप में सेवा का अवसर दिया, तो हमने कृषि विकास, किसान कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि देश के किसानों की हालत सुधारने के लिये हमने बीज, बीमा, बाजार और बचत, इन सभी पर चौतरफा काम किया। उन्होंने कहा कि सरकार ने बेहतर किस्म के बीज के साथ ही नीम कोटेड यूरिया, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, सूक्ष्म सिंचाई जैसी सुविधाओं से भी किसानों को जोड़ा।

श्री मोदी ने बताया कि किसानों को उनकी मेहनत के बदले उपज की सही कीमत मिले, इसके लिये भी अनेक कदम उठाये गये हैं। देश ने अपने ग्रामीण बाजार अवसंरचना को मजबूत किया है। उन्होंने कहा कि हमने न्यूनतम समर्थन मूल्य तो बढ़ाया ही, अपितु रिकॉर्ड सरकारी खरीद केंद्र भी बनाये। हमारी सरकार द्वारा की गई उपज की खरीद ने पिछले कई दशकों के रिकॉर्ड तोड़ दिये हैं।

हमारी सरकार किसानों के कल्याण के लिए, खासकर छोटे किसानों के कल्याण के लिए, देश के कृषि जगत के हित में, देश के हित में, गांव गरीब के उज्ज्वल भविष्य के लिए पूरी सत्य निष्ठा से, किसानों के प्रति समर्पण भाव से, नेक नीयत से ये कानून लेकर आई थी। हम अपने प्रयासों के बावजूद कुछ किसानों को समझा नहीं पाए

श्री मोदी ने कहा कि किसानों की स्थिति को सुधारने के इसी महाभियान में देश में तीन कृषि कानून लाये गये थे। इसका उद्देश्य यह था कि किसानों को, खासकर छोटे किसानों को और ताकत मिले, उन्हें अपनी उपज की सही कीमत तथा उपज बेचने के लिये ज्यादा से ज्यादा विकल्प मिलें। उन्होंने कहा कि वर्षों से यह मांग देश के किसान, कृषि विशेषज्ञ और किसान संगठन लगातार करते रहे हैं। पहले भी कई सरकारों ने इस पर मंथन किया है। इस बार भी संसद में चर्चा हुई, मंथन हुआ और ये कानून लाये गये। देश के कोने–कोने में अनेक किसान संगठनों ने इसका स्वागत और समर्थन दिया। प्रधानमंत्री ने इस कदम का समर्थन करने के लिये संगठनों, किसानों और लोगों को आभार व्यक्त किया।

सरकार नेक नीयत से कृषि कानून लेकर आई

श्री मोदी ने कहा कि हमारी सरकार किसानों के कल्याण के लिए, खासकर छोटे किसानों के कल्याण के लिए, देश के कृषि जगत के हित में, देश के हित में, गांव गरीब के उज्ज्वल भविष्य के लिए पूरी सत्य निष्ठा से, किसानों के प्रति समर्पण भाव से, नेक नीयत से ये कानून लेकर आई थी।

उन्होंने आगे कहा कि इतनी पवित्र बात, पूर्ण रूप से शुद्ध, किसानों के हित की बात, हम अपने प्रयासों के बावजूद कुछ किसानों को समझा नहीं पाए। कृषि अर्थशास्त्रियों ने, वैज्ञानिकों ने, प्रगतिशील किसानों ने भी उन्हें कृषि कानूनों के महत्व को समझाने का भरपूर प्रयास किया।

श्री मोदी ने कहा कि आज मैं आपको, पूरे देश को, ये बताने आया हूं कि हमने तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने का निर्णय लिया है। इस महीने के अंत में शुरू होने जा रहे संसद सत्र में हम इन तीनों कृषि कानूनों को निरस्त करने की संवैधानिक प्रक्रिया को पूरा कर देंगे।

पवित्र गुरुपर्व के वातावरण में प्रधानमंत्री ने कहा कि आज का दिन किसी को दोष देने का नहीं है, किसानों के कल्याण के लिए काम करने के लिए स्वयं को समर्पित करने का दिन है। उन्होंने कृषि क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण पहल की घोषणा की। श्री मोदी ने शून्य बजट आधारित कृषि को बढ़ावा देने, देश की बदलती जरूरतों के अनुसार फसल पैटर्न बदलने और एमएसपी को अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाने के लिए एक समिति के गठन की घोषणा की। समिति में केंद्र सरकार, राज्य सरकारों, किसानों, कृषि वैज्ञानिकों और कृषि अर्थशास्त्रियों के प्रतिनिधि शामिल होंगे।

———————

प्रदेश की जनता को जिन्ना-आजम-मुख्तार नहीं, जनधन-आधार-मोबाइल चाहिए : अमित शाह

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री अमित शाह उत्तर प्रदेश में 12 एवं 13 नवंबर को दो दिवसीय प्रवास पर रहे, जहां उन्होंने कई परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास के साथ–साथ भारतीय जनता पार्टी की संगठनात्मक बैठकों में भी भाग लिया। श्री शाह ने 13 नवंबर 2021 को आजमगढ़ में एक विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया और इसके पश्चात् बस्ती में खेल महाकुंभ का उद्घाटन किया तथा एक जनसभा को संबोधित किया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, केंद्रीय शिक्षा मंत्री एवं प्रदेश चुनाव प्रभारी श्री धर्मेंद्र प्रधान, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री स्वतंत्र देव सिंह, बस्ती के कार्यक्रम में सांसद श्री हरीश द्विवेदी सहित कई सांसद, राज्य सरकार में मंत्री, विधायक, वरिष्ठ भाजपा नेता और बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

सपा, बसपा और कांग्रेस के शासनकाल में उत्तर प्रदेश में जातिवाद, परिवारवाद और तुष्टिकरण की नीति और राजनीति होती थी, आज केवल और केवल विकास की राजनीति होती है

श्री शाह ने कहा कि जिस प्रदेश में क़ानून–व्यवस्था ठीक न हो, वहां विकास नहीं हो सकता। उत्तर प्रदेश में एक समय था जब पुलिस के कर्मचारी बाहुबलियों से डरते थे, लेकिन आज उत्तर प्रदेश पुलिस को देखते ही राज्य के बाहुबली आत्मसमर्पण करने के लिए गले में पट्टी डालकर निकलते हैं कि गोली मत चलाओ।

श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी स्वयं उत्तर प्रदेश के काशी से चुन कर आते हैं। वे उत्तर प्रदेश के विकास के लिए सदैव कटिबद्ध रहते हैं और उनकी योजनाओं को जमीन पर अक्षरशः उतारने का कार्य पिछले पांच वर्षों में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने किया है।

उन्होंने कहा कि सपा, बसपा और कांग्रेस के शासनकाल में उत्तर प्रदेश में जातिवाद, परिवारवाद और तुष्टिकरण की नीति और राजनीति होती थी, आज केवल और केवल विकास की राजनीति होती है। उत्तर प्रदेश में हमारी सरकार आने से पहले राज्य की जीडीपी 10.90 लाख करोड़ रुपये थी जो आज लगभग दो गुना होकर 21.31 लाख करोड़ रुपये हो चुकी है। इसी तरह उत्तर प्रदेश में बेरोजगारी दर 17.5% से घटकर 4.2% पर आ गया है। हमारी सरकार आने से पहले उत्तर प्रदेश में 10 मेडिकल कॉलेज थे, आज 40 हैं। इसी तरह, मेडिकल सीटें 1200 से तीन गुना से भी अधिक बढ़कर 3800 हो गई हैं। उत्तर प्रदेश में हवाई अड्डों की संख्या 4 से बढ़कर 8 हो गई है और खाद्यान्न उत्पादन में भी बहुत बड़ी वृद्धि हुई है। उत्तर प्रदेश में भाजपा की योगी आदित्यनाथ सरकार आने से पहले आधे–अधूरे दो एक्सप्रेस–वे थे लेकिन आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से योगी सरकार में आज प्रदेश में पांच नए एक्सप्रेस–वे बने हैं। साथ ही, डिफेंस कॉरिडोर का भी निर्माण हुआ है।

समाजवादी पार्टी की अखिलेश यादव और मुलायम यादव सरकारों से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की योगी आदित्यनाथ सरकार का अंतर स्पष्ट करते हुए श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अनेक जन–कल्याणकारी योजनाएं दी, जैसे J से जन–धन खाते, A से आधार और M से मोबाइल तो वहीं अखिलेश यादव की सपा की भी एक JAM योजना है, जिसका अर्थ है – J से जिन्ना, A से आजम खान और M से मुख्तार। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव को देश के विभाजन के गुनाहगार जिन्ना में महानता नजर आती है, इसलिए चुनाव आते ही उनको जिन्ना याद आ रहे हैं। उत्तर प्रदेश की जनता को अखिलेश यादव और मुलायम सिंह यादव के समय में जिन्ना–आजम–मुख्तार वाला JAM नहीं, जन–धन, आधार और मोबाइल वाला JAM चाहिए। जाति–पाति, दंगे, वोट बैंक व तुष्टिकरण की राजनीति ही सपा, बसपा और कांग्रेस की राजनीति की पहचान है।

आजमगढ़ में विश्वविद्यालय के शिलान्यास के अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि जिस आजमगढ़ को सपा शासन में दुनिया भर में कट्टरवादी सोच और आतंकवाद की पनाहगार के रूप में जाना जाता था, उसी आजमगढ़ की भूमि पर आज विश्वविद्यालय की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। मैं चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश की इस पावन धरा को विदेशी आक्रान्तों से मुक्त करने वाले महाराजा सुहेलदेव के नाम पर इस विश्वविद्यालय का नाम रखा जाय तो यह सही मायनों में महाराजा सुहेलदेव के प्रति हमारी एक विनम्र श्रद्धांजलि होगी।

––––––––––––––

आओ...चलें काशी तीरें.....

भारत में हिन्दू धर्म एवं सभ्यता के केंद्र के रूप में काशी यानि वाराणसी का विशेष महत्व है। द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रमुख काशी विश्वनाथ मंदिर अनादिकाल से काशी में है। यह शिव और पार्वती का आदि स्थान है इसीलिए आदिलिंग के रूप में अविमुक्तेश्वर को ही प्रथम लिंग माना गया है। इसका उल्लेख महाभारत और उपनिषद में भी किया गया है। काशी को मोक्ष की नगरी भी कहा जाता है। ऐसी पौराणिक मान्यता है कि भगवान शिव गंगा के किनारे इस नगरी में निवास करते हैं। भगवान शिव काशी के पालक और संरक्षक है, जो यहां के लोगों की रक्षा करते हैं।

भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग उत्तर प्रदेश राज्य के वाराणसी शहर में गंगा के घाट पर स्थित है। ये ज्योतिर्लिंग हिन्दू धर्म में सर्वाधिक पवित्र तीर्थस्थलों में से एक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि भगवान शिव के त्रिशूल पर पूरा काशी बसा हुआ है, काशी वह नगरी है जहां के कण कण में शिव वसते है। राजधानी लखनऊ से 306 किमी दूरी पर स्थित काशी विश्वनाथ तक पहुंचे के लिए हवाई, रेल और सड़क मार्ग है। आइए जानते हैं विश्व प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर से जुड़ी ऐसी बातें जिनके बारे में बहुत कम ही लोग जानते हैं.।

गंगा किनारे बसी काशी नगरी को भोले की नगरी भी कहा जाता है। इस नगरी में भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंग में एक विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग शहर के बीच में स्थित है। काशी विश्वनाथ मंदिर वाराणसी के सबसे प्रसिद्ध और प्राचीन मंदिरों में से एक है, जिसे स्वर्ण मंदिर भी कहा जाता है। जो भगवान शिव को समर्पित है। यह इतिहास में कई बार नष्ट किया गया और फिर से बनाया गया है। मंदिर का सर्वप्रथम निर्माण 11 वीं सदी में मंदिर की स्थापना हुई थी। वर्ष 1490 में राजा हरिशचंद्र द्वारा पहली बार जीर्णाद्धार करवाया था। मंदिर के बाहरी स्वरुप को अनेक बार तोड़ गया लेकिन यह बार–बार पुनर्गठित हुआ। आखिरी बार औरंगज़ेब ने इस मंदिर को तोड़ कर मस्जिद का निर्माण करवाया, जो ज्ञानवापी मस्जिद के नाम से जानी जाती है। बाहरी आक्रमणों के बाद अंतिम बार इसका जीर्णोद्धार इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने मराठा सम्राट विक्रमादित्य से 1780 में करवाया था। इस पवित्र नगरी के उत्तर की तरफ ओंकारखंड, दक्षिण में केदारखंड और बीच में विश्वेशवरखंड हैं। विश्वनाथ मंदिर में श्रृंगार के समय सारी मूर्तियां पश्चिम मुखी होती हैं। बाबा विश्वनाथ के दरबार में तंत्र की दृष्टि से चार प्रमुख द्वार हैं। जो इस प्रकार हैं शांति द्वार, कला द्वार, प्रतिष्ठा द्वार, निवृत्ति द्वार। इन चारों द्वारों का तंत्र की दुनिया में अलग ही स्थान है।

शुभम करोति कल्यानम अरोग्यम धनसम्पदा
शत्रु बुद्धि विनाशाया दीप ज्योति नमोस्तुते

पुराणों में इस ज्योतिर्लिंग के बारे में यह कथा दी गई है, कि भगवान शंकर हिम पुत्री पार्वती जी से विवाह करके कैलाश पर्वत पर ही रहने लगे थे। लेकिन पिता के घर में ही विवाहित जीवन बिताना पर्वती जी को अच्छा नहीं लगता था, उन्होंने एक दिन भगवान शिव से कहा आप मुझे अपने घर ले चलिए अपने पिता के घर रहना मुझे अच्छा नहीं लगता। सभी लड़कियां शादी के बाद पति के घर जाती हैं। मुझे घर में ही रहना पड़ रहा है, भगवान शिव ने उनके मन की ये बात स्वीकार कर ली और वह माता वह पार्वती के साथ अपनी पवित्र नगरी काशी में आ गए। यहां आकर वह विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के रूप

में स्थापित हो गए, जहां उन्हें विश्वनाथ या विश्ववेश्वर नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है ब्रह्मांड का शासक।

काशी नरेश (काशी के राजा) मुख्य पुजारी होतें हैं जो बाबा विश्वनाथ की दैनिक पूजा–पाठ का कार्य करते हैं। अन्य किसी व्यक्ति या पुजारी को गर्भगृह में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है। बाबा विश्वनाथ के धार्मिक कार्य करने के बाद ही मंदिर में दूसरों को प्रवेश करने दिया जाता है।

बताया जाता है कि जब औरंगजेब इस मंदिर को तोड़ने वाला है। इस बात का पता लगते ही लोगों ने भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग को एक कुएं में छिपा दिया था। वह कुआं आज भी मंदिर और मस्जिद के बीच में स्थित है। 1785 में काशी के तत्कालीन कलेक्टर मोहम्मद द्वारा मंदिर के सामने एक नौबतखाना बनवाया गया था। 28 जनवरी,1983 में मंदिर को उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने कब्जे में ले लिया। जिसके बाद मंदिर समिति गठित करके सभी कार्य समिति को सौंप दिए गए।

मंदिर से जुड़ी मुख्य बातें–

काशी विश्वनाथ मंदिर स्थित शिवलिंग बारह ज्योर्तिलिंगों में से एक है।

सावन ही नहीं हर दिन यहां भोले बाबा के दर्शन को भीड़ लगती है।

काशी नरेश मुख्य पुजारी होतें हैं जो बाबा विश्वनाथ की दैनिक पूजा–पाठ का कार्य करते हैं।

काशी मोक्षदायनी है, बाबा के दर्शन मात्र से सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं।

बाबा विश्वनाथ के दर्शन करने के लिए विदेशों से भी लोग आते हैं।

काशी विश्वनाथ मंदिर के ऊपर सोने का छत्र लगा हुआ है।

मंदिर के महत्वपूर्ण त्यौहार–

महा शिवरात्रि

शिवरात्रि हर साल फरवरी या मार्च को मनाई जाती है। महाशिवरात्रि उस रात को चिह्नित करती है जब भगवान शिव ने श्तांडवश किया था। यह भी माना जाता है कि इस दिन भगवान शिव का विवाह मां पार्वती से हुआ था। इस दिन शिव भक्त उपवास रखते हैं और शिव लिंग पर फल, फूल, दूध और बेल के पत्ते चढ़ाते हैं। शिवरात्रि पर श्रध्दालु दूर दूर से काशी विश्वनाथ मंदिर में बाबा के पवित्र दर्शन पाने के लिए आते हैं।

सावन का महीना

भगवान शिव के भक्तों के लिए श्रावण माह अत्यन्त शुभ होता है। इस महीने के प्रत्येक सोमवार को शिवलिंग की विशेष सजावट की जाती है।दूसरे सोमवार को भगवान शिव और मां पार्वती की चलाय मान मूर्तियों की सजावट की जाती है। तीसरे और चौथे सोमवार को क्रमशः श्री अर्धनारीश्वर और रुद्राक्ष जी की सजावट की जाती है। श्रावण माह का पूरा महीना बहुत ही उत्साह से मनाया जाता है।

देव दीपावली

देव दीपावली देवताओं की दीवाली जो कार्तिक पूर्णिमा का त्यौहार है, यह नवम्बर दृ दिसम्बर में तथा दिवाली के पंद्रह दिन बाद पड़ता है। गंगा नदी के तट पर देवियों के सम्मान में दस लाख से अधिक मिट्टी के दीए जलाए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस दिन भगवान धरती पर उतर कर गंगा में स्नान करते हैं।

अन्नकूट

श्री कृष्ण के बचपन की लीलाओं के क्रम में अन्नकूट मनाया जाता है। जिसमें उन्होंने इंद्र के क्रोध से वृन्दावन

के ग्वाले एवं उनके वंश को सुरक्षा प्रदान की और इंद्र के अभिमान को झुकाया। देवराज इंद्र सहित सभी ब्रजबासी उनकी अलौकिक शक्ति से परिचित हुए और श्रीकृष्ण के इस पराक्रम को भव्य त्यौहार के रूप में मनाया, इस प्रकार अन्नकूट परम्परा की शुरुआत हुई।

आमलकी एकादशी

आमलकी एकादशी जिसे रंगभरी भी कहते हैं। जो फरवरी–मार्च के महीने में मनाया जाता है।आमलकी ब्रम्हा की संतान माने जाते हैं,जो सभी प्रकार के पापों को नष्ट करने वाले देव हैं। आमलकी, वास्तव में ब्राह्मण का

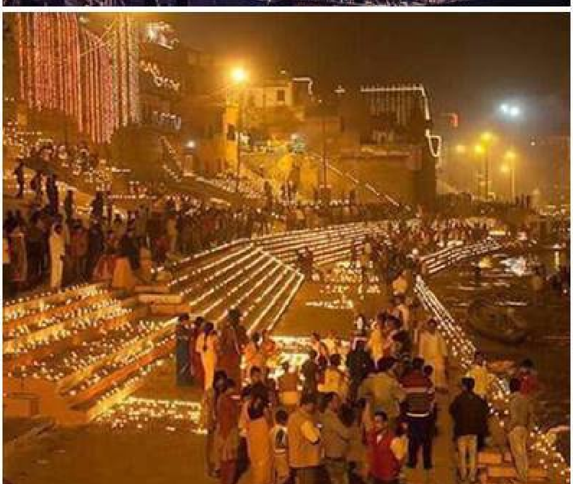

रूप हैं ऐसी मान्यता है कि जो भी आमलकी पेड़ की इसकी परिक्रमा करता है वह अपने पापों से मुक्त हो जाता है।

मकर–संक्रांति और अक्षय तृतीया भी काशी विश्वनाथ में बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है।

बनारस शहर

वाराणसी यानी काशी का पुराना नाम, बनारस प्राचीन शहरों में से एक है, जिसका दिल समृद्ध विरासत समेटे हुए आधुनिकता के साये तले भी धड़क रहा है। गंगा किनारे यह शहर हिंदुओं, बौद्ध और जैन समाज के लिए खासी अहमियत रखता है। इस शहर की यात्रा का अनुभव आपको भीतर तक बदल कर रख देगा।पृथ्वी और स्वर्ग के बीच वाराणसी को सबसे बड़े तीर्थ के रूप में जाना जाता है।वाराणसी को शास्त्र, गीत–संगीत, कला–साहित्य और आध्यात्मिकता का सांस्कृतिक केंद्र भी कहा जाता है।गंगा घाट किनारे का रोजमर्रा का जीवन और शाम के समय होने वाली गंगा आरती इस पवित्र नदी के प्रति लोगों का नजरिया बदल देती है।

बनारसी सिल्क साड़ियां और बनारसी पान ने इसको विश्वपटल पर अलग ही पहचान दिलाई हुई है।घाट और मंदिरों में सुबह का समय बिताना आध्यात्मिक स्तर पर मन और चित्त को शुद्ध करने वाला अनुभव है।

पूजा/दर्शन की सूची

विश्वनाथ मंदिर में मुख्यता चार प्रकार की आरती का उल्लेख है जिनकी अलग अलग सेवा शर्तें हैं। जो रूपये 180 से 350 का भुगतान करके कि जा सकती हैं, सुबह

होने वाली मंगला आरती महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सुबह की पहली आरती है। आरती प्रतिदिन सुबह 3.00 – 4.00 बजे के बीच शुरू होती है। भक्तों को 2.30 – 3.00 बजे के बीच मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति होती है। मंदिर का प्रवेश बिंदु गेट नंबर एक है। मंदिर के प्रवेश स्थल पर सभी को टिकट दिखाना अनिवार्य है। दस वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए प्रवेश निःशुल्क है।

वहीं हर शाम विश्वनाथ मंदिर में श्रृंगार भोग आरती की जाती है। यह सप्त ऋषि आरती के बाद चौथी आरती है। श्रृंगार भोग आरती भगवान को भोजन परोसने की पेशकश है। बाबा विश्वनाथ को भोग लगाने के बाद उसको प्रसाद के रूप में सभी भक्तों के बीच बांट दिया जाता है। श्रृंगार आरती प्रतिदिन रात 9.00 –10.15 बजे के बीच की जाती है। भक्तों को आरती से आधे घंटे पहले मंदिर में प्रवेश कर लेना चाहिए उसके बाद प्रवेश वर्जित है। इस आरती में पांच वर्ष के बच्चों के लिए प्रवेश निःशुल्क है। मंदिर में प्रवेश करतें समय टिकट अपने पास रखें। इसके बाद सबसे आखिरी और पांचवी शयन आरती है जो रात 10.30– 11.00 बजे तक की जाती है।

सुगम दर्शन

यह तीव्र एंव कम परेशानी मुक्त दर्शन है जो एक विशेष प्रक्रिया के तहत पूरा किया जाता है। जिसको भक्तों के लिए समय की कमी, बुजुर्गों और दिव्यागों को ध्यान में रखकर मंदिर समिति द्वारा निर्धारित किया गया है। जो कतार में खड़ रह कर इंतजार नहीं कर सकते। कृपया दर्शन के पहले मंदिर के पास स्थित हेल्पडेस्क पर जाएं। श्रध्दालुगण इस बात का ध्यान रखें कि बुकिंग तारीख को नही बदला जाता। आरती के समय सुगम दर्शन की अनुमति नहीं है। सुगम दर्शन केवल उपलब्ध दर्शन स्लॉट में ही बुक कर सकतें हैं,बुकिंग उसी दिन हेल्पडेस्क काउंटर पर ही की जाएगी।12 वर्ष से कम उम्र के लिए कोई टिकट आवश्यक नहीं है।

रूद्राभिषेक

विश्वनाथ मंदिर में ज्योर्तिलिंग अभिषेक के लिए छरू श्रेणियों में बाटां गया है। जहां भक्तों को अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार अभिषेक करा सकतें हैं। जिसमें साधारण रूद्राभिषेक 450 रूपये में एक शास्त्री द्वारा किया जाता है। सबसे बड़ा महा–रूद्राभिषेक है जिसका मूल्य 57100 रूपये है जो 11 शास्त्री द्वारा 11 दिनों में पूरा किया जाता है।

मंदिर परिक्षेत्र के तीर्थ कुंड

मणिकर्णिका चक्र पुष्करिणी कुंड गंगा नदी पर मणिकर्णिका घाट पर स्थित है। मणिकर्णिका घाट अन्य चार घाटों अस्सी, दशाश्वमेध, पंचगंगा और आदि केशव के साथ सबसे पवित्र और पूजनीय घाटों में से एक है।

दुर्गा कुंड प्रसिद्ध दुर्गा मंदिर के पास है। इसे सबसे प्रसिद्ध मंदिरों और एक बढ़िया कुंड के रूप में जाना जाता था। दुर्गा मंदिर और दुर्गा कुंड 18 वीं शताब्दी में बनाया गया था। अभिलेखों से यह भी पता चलता है कि इस बड़े आकार के कुंड का निर्माण रानी अहिल्याबाई होल्कर करवाया था। यह अद्‌भुत कुंड है जिसमें लाल रंग के पत्थर हैं,जिससे पानी निकलता है।

गौरी कुंड

गंगा नदी से सटे केदार घाट में एक छोटा सा आयताकार कुंड है।जिसे गौरी कुंड के नाम से जाना जाता है।

कैसे पहुंचा जाए

वाराणसी देश के सभी हिस्सों से से जुड़ा है, यह सड़क, रेल और वायु मार्ग से अच्छी तरह कनेक्ट है, यह शहर भारत के अन्य शहरों नई दिल्ली, मुंबई, कोलकत्ता, चेन्नई, और भोपाल, से आवागमन हेतु यात्रा विकल्प प्रदान करता है। वाराणसी जंक्शन रेलवे स्टेशन शहर का मुख्य रेलवे स्टेशन है।जहां से विश्वनाथ मंदिर 3.6 किमी दूर है। पंडित दीन दयाल उपाध्याय स्टेशन (मुगलसराय) वाराणसी स्टेशन से लगभग 6.5 किमी की दूरी पर स्थित है। जो वाराणसी स्टेशन के बाद दूसरा प्रमुख स्टेशन है। जहां से देश की अधिकांश ट्रेन यहां से गुजरती हैं।

सड़क मार्ग

चौधरी चरण सिंह बस स्टैंड वाराणसी का सबसे बड़ा बस स्टैंड हैं जो देश के अन्य बस टर्मिनलों से जुड़ा है।

- **लाइव दर्शन -**
  https://www.shrikashivishwanath.org/online/live_darshan
- **सुगम दर्शन -**
  http://shrikashivishwanathdarshan.com/
- **काशी प्रसाद्म -**
  http://shrikashiprasadam.com/
- **गेस्ट हाउस -**
  http://gangadarshanam.com/
- **दान के लिए -**
  http://shrikashivishwanathdarshan.com/donation
- **विदेशी पर्यटक टिकट बुकिंग-**
  https://www.shrikashivishwanath.org/contact/foreign_booking_process

"माँ" "बाबा" की आस्था का संगम

साधक राजकुमार

वाराणसी के सांसद और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब भी अपने संसदीय क्षेत्र आते हैं तो देश ही नहीं पूरे विश्व की निगाह उन पर टिक जाती है। कारण, वे हर बार अपनी काशी के लिए कुछ अलग कर जाते हैं। इस बार मौका और भी खास रहा। काशी विश्वनाथ धाम के लोकार्पण पर प्रधानमंत्री जी ने काशी की पुरातन संस्कृति और नवीनता का जिक्र कर बनारस की छवि दुनिया के सामने और मजबूत कर दी है।

प्रधानमंत्री जी ने गंगा में डुबकी लगाकर आस्था और धर्म परायणता का उदाहरण प्रस्तुत किया तो इसके साथ उन्होंने गंगा स्वच्छता पर सवाल खड़े करने वालों को भी करारा जवाब दिया। अयोध्या में राम मंदिर का शिलान्यास के बाद काशी विश्वनाथ धाम के लोकार्पण प्रधानमंत्री ने हिंदू आस्था के प्रति रिश्ता और प्रगाढ़ किया।

इससे देश ही नहीं दुनिया भर के हिंदू धर्मावलंबियों में एक तरह का साफ संदेश गया कि यह सब पीएम मोदी ही कर सकते हैं। सांस्कृतिक आध्यात्मिक भारत के रूप में पहचान रखने वाली काशी में पीएम की गंगा में लगाई आस्था की डुबकी का भी विश्वभर में बड़ा संदेश गया और लोगों ने गंगा को अविमुक्त मान लिया। प्रधानमंत्री ने साफ संदेश दिया कि गंगा पूर्व की भांति निर्मल है। काशी और भोलेनाथ के जरिए प्रधानमंत्री जी ने धर्म और विकास को भी एक साथ पिरोया।

श्रम साधकों के सम्मान और उनके साथ भोजन कर न केवल अंत्योदय बल्कि समरसता का भी संदेश दिया। दरअसल, काशी विश्वनाथ धाम के निर्माण में लगे श्रमिक सभी जाति, धर्म के हैं। ऐसे में श्रमिकों के जरिए देशभर के करोड़ों मजदूरों के मन तक समरसता की भावना बनाने की कोशिश की

अपने काशी प्रवास के दूसरे दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा शासित राज्यों के12 मुख्यमंत्रियों और दो राज्य के उप मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन को संबोधित किया। इसके बाद वह चौबेपुर क्षेत्र के उमरहां स्थित स्वर्वेद महामंदिर धाम के वार्षिकोत्सव में शामिल होने गये। यहां पर प्रधानमंत्री ने देशभर से आए हुए लोगों को संबोधित किया।

सांस्कृतिक नगरी काशी में बाबा विश्वनाथ धाम का लोकार्पण किसी उत्सव से कम नहीं रहा। पहली बार सोशल मीडिया पर काशी विश्वनाथ धाम सुबह से लेकर रात तक टाप ट्रेंड में रहा। दुनिया भर में काशी विश्वनाथ सहित दस हैशटैग छाये रहे।

लोकार्पण के समय देश के 27 हजार शिवालयों में पूजा–अर्चना करके संगठन ने लोगों को इस कार्यक्रम से जोड़ने का कार्य किया। भाजपा संगठन ने15,444 मंडलों में 51 हजार स्थानों पर लोकार्पण समारोह का लाइव प्रसारण करवाकर देश के बहुसंख्यक सनातन धर्म के अनुयायियों में देश और समाज के प्रति आस्था का नया ज्वार उत्पन्न कर दिया।

शिव धाम के लोकार्पण के इस कार्यक्रम में देश के दिग्गज 500 संतों के अलावा 2500 अतिथि शामिल हुए। गंगा के घाटों पर 11 लाख दीप प्रज्वलित करके भव्य दीपोत्सव मनाया गया, वाराणसी को विशेष रूप से सजाया गया। वाराणसी के हर घर में प्रसाद व दिव्य काशी–भव्य काशी के संबंध में सरकारी पुस्तिका को भेजा गया। लोकार्पण के कार्यक्रम से देश व उत्तर प्रदेश के लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ने के लिए पूरे उत्तर प्रदेश में 13 दिसंबर से मकर संक्रांति 14 जनवरी तक पूरे एक महीने तक विभिन्न कार्यक्रम चलेंगे, इन कार्यक्रमों में पार्टी के बड़े जनप्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं।

सबसे अच्छी बात यह है कि इस भव्य प्रोजेक्ट का कार्य पूरा हो चुका है। निर्माण कार्य में लगी मशीनें परिसर से बाहर आ चुकी हैं। इस प्रोजेक्ट की महत्वपूर्ण बात यह है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ खुद निरंतर इस प्रोजेक्ट की निगरानी कर रहे थे। पीएम मोदी का यह ड्रीम प्रोजेक्ट पूरा होना काशी के लोगों व भगवान बाबा

काशी विश्वनाथ के दर्शनार्थियों के लिए किसी सपने के सच होने जैसा है। बाबा काशी विश्वनाथ के दर्शन के लिए निरंतर आने वाले भक्त इस प्रोजेक्ट की भव्यता, आधुनिकता व प्राचीनता के अलौकिक संगम को देखकर अचंभित हो रहे हैं। काशी (वाराणसी) को दुनिया के सबसे प्राचीन नगरों में एक माना जाता है। इस नगरी को सनातन संस्कृति का दुनिया भर में एक प्रमुख केंद्र माना जाता है, वहीं काशी को भारत की धार्मिक राजधानी भी माना जाता है।

सनातन धर्म का प्राचीन ग्रंथ श्स्कन्दपुराणश काशी की दिव्य अलौकिक महिमा का एक श्लोक में गुण–गान करते हुए कहता है कि–

भूमिष्ठापिन यात्र भूस्त्रिदिवतोऽप्युच्चौरधरूस्थापिया
या बद्धाभुविमुक्तिदास्युरमृतंयस्यांमृताजन्तवरू।
या नित्यंत्रिजगत्पवित्रतटिनीतीरेसुरैरूसेव्यते
सा काशी त्रिपुरारिराजनगरीपायादपायाज्जगत।।

इसका भावार्थ है कि– जो भूतल पर होने पर भी पृथ्वी से संबद्ध नहीं है, जो जगत की सीमाओं से बंधी होने पर भी सभी का बन्धन काटने वाली (मोक्षदायिनी) है, जो महात्रिलोकपावनी गंगा के तट पर सुशोभित तथा देवताओं से सुशोभित है, त्रिपुरारि भगवान विश्वनाथ की राजधानी वह काशी संपूर्ण जगत की रक्षा करें।'

हमारे सनातन धर्म के विभिन्न प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन से काशी का लोकोत्तर स्वरूप पूर्ण रूप से विदित होता है। काशी नगरी के बारे में कहा जाता है कि यह पुरी भगवान शंकर के त्रिशूल पर बसी है। अतः प्रलय होने पर भी इसका कभी विनाश नहीं होगा। भौगोलिक स्थिति की बात करें तो काशी नगरी वर्तमान वाराणसी शहर में स्थित एक प्राचीन पौराणिक नगरी है, जोकि गंगा के वाम (उत्तर) तट पर उत्तर प्रदेश के दक्षिण–पूर्वी कोने में वरुणा और असी नदियों के गंगा संगमों के बीच बसी हुई है। इस स्थान पर गंगा ने प्रायः चार मील का दक्षिण से उत्तर की ओर घुमाव लिया है और इसी घुमाव के ऊपर यह पौराणिक नगरी स्थित है। इस नगर का प्राचीन वाराणसी नाम लोकोच्चारण से बनारस हो गया था, जिसे उत्तर प्रदेश सरकार ने शासकीय रूप से पूर्ववत् वाराणसी कर दिया है। उत्तर प्रदेश की इस पौराणिक प्राचीन पावन नगरी काशी में बाबा विश्वनाथ का स्थान है, इस स्थान पर विराजमान बाबा काशी विश्वनाथ का देश के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में विशेष महत्व है, उनको पूरी दुनिया का नाथ व जगत का पालनहार माना जाता है।

सनातन संस्कृति के विद्वानों के द्वारा कहा जाता है कि भगवान शिव काशी नगरी को कभी नहीं छोड़ते हैं। काशी के बेहद पवित्र इस स्थान पर दुनिया भर के विभिन्न भागों से सनातन संस्कृति में विश्वास रखने वाले लोग जीवन–मरण से मुक्ति की प्राप्ति के लिए आते हैं। सनातन धर्म में आदिकाल से ही काशी को मोक्षदायिनी भूमि माना जाता है। सनातन धर्मावलंबियों का दृढ़ विश्वास है कि काशी में देह त्यागने मात्र से प्राणी जीवन लेने के बंधन मुक्त हो जाता है। पर्यटन के दृष्टिकोण से भी काशी नगरी बहुत महत्वपूर्ण है, यहां पर प्राचीन मंदिर व गंगा घाटों की भरमार है, हर वर्ष करोड़ों लोग बाबा काशी विश्वनाथ और बनारस के अन्य मंदिरों व घाटों की दिव्य अलौकिक छटा के दर्शन करने आते हैं। दुनिया भर में प्रसिद्ध बनारस के प्राचीन घाट भगवान भोलेनाथ की इस पावन पौराणिक प्राचीन नगरी की शान हैं, जिसका अलौकिक अहसास आपको वहां गंगा किनारे घाटों पर जाकर ही होगा। अगर आपकी जरा भी आध्यात्म में रुचि है और धार्मिक प्रवृत्ति है तो आपको बनारस के घाटों की सीढ़ियों पर बैठ कर माँ गंगा को निहारना आपके अंदर एक नयी सकारात्मक ऊर्जा का संचार करके बेहद सुकून देता है। काशी को दुनिया में लोग बाबा काशी विश्वनाथ की नगरी, हजारों मंदिरों का शहर, भारत की धार्मिक राजधानी, भगवान शिव की नगरी, घाटों का शहर, दीपों का शहर आदि विशेषण भी देते हैं।

काशी विश्वनाथ में कारिडोर निर्माण से पहले किसी दर्शनार्थी के लिए काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन करना

एक बहुत बड़ी चुनौती थी। उसको बेहद भीड़भाड़ से जद्दोजहद करते हुए बेहद तंग गलियों वाले रास्तों पर अव्यवस्थित व्यवसायिक गतिविधियों वाली अतिक्रमण युक्त गलियों से निकल कर जाना होता था। इन तंग गलियों से निकल कर लंबी लाइन में घंटों इंतजार करना होता था। प्रसाद वाले, फूल वाले और सुरक्षा में लगे पुलिस वालों की अव्यवस्थित भीड़ को देखकर दर्शनार्थियों को डर लगता था। लेकिन नवनिर्मित काशी विश्वनाथ कारिडोर अब भक्तों को इन सब समस्याओं से मुक्ति दिलायेगा। उसी उद्देश्य के लिए कभी बनारस की तंग गलियों में स्थित बाबा काशी विश्वनाथ मंदिर के इर्द–गिर्द मोदी–योगी सरकार ने बहुत बड़े स्तर पर अधिग्रहण करके बड़े बदलाव किये हैं। प्राचीन व आधुनिकता के अनूठे दिव्य अलौकिक संगम के साथ मोदी–योगी की सरकार ने भव्य काशी विश्वनाथ कारिडोर बनाने का कार्य किया है। विश्वनाथ धाम के विस्तारीकरण और सुंदरीकरण परियोजना के तहत 5 लाख 27 हजार 730 वर्ग फीट में भव्य निर्माण किया है। इस प्रोजेक्ट की लागत लगभग 1000 करोड़ है और इसका उद्देश्य बाबा काशी विश्वनाथ मंदिर के आसपास के इलाकों को आधुनिक व प्राचीन के संगम के साथ दोबारा भव्य बनाना था, जिसमें केंद्र व उत्तर प्रदेश सरकार काफी हद तक कामयाब होती नज़र आ रही है। मंदिर के पुनर्निर्माण में भव्यता प्रदान करने के लिए पत्थर वैसे ही लगाए जा रहे हैं जैसे हजारों वर्ष पहले लगाये जाते थे। मुख्य मंदिर परिसर के चार भव्य द्वार होंगे, इनसे आप मंदिर, घाट और शहर की तरफ से आ सकते हैं, लेकिन परिसर में घुसते ही बाबा विश्वनाथ के दर्शन नहीं होंगे, गंगा घाट की तरफ से भी पहले पायदान पर दर्शन नहीं होगा, दर्शन के लिए श्रद्धालु को मंदिर के भीतर आना ही होगा, भव्य परिसर में विश्वानाथ मंदिर के आसपास में खुली जगह बनाई गई है, मुख्य परिसर के बाहर भी एक बड़ा परिसर है जहां शापिंग व श्रद्धालुओं के लिए अन्य सुविधाओं की व्यवस्था होगी।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बाबा विश्वनाथ धाम में पर्यावरण संरक्षण का पूरा ध्यान रखा गया है, मंदिर के आंगन में भगवान भोलेनाथ का सबसे प्रिय पौधा रुद्राक्ष लगाया जा रहा है। इसके अलावा पारिजात, अशोक, बेल के पौधे भी अपनी प्राकृतिक हरियाली बिखेरेंगे। बाबा के दिव्य मंदिर के दर्शन के लिए भक्त जब माँ गंगा में श्रद्धा के गोते लगाकर जल लेकर बाबा विश्वनाथ के दरबार की तरफ आस्था से परिपूर्ण अपना एक–एक कदम बढ़ाएंगे, तब श्रद्धालु को दोनों तरफ हरियाली का अद्भुत मनमोहक दृश्य बार–बार शिव धाम आने के लिए प्रेरित करेगा और मानसिक शांति व सुकून प्रदान करेगा।

वैसे तो आरोप–प्रत्यारोप की ओछी राजनीति की अति के चलते हमारे देश में जनहित का कोई भी कार्य करवाना आसान नहीं है, हर कार्य पर ओछी राजनीति चलती रहती है। काशी विश्वनाथ कारिडोर पर भी कुछ राजनेताओं के द्वारा ऐसा किया जा रहा है, लेकिन एक कटु सत्य यह भी है कि काशी जैसी प्राचीन नगरी में किसी भी मंदिर का जीर्णोद्धार करवाना अपने आप में एक बहुत बड़ी चुनौती थी, लेकिन भगवान शिव के आशीर्वाद से मोदी–योगी सरकार ने इस चुनौती पर विजय हासिल की है। उत्तर प्रदेश में चुनावी वर्ष होने के चलते विपक्षी दलों के राजनेता लोकार्पण के भव्य कार्यक्रम को मोदी–योगी सरकार पर धर्म विशेष के मतदाताओं को आकर्षित करने माध्यम बता रहे हैं, लेकिन उन दलों व राजनेताओं को यह भी सोचना चाहिए कि भगवान शिव ने उनको भी सत्ता रहने का अवसर प्रदान किया था, उनके पास भी काशी के शिवधाम व देश के अन्य मंदिरों के जीर्णोद्धार करवाने का समय था। लेकिन उन्होंने कहीं ना कहीं धर्म विशेष के मतदाताओं की नाराजगी से बचने के लिए ऐसा कार्य नहीं करवाया, लेकिन हमको सोचना होगा कि देश के चंद राजनेताओं की यह संकुचित सोच देश के सर्वांगीण विकास में बड़ी बाधक है।

कारीगरों पर पुष्पवर्षा, गलियों में भ्रमण

''स्वच्छता, सृजन, आत्म निर्भर भारत का संकल्प''

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 13 दिसंबर सोमवार को काशी में विश्वनाथ कारिडोर का उद्घाटन किया। गंगा में जल अर्पित किया, काशी की गलियों में चहलकदमी की, बाबा विश्वनाथ की पूजा की और उनका धाम बनाने वाले कारीगरों पर खुद पुष्प वर्षा की।

46 मिनट की स्पीच दी तो उसमें भोजपुरी भी थी और हिंदी भी। काशी का जिक्र था तो कांजीपुरम का भी। इस स्पीच में प्रधानमंत्री जी ने वेद मंत्र भी पढ़े तो लोकतंत्र का भी जिक्र किया। जनता को संकल्प दिलाए तो यह भी बताना नहीं भूले कि पूरे देश का स्वरूप धारण किए काशी में कोई भी बिना महादेव की मर्जी के नहीं आता, जो होता है, वो महादेव की मर्जी से ही होता है।

प्रधानमंत्री जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा....

की पूजा करेंगे तो मां गंगा की स्नेहिल हवा उन्हें स्नेह देगी। उन्होंने कहा कि नाव से लेकर मंदिर में आने तक बड़े–बुजुर्गों को सुविधा होगी। जेटी है, एस्केलेटर हैं, मंदिर में इतनी जगह है, जहां 60–70 हजार श्रद्धालु पूजा कर सकेंगे। 3 हजार वर्गफीट में फैला मंदिर अब 5 लाख वर्गफीट का हो गया है।

काशी के संकल्प

प्रधानमंत्री ने कहा, जब मैं बनारस आया था तो अपने से ज्यादा भरोसा बनारस के लोगों पर था। कुछ लोग बनारस के लोगों पर संदेह करते थे। कैसे होगा, होगा ही नहीं, यहां तो ऐसे ही चलता है, मोदी जैसे बहुत आकर गए। राजनीति थी, स्वार्थ था इसलिए बनारस पर आरोप लगाए जा रहे थे, लेकिन काशी तो काशी है। काशी तो अविनाशी है। काशी में [illegible] ही [illegible] है, जिनके हाथ में डमरू है, उनकी सरकार

श्रम साधकों से स्नेह मिलन, संवाद, भोज

बाबा विश्वनाथ के चरणों में हम शीश नवावत हैं। माता अन्नपूर्णा के चरणन के बार–बार वंदन करत हैं।

गंगा तरंग रमणीय जटा कलापम् गौरी निरंतर विभूषित वामभागम।

नारायण प्रिय मनंग मदाप हारम् वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम।

ई विश्वनाथ धाम तो बाबा अपने हाथें से बनैले हंवव। कोई कितना बड़ा हवै तो अपने घरै के होइहै। उ कहिए तबै कोई आ सकेला और कछु कर सकैला।

नए स्वरूप का जिक्र

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जब उद्‌बोधन दिया, तो उन्होंने बताया कि विश्वनाथ धाम का नया स्वरूप किस तरह से लोगों के लिए उपयोगी होगा। उन्होंने कहा, जब लोग बाबा

है। भगवान शंकर ने खुद कहा है कि बिना मेरी प्रसन्नता के काशी में कौन आ सकता है, कौन इसका सेवन कर सकता है। काशी में महादेव की इच्छा के बिना न कोई आता है और न ही उनकी इच्छा के बिना यहां कुछ होता है। यहां जो कुछ होता है महादेव की इच्छा से होता है। ये जो कुछ भी हुआ है, महादेव ने ही किया है।

प्रधानमंत्री बोले– मैं आज अपने हर श्रमिक भाई–बहनों का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिनका पसीना इस भव्य परिसर के निर्माण में रहा है। कोरोना के इस विपरीत काल में भी उन्होंने यहां पर काम रुकने नहीं दिया। मुझे अभी इन साथियों से मिलने का अवसर मिला। उनका आशीर्वाद लेने का सौभाग्य मिला।

काशी के चरित्र से निशाना

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, काशी के लोग एकता की याद दिला देते हैं। वारेन हेंस्टिंग्स का क्या हाल काशी के लोगों ने किया था। काशी के लोग समय–समय पर बोलते हैं कि घोड़े पर हौदा और हाथी पर जिन जान लेकर भागल बाटें हेंस्टिंग्स। आज समय का चक्र देखिए आतंक के वो पर्याय इतिहास के काले पन्नों तक सिमट कर रह गए हैं। मेरी काशी फिर से देश को अपनी भव्यता दे रही है। काशी वो है, जहां जागृति ही जीवन है। काशी वो है, जहां मृत्यु भी मंगल है। काशी वो है, जहां सत्य ही संस्कार है। जहां प्रेम ही परंपरा है।

बनारस को पूरे देश से जोड़ दिया

प्रधानमंत्री ने बनारस को सिर्फ पूर्वांचल या यूपी तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने इसे पूरे देश से जोड़ दिया। बोले– शिव शब्द का चिंतन करने वाले शिव को ही ज्ञान कहते हैं इसलिए ये काशी शिवमयी है और ज्ञानमयी है। ज्ञान, शोक, अनुसंधान काशी और भारत के लिए स्वाभाविक है। शिव ने स्वयं कहा है कि धरती के सभी क्षेत्रों में काशी मेरा ही शरीर है। यहां का हर पत्थर शंकर है इसलिए हम अपनी काशी को सजीव मानते हैं। इसी भाव से हमें अपने देश के कण–कण में मातृभाव का बोध होता है।

जिस तरह काशी अनंत है, वैसे ही उसका योगदान अनंत है। इस विकास में भारत की अनंत परंपराएं शामिल हैं। हर भाषा और वर्ग के लोग यहां आते हैं और अपना जुड़ाव महसूस करते हैं। काशी भारत की आत्मा का एक जीवंत अवतार भी है। मेरा पुराना अनुभव है कि हमारे घाट पर रहने वाले नाव चलाने वाले कई बनारसी साथी तो तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ फर्राटेदार बोलते हैं। ये भी सिर्फ संयोग नहीं है कि जब काशी ने करवट ली है कुछ नया किया है, देश का भाग्य बदला है।

विकास का जिक्र

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, विश्वनाथ धाम का लोकार्पण भारत को नई दिशा देगा, उज्ज्वल दिशा की ओर ले जाएगा। ये हमारे संकल्प का परिचायक है कि अगर सोच लिया जाए तो असंभव कुछ नहीं। हर भारतवासी की भुजाओं में वो बल है, जो कल्पनीय को साकार कर देता है। हम तप और तपस्या जानते हैं, देश के लिए दिन–रात खपना जानते हैं। गुलामी के कालखंड में भारत को जिस हीन भावना से भर दिया गया था, आज का भारत उससे बाहर निकल रहा है। भारत सोमनाथ मंदिर का सौंदर्यीकरण ही नहीं करता, समंदर में हजारों किलोमीटर ऑप्टिकल फाइबर भी बिछा रहा है। केदारनाथ का जीर्णोद्धार ही नहीं कर रहा, अपने दम पर अंतरिक्ष में भी लोगों को भेज रहा है। राम मंदिर का निर्माण ही नहीं कर रहा, देश के हर जिले में मेडिकल कॉलेज बना रहा है। विश्वनाथ का निर्माण ही नहीं कर रहा, हर गरीब के लिए पक्के घर भी बना रहा है। नए भारत में विरासत भी है और विकास भी है।

देश से मांगे 3 संकल्प

प्रधानमंत्री मोदी ने काशीवासियों के साथ–साथ पूरे देश से 3 संकल्प भी मांगे। उन्होंने कहा, मेरे लिए हर भारतवासी ईश्वर का ही अंश है। जैसे सब लोग भगवान के पास जाकर मांगते हैं, जब मैं आपको भगवान मानता हूं तो मैं आज आपसे कुछ मांगता हूं। अपने लिए नहीं, हमारे देश के लिए तीन संकल्प चाहता हूं। भूल मत जाना। बाबा की पवित्र धरती से मांग रहा हूं।

पहला– स्वच्छता

दूसरा– सृजन

तीसरा– आत्मनिर्भर भारत के लिए निरंतर प्रयास।

प्रधानमंत्री जी ने देश से कहा कि, स्वच्छता जीवनशैली होती है, अनुशासन होती है, ये अपने साथ कर्तव्यों की श्रृंखला लेकर आती है। जितना भी विकास क्यों न करें, स्वच्छता नहीं रहेगी तो आगे बढ़ पाना मुश्किल होगा। अपने प्रयास बढ़ाने होंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लोकार्पण के बाद वह गंगा आरती देखने के लिए दशाश्वमेध घाट पहुंचे। घाट के सामने मौजूद क्रूज से उन्होंने आरती और लेजर शो देखा। इस दौरान उनके साथ क्रूज परयोगी आदित्यनाथ और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा भी मौजूद थे। वह रविदास घाट से विवेकानंद क्रूज में सवार होकर दशाश्वमेध घाट पहुंचे। इससे पहले उन्होंने रविदास घाट पर संत रविदास की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। श्री मोदी ललिता घाट से अलकनंदा क्रूज के जरिए रविदास घाट पहुंचे थे।

प्रधानमंत्री ने काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का लोकार्पण शुभ मुहूर्त रेवती नक्षत्र में दोपहर 1.37 बजे से 1.57 बजे 20 मिनट तक किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अपने भाषण की शुरुआत बाबा विश्वनाथ को प्रणाम करने के साथ भोजपुरी में की। उन्होंने कहा कि बाबा विश्वनाथ के चरणों में हम शीश

नवावत हैं। माता अन्नपूर्णा के चरणन के बार–बार वंदन करत हैं।

5 लाख वर्गफीट हुआ कैंपस

प्रधानमंत्री ने कहा, गंगा उत्तरवाहिनी होकर विश्वनाथ के पांव पखारने आती हैं, वे भी बहुत प्रसन्न होंगी। विश्वनाथ धाम का पूरा होने से पहुंचना सुगम हो गया है। हमारे बुजुर्ग माता–पिता बोट से जेटी तक आएंगे, जेटी से एस्केलेटर है, वहां से मंदिर तक आएंगे। दर्शन के लिए घंटों तक का इंतजार और परेशानी अब कम होगी। पहले यहां मंदिर क्षेत्र केवल 3 हजार वर्गफीट में था, वह अब करीब 5 लाख वर्गफीट का हो गया है।

मजदूरों को श्रेय दिया, फूल बरसाए

मोदी बोले, मैं आज अपने हर श्रमिक भाई–बहनों का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिसका पसीना इस भव्य परिसर के निर्माण में रहा है। कोरोना के इस विपरीत काल में भी उन्होंने यहां पर काम रुकने नहीं दिया। मुझे अभी इन साथियों से मिलने का अवसर मिला। उनका आशीर्वाद लेने का सौभाग्य मिला। इसके पहले श्री मोदी ने मंदिर में मंत्रोच्चार के साथ पूजा–पाठ की और मंदिर के निर्माण में शामिल मजदूरों के साथ खाना खाया। उन्होंने प्रोजेक्ट में काम करने वाले मजदूरों पर फूलों की बारिश कर उन्हें सम्मानित किया और सीढ़ी पर बैठकर फोटो खिंचाई। श्री मोदी ने यहां धर्माचार्यों से भी बातचीत की ।

काशी की गलियों में पैदल घूमे

प्रधानमंत्री ने अपने दो दिन के काशी प्रवास में दो दिन के वाराणसी दौरे पर हैं। वे सुबह पौने ग्यारह बजे काशी पहुंचे। सवा ग्यारह बजे उन्होंने काल भैरव मंदिर में पूजा की। पूजा के बाद वे पैदल ही खिड़किया घाट तक गए। यहां से मोदी क्रूज में बैठकर ललिता घाट पहुंचे। ललिता घाट से गंगाजल लेकर मोदी काशी विश्वनाथ धाम पहुंचे। गंगाजल से बाबा का अभिषेक किया। वाराणसी मोदी का संसदीय क्षेत्र भी है।

800 करोड़ रुपए की लागत

काशी में प्रोजेक्ट विश्वनाथ धाम को 800 करोड़ रुपए से ज्यादा की लागत से बनाया गया है। इसमें श्रद्धालुओं की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा गया है। प्राचीन मंदिर के मूल स्वरूप को बनाए रखते हुए 5 लाख 27 हजार वर्ग फीट से ज्यादा क्षेत्र को विकसित किया गया है।

शाम को देखी गंगा आरती

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने काशी विश्वनाथ धाम के उद्घाटन के बाद बनारस रेल इंजन कारखाना के गेस्ट हाउस में दो घंटे आराम करने के बाद शाम को फिर संत रविदास घाट से नाव की सैर करते हुए दशाश्वमेध घाट पहुंचें। यहां गंगा आरती देखी। इस दौरान काशी पहुंचे मुख्यमंत्रियों के परिजन से मुलाकात की। इसके बाद वापस संत रविदास घाट आए और रात 9.15 बजे गेस्ट हाउस में विश्राम करने चले गये।

ऐसे बदला काशी

पहले तंग गलियों में स्थित जिस विश्वनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं के लिए पैर रखने तक की जगह नहीं होती थी, वहां अब सुकून के साथ श्रद्धालु समय गुजार सकेंगे। धाम का मंदिर चौक क्षेत्र अब इतना विशाल है कि यहां 2 लाख श्रद्धालु खड़े होकर दर्शन–पूजन कर सकेंगे। इसके चलते अब सावन के सोमवारों, महाशिवरात्रि के दौरान शिव भक्तों को दिक्कत नहीं होगी।

40 से ज्यादा मंदिर संरक्षित

लगभग 400 करोड़ रुपए की लागत से मंदिर के आसपास की 300 से ज्यादा बिल्डिंग को खरीदा गया। इसके बाद 5 लाख वर्ग फीट से ज्यादा जमीन में लगभग 400 करोड़ रुपए से ज्यादा की लागत से निर्माण किया गया। हालांकि निर्माण कार्य अभी जारी है। इसमें प्रमुख रूप से गंगा व्यू गैलरी, मणिकर्णिका, जलासेन और ललिता घाट से धाम आने के लिए प्रवेश द्वार और रास्ता बनाने का काम है। धाम के लिए खरीदे गए भवनों को नष्ट करने के दौरान 40 से अधिक मंदिर मिले। उन्हें विश्वनाथ धाम प्रोजेक्ट के तहत नए सिरे से संरक्षित किया गया है।

नगर कोतवाल के दर्शन

हर हर महादेव, बम भोले और बाबा विश्वनाथ की जय... प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को जब वाराणसी की गलियों में निकले तो लोगों ने इन नारों के साथ उनका स्वागत किया। एयरपोर्ट से मोदी सीधे काल भैरव मंदिर पहुंचे। यहां पूजा की और निकल पड़े बनारस की गलियों में। काफी देर तक लोगों का अभिवादन स्वीकार करने के बाद मोदी खिरकिया घाट से क्रूज में सवार होकर ललिता घाट पहुंचे और स्नान कर बाबा विश्वनाथ के दर्शन किए।

25 लाख किसानों को लाभ, बाढ़ विभीषिका से राहत : मोदी

सरयू नहर राष्ट्रीय परियोजना से 14 लाख हेक्टेयर से अधिक खेतों की सिंचाई के लिये पानी की उपलब्धता सुनिश्चित होगी तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के 6200 से अधिक गांवों के लगभग 29 लाख किसानों को इसका फायदा मिलेगा। साल 1978 में इस प्रोजेक्ट पर काम शुरू किया गया था, लेकिन Budgetary Support की निरंतरता, इंटर–डिपार्टमेंटल कार्डिनेशन और मानीटरिंग के अभाव की वजह से इसे टाला गया था। करीब चार दशक बीत जाने के बाद भी इसे पूरा नहीं किया जा सका था। किसान कल्याण, उनके सशक्तिकरण और राष्ट्रीय महत्त्व को ध्यान में रखकर बनाई जाने वाली ये परियोजना लंबे समय से टलती आ रही है। अब प्रोजेक्ट्स को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करने के प्रधानमंत्री के नजरिये की बदौलत इसपर आवश्यक ध्यान दिया गया।

2016 में दोबारा शुरू हुआ था काम

साल 2016 में इस परियोजना को प्रधानमंत्री कृषि संचयी योजना में शामिल किया गया था। सयम पर खत्म करने के लिए इस काम को दोबारा शुरू किया गया। ऐसे में नई नहरों के निर्माण के लिए नए सिरे से भूमि अधिग्रहण करने और परियोजना में गेप को भरने के लिए नए समाधान किए गए। साथ ही, पहले जो भूमि अधिग्रहण किया गया था, उससे सम्बंधित लंबित मुकदमों को निपटाया गया. नये सिरे से ध्यान देने के कारण परियोजना लगभग चार सालों में ही पूरी कर ली गई।

14 लाख हेक्टेयर से ज्यादा खेतों को सिंचाई

सरयू नहर राष्ट्रीय परियोजना के निर्माण की कुल कास्ट 9800 करोड़ रुपये से ज्यादा है। इसमें से 4600 करोड़ रुपये से ज्यादा का प्रावधान पिछले 4 सालों में किया गया है। परियोजना में पांच नदियों घाघरा, सरयू, राप्ती, बाणगंगा और रोहिणी को आपस में जोड़ने का भी प्रावधान किया गया है, ताकि क्षेत्र के लिए जल संसाधन का समुचित उपयोग सुनिश्चित हो सके।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यूपी में देश की सबसे बड़ी नहर परियोजना का शुभारंभ किया है। बलरामपुर में बनी यह सरयू नहर परियोजना 10 हजार करोड़ की लागत से पूरी हुई है। इससे पूर्वांचल के 9 जिलों के 25 लाख से ज्यादा किसानों को फायदा मिलेगा। शुभारंभ कार्यक्रम में पीएम के साथ सीएम योगी आदित्यनाथ और राज्यपाल आनंदीबेन पटेल भी मौजूद रहीं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के बलरामपुर में सरयू नहर नेशनल प्रोजेक्ट का लोकार्पण किया। हसुआडोल गांव में लोगों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि जब भी हम अयोध्या में राम मंदिर की बात करेंगे, बलरामपुर रियासत के महाराजा पटेश्वरी प्रसाद सिंह के योगदान का उल्लेख भी किया जाएगा। बलरामपुर के लोग पारखी हैं। उन्होंने नानाजी देशमुख और अटल बिहारी वाजपेयी के रूप में 2 भारत रत्न दिए हैं।

पीएम ने चीफ आफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि जनरल रावत जहां रहेंगे, वहां से देश को आगे बढ़ते देखेंगे। उन्होंने कहा कि

बलरामपुर सरयू नहर परियोजना

एक सैनिक सिर्फ सेना में नौकरी करते समय तक सैनिक नहीं रहता। बल्कि, उसका पूरा जीवन एक योद्धा जैसा होता है। वह हर पल अनुशासन और देश के गौरव के लिए समर्पित होता है।

प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि 8 दिसंबर को हेलिकॉप्टर दुर्घटना में जान गंवाने वाले सभी वीर योद्धाओं के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं। भारत के पहले ब्रै जनरल बिपिन रावत का निधन, प्रत्येक देशभक्त के लिए एक क्षति है। वह बहादुर थे और उन्होंने देश के सशस्त्र बलों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कड़ी मेहनत की, देश इसका गवाह है।

ग्रुप कैप्टन के लिए प्रार्थना कर रहा देश

उन्होंने आगे कहा कि ग्रुप कैप्टन वरुण सिंह की जान बचाने के लिए डॉक्टर मेहनत कर रहे हैं। मैं मां पाटेश्वरी से उनके स्वस्थ्य होने की कामना करता हूं। देश इस दुख की घड़ी में उनके परिवार के साथ खड़ा है। जिन बहादुर सैनिकों ने हादसे में जान गंवाई, उनके परिवार के साथ भी भारतवासियों की दुआएं साथ हैं।

भारत रुकने वाला नहीं है

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत शोक में है, लेकिन दर्द में होते हुए भी हम अपनी रफ्तार नहीं रोकते, न ही अपने विकास को। भारत रुकने वाला नहीं है। हम भारतीय मिलकर कड़ी मेहनत करेंगे और देश के अंदर और बाहर हर चुनौती का सामना करेंगे। हम भारत को ज्यादा शक्तिशाली और ज्यादा समृद्ध बनाएंगे।

प्रधानमंत्री से पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पिछले 4 दशक से सरयू नहर राष्ट्रीय परियोजना बजट, अंतर–विभागीय समन्वय के अभाव में रुकी हुई थी। अब प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में यह परियोजना राज्य की खेती किसानी को समृद्ध करने के लिए तैयार है। प्रधानमंत्री ने किसानों से संबंधित राष्ट्रीय महत्त्व की परियोजनाओं को प्राथमिकता से पूरा किया है।

25 लाख किसानों को मिलेगा फायदा

सरयू नहर परियोजना 10 हजार करोड़ की लागत से बनी है। इससे पूर्वांचल के 9 जिलों के 25 लाख से ज्यादा किसानों को फायदा मिलेगा। परियोजना को पूरा होने में 4 दशक से ज्यादा लग गए। 1978 में इंदिरा गांधी के कार्यकाल में इसका काम बहराइच जिले से शुरू हुआ। तब इसके लिए बजट 79 करोड़ रुपए रखा गया था। 1982 में बलरामपुर सहित 9 जिलों को इस परियोजना से जोड़ा गया। सरकारें बदलती गईं, लेकिन 2017 तक केवल 52 प्रतिशत ही काम हो सका। योगी सरकार के साढ़े चार साल में बाकी बचे 48 प्रतिशत काम को पूरा किया गया।

सरयू नहर परियोजना को पूरा होने में 4 दशक से ज्यादा लग गए। 1978 में इंदिरा गांधी के कार्यकाल में इसका काम बहराइच जिले से शुरू हुआ। तब इसके लिए बजट 79 करोड़ रुपए रखा गया था। 1982 में बलरामपुर सहित 9 जिलों को इस परियोजना से जोड़ा गया। सरकारें बदलती गईं, लेकिन 2017 तक केवल 52 प्रतिशत ही काम हो सका। योगी सरकार के साढ़े चार साल में बाकी बचे 48 प्रतिशत काम को पूरा किया गया।

ऐसी है सरयू नहर परियोजना

- 6 हजार 590 किलोमीटर नहरों का जाल बिछाया गया।
- ये सभी नहरें गांवों से कनेक्ट कर दी गई हैं।
- पूर्वांचल के 9 जिलों की पांच नदियों को जोड़ती हैं।
- घाघरा से सरयू, सरयू से राप्ती, राप्ती को बाणगंगा और बाणगंगा से रोहिणी नदी को जोड़ा गया।
- पांचों नदियों से पानी लेकर सिंचाई के लिए नहर में छोड़ा जाएगा।
- 2012 में इसे राष्ट्रीय परियोजना घोषित किया गया।
- नहर का पहला छोर घाघरा और सरयू नदी पर बने बहराइच के सरयू बैराज पर है।

9 जिलों के किसानों को फायदा

बहराइच, सिद्धार्थनगर, बस्ती, संतकबीर नगर, गोरखपुर, श्रावस्ती, गोंडा, बलरामपुर, महराजगंज।

ऐसे मिलेगा फायदा

- इस परियोजना से 14 लाख हेक्टेयर जमीन पर सिंचाई हो सकेगी।
- 9 जिलों के 6,200 गांवों के 25 लाख से ज्यादा किसानों को लाभ मिलेगा।
- परियोजना की लंबाई 318 किलोमीटर है, जबकि 6 हजार 590 किलोमीटर में इसके लिंकेज हैं।
- नदियों को आपस में जोड़ने से बाढ़ जैसी विभीषिका से बचाया जा सकेगा।

अहिल्या बाई होल्कर

श्री गोविन्द शर्मा

1735 में बाजीराव पेशवा की माँ राधाबाई तीर्थयात्रा पर काशी आईं। उनके लौटने के पश्चात 'काशी के कलंक' को मिटा देने के संकल्प के साथ पेशवा बाज़ीराव के सेनापति मल्हार राव होल्कर 1742 में गंगा के मैदानों में आगे बढ़ रहे थे। उस समय पेशवाओं की विजय पताका चहुँओर लहरा रही थी। काशी विश्वनाथ के मन्दिर की मुक्ति सुनिश्चित थी। 27 जून 1742 को मल्हार राव होल्कर जौनपुर तक आ चुके थे। उस समय काशी के कुछ तथाकथित प्रतिष्ठित लोग उनके पास पहुँच गए और कहा कि "आप तो मस्जिद को तोड़ देंगे लेकिन आप के चले जाने के बाद मुसलमानों से हमारी रक्षा कौन करेगा।" इस तरह बाबा की मुक्ति के बजाय स्वयं की सुरक्षा को ऊपर रखने वाले काशी के कुछ धूर्तों ने उन्हें वापस लौटा दिया।

बाबा विश्वनाथ के मन्दिर की पुनर्स्थापना होती होती रह गई। मल्हार राव होल्कर लौट तो गए लेकिन उनके मन में कसक बनी रही। वही कसक और पीड़ा श्रीमन्त मल्हार राव होल्कर से उनकी पुत्रवधू अहिल्याबाई होल्कर को स्थानान्तरित हुई।

अहिल्याबाई के लिए उनके ससुर मल्हार राव होल्कर ही प्रेरणा थे क्योंकि अहिल्याबाई का जन्म किसी राजघराने में नहीं हुआ था। उनके पिता एक गाँव के सरपंच मात्र थे। एक दिन कुमारिका अहिल्या मंदिर में सेवा कर रही थी। भजन गाती और गरीबों को भोजन कराती अहिल्याबाई के उच्च कोटि के संस्कारों को मालवा के अधिपति मल्हारराव होल्कर ने देखा। उसी समय उन्होंने तय कर लिया कि अहल्य ही उनके बेटे खाण्डेराव की पत्नी बनेंगी। वर्ष 1733 में अहिल्याबाई का विवाह खाण्डेराव होल्कर से हो गया। अहिल्याबाई की आयु 8 वर्ष थी। खाण्डेराव अहिल्याबाई से 2 साल बड़े थे।

सन 1754 में एक युद्ध के दौरान खाण्डेराव वीरगति को प्राप्त हो गए। अहिल्याबाई के जीवन में अंधेरा छा गया। अहिल्याबाई सती हो जाना चाहती थी किन्तु मल्हार राव ने अहिल्याबाई को न केवल सती होने से रोका बल्कि मानसिक तौर पर उन्हें मजबूत भी किया। शासन सञ्चालन के सूत्रों का प्रशिक्षण देकर मालवा का शासन सम्भालने के लिए तैयार किया।

1766 में मल्हार राव के मृत्योपरांत अहिल्याबाई होल्कर ने मालवा का शासन अपने हाथों में ले लिया।

काशी विश्वनाथ का मन्दिर महारानी अहिल्याबाई होल्कर की अमूल्य कीर्ति है। काशी के लिए अहिल्याबाई होल्कर का क्या योगदान है। इसे इतिहास का अवलोकन किए बिना नहीं समझा जा सकता।

आनन्दवन काशी को पहला आघात 1194 में लगा था। जब मोहम्मद गोरी के सिपहसलार कुतुबुद्दीन ऐबक ने

काशी विश्वनाथ समेत यहाँ के प्रमुख मंदिरों को तोड़ दिया। बाद के कालखण्डों में हुसैन शाह सिरकी (1447–1458) और सिकंदर लोधी (1489–1517) ने काशी विश्वनाथ और काशी के अन्य प्रमुख मंदिरों को तोड़ा। बार–बार काशी पर इस्लामिक हमलावर आघात करते रहे लेकिन शिवनगरी काशी पुनः पुनः हिन्दुत्व के अमृततत्व से सँवरती रही।

अकबर के कालखण्ड में काशी के जगतप्रसिद्ध धर्मगुरु पण्डित नारायण भट्ट की प्रेरणा से राजा टोडरमल ने 1585 में पुनः काशी विश्वनाथ के भव्य मंदिर का निर्माण कराया। हालाँकि इसमें अकबर का कोई योगदान नहीं था। यह बात इसलिए लिखनी पड़ रही है कि सुब्रह्मण्यम स्वामी ने अपने एक लेख में लिखा था और अभी फिर से लिखा है कि विश्वनाथ मंदिर के लिए अकबर ने धन दिया था।

यह सच नहीं है। इसी मन्दिर को औरंगज़ेब के 18 अप्रेल 1669 के फ़रमान से तोड़ दिया गया। मन्दिर के ध्वस्त अवशेषों से ही उसी स्थान पर वर्तमान मस्जिद खड़ी कर दी गयी। पीछे की तरफ मन्दिर का कुछ हिस्सा छोड़ दिया गया ताकि इसे देख कर ग्लानि से हिन्दु रोते रहें।

काशी विश्वनाथ का मन्दिर ध्वस्त कर दिया गया था लेकिन 1669 से ही भग्नावशेष एवं स्थान की पूजा चलती रही। मुक्ति के विभिन्न प्रयास भी चलते रहे।

मंदिर का पुनर्निर्माण और भगवान की प्राण–प्रतिष्ठा करना समस्त राजा महाराजाओं और संतों के सामने प्रश्नचिह्न बना हुआ था। काशी के तीर्थपुरोहितों की बहियों से ऐसा ज्ञात होता है कि 1676 ई. में रीवा नरेश महाराजा भावसिंह तथा बीकानेर के राजकुमार सुजानसिंह काशी आए थे। इन दोनों राजाओं ने मंदिर निर्माण की पहल तो की लेकिन सफल नहीं हो पाये। उन्होंने विश्वेश्वर के निकट ही शिवलिंगों को स्थापित अवश्य किया।

इसी क्रम में मराठों के मंत्री नाना फड़नवीस के प्रयास भी असफल रहे। 1750 में जयपुर के महाराजा सवाई माधो सिंह ने परिसर की पूरी ज़मीन ख़रीद कर विश्वनाथ मंदिर के निर्माण की योजना बनायी जो कि परवान नहीं चढ़ सकी। 7 अगस्त 1770 को महादजी सिंधिया ने दिल्ली के बादशाह शाह आलम से मंदिर तोड़ने की क्षतिपूर्ति वसूल करने का आदेश जारी करा लिया परंतु तब तक काशी पर ईस्ट इंडिया कंपनी का राज हो गया था।यह योजना भी पूरी नहीं हो पायी।

इतने असफल प्रयासों के पश्चात अहिल्याबाई होलकर को सफलता प्राप्त हुई। अहिल्याबाई ने वह करके दिखा दिया जिसे समस्त हिन्दू राजा 111 वर्षों में नहीं कर सके थे। अहिल्याबाई के प्रयासों से 1777 से प्रारंभ होकर 1781 ई. में वर्तमान मंदिर का निर्माण मूल स्थान से दक्षिण की दिशा में थोड़ा हटकर भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी को पूर्ण हुआ।

महारानी अहिल्याबाई ने काशी विश्वनाथ मंदिर की स्थापना के साथ–साथ जो भी धार्मिक स्थल भग्नावस्था में थे, उन सभी को शास्त्रीय मर्यादाओं के साथ पुर्नस्थापित करवाया। वहाँ पूजा–पाठ नित्य होता रहे, इसकी व्यवस्था भी राजकीय कोष से करवायी।

किन्तु काशी ने उस समय भी महारानी का साथ नहीं दिया था। शिवलिंग की प्रतिष्ठा के लिए महारानी को माहेश्वर से पण्डितों बुलवाना पड़ा था।

मन्दिर के लिए नित्य पुजारी को लेकर भी समस्या आयी। काशी का कोई ब्राह्मण पुजारी के पद पर कार्य करने को तैयार नहीं था। इसलिए काशी विश्वनाथ का पहला पुजारी तारापुर के एक भूमिहार ब्राह्मण को बनाया गया। ये प्रमाण आज भी इन्दौर के अभिलेखागार में सुरक्षित हैं।

294 वर्षों के बाद नरेन्द्र मोदी ने अहिल्याबाईके अधूरे कार्यों को आगे बढ़ा कर उन्हें सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है। नए परिसर में मातोश्री की प्रतिमा स्थापित कर उनकी कीर्ति को सदैव के लिए अक्षय कर दिया है। तीन हज़ार वर्गफीट में सिमटा मन्दिर आज पाँच लाख वर्ग फ़ीट के भव्य परिसर में विस्तार ले चुका है। काशी की छाती पर खड़ा हुआ 'कलंक' एक कोने में सिमट चुका है। विश्व के नाथ को गलियों में सिमटा देख कर हृदय में ग्लानि लिए सदियों से रोता हिन्दू आज धाम के विस्तारीकरण से प्रफुल्लित है।गजवा–ए–हिंद का सपना देखने वाले मुग़लों के वंशजों को भी अब विश्वनाथ धाम के दरवाज़े से ही प्रवेश लेना होगा। नरेन्द्र मोदी अपना कार्य कर चुके। अब बचे हुए कार्य को पूरा करने की ज़िम्मेदारी हिन्दू समाज के कन्धों पर है।

भाजपा की जनविश्वास यात्रा

जन-मन-गन के साथ जनविश्वास यात्राः बंसल

उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनावों को लेकर सरगर्मियां और बयानबाजियां तेज होती जा रही हैं। सत्तारूढ भारतीय जनता पार्टी 2014, 2017 और 2019 की सफलता को दोहराने के लिये अपनी तैयारी क अंतिम चरण में हैं जब कि दूसरे दलों को अभी मतदाताओं के बीच आकार लेना बाकी है। भारतीय जनता पार्टी ने भी दिन प्रतिदिन की समीक्षा करते हुए अपने चुनाव अभियान को तेज धार देने का काम प्रारम्भ किया है।

भाजपा की पहली यात्रा सहारनपुर में विदुरकुटी से आरंभ हो रही है। जबकि दूसरी यात्रा मथुरा के गोवर्द्धन से निकलेगी। भाजपा की तीसरी जनविवास यात्रा झांसी के लक्ष्मीबाई मैदान से आकार लेगी जबकि भाजपा की चर्तुथ यात्रा अंबेडकरनगर के अकबरपुर से निकल रही है। भाजपा की पांचवी जनविश्वास यात्रा बलिया के भृगुधाम से निकलेगी। वहीं गाजीपुर से छठवीं जनविश्वास यात्रा का शुभारंभ होगा। सभी छह यात्राएं 19 दिसंबर से आरंभ हो रही हैं जिसको केन्द्रिय नेता रवाना करने वाले हैं।

2017 में जब विधानसभा चुनाव हुए उस समय केंद्र में प्रधनमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार थी और प्रदेश में समाजवादी पार्टी, बहुजन समाजवादी सरकारों के खिलाफ जनमानस में आक्रोश था। मतदाताओं ने तब भारतीय जनता पार्टी को जनादेश दिया था और 325 सीटें देकर भाजपा के विकास के बादे को बल दिया था। अब भाजपा सरकार का कार्यकाल पूरा हो रहा है और संगठन अपने सरकार के कार्यों के दमपर दूसरे कार्यकाल के लिए जनता से आशीर्वाद मांगने निकल पड़ी है। भाजपा का विधानसभा चुनावों के लिये टैग लाइन है

सोच ईमानदार काम दमदार।

फिर एक बार भाजपा सरकार।

अपने प्रदर्शन के दम पर भारतीय जनता पार्टी चुनावी बिगुल बजने के पहले छह यात्राएं निकालने जा रही है। जिसके माध्यम से केंद्र और प्रदेश सरकार की विकास गाथा सभी 403 विधानासभा क्षेत्रों में पहुचेगी। इन यात्राओं का समापन पिछली बार की तरह लखनऊ में होगा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक विशाल कार्यकर्त्ता जनसभा को संबोधित करेंगे। यात्राओं के कार्यक्रम तय करने के लिए आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा था कि इन यात्राओं के माध्यम से भाजपा केंद्र और प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को जनता के बीच लेकर आयेगी। 2017 के चुनाव से पहले जब यात्रा निकाली थी तब हमने पूर्ववर्ती सरकार की खामियों को जनता के बीच उजागर किया जबकि इस बार हम अपनी उपलब्ध्यिं बताने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए जनता के बीच जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से चली आ रही परिवारवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद मत और मजहब के दायरे में कैद होकर चली

भाजपा की जनविश्वास यात्रा

आ रही राजनीति को प्रधानमंत्री ने बदला है।

अयोध्या, मथुरा और काशी में चल रहे विकास कार्यक्रमों तथा कोरोना काल में जिस प्रकार से बीजेपी व स्वयंसेवकों ने सेवा का कार्य किया उससे प्रदेश की जनता एक बार फिर भाजपा को तीन सौ सीटों के साथ बहुमत देकर अपना आशीर्वाद देगी। यह बात बिल्कुल सही है कि विगत पांच वर्षो में सरकार ने नये भारत की स्थापना के लिए जिस अभियान को आगे बढ़ाया है आज वह प्रत्येक नागरिक की जुबान पर सुनाई देता है।

एक समय था जब प्रदेश के विरोधी दल भारतीय जनता पार्टी से पूछा करते थे कि "राम लला हम आयेंगे, मंदिर कब बनायेंगे?" यह सवाल उठाने वाले आज सभी लोग अयोध्या जाकर प्रभु श्रीराम के चरणों में अपना शीश नवाकर चुनाव प्रचार का श्रीगणेश कर रहे हैं। यह हिंदुत्व की प्रदेश में एक बड़ी विजय है।

आज अयोध्या,मथुरा, काशी सहित हिंदू समाज के सभी मंदिरों व तीर्थस्थलों का विकास हो रहा है। दिसम्बर माह के दूसरे पखवारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा काशी विश्वनाथ कारिडोर का उदघाटन हो गया हैं। काशी में बीजेपी का महामंथन भी होने जा रहा है। काशी में होने जा रहा समारोह बहुत ही भव्य रहा जिसका सीधा प्रसारण भी कियागया।

भाजपा सरकार ने मथुरा वृंदावन का भी विकास करने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी है। मथुरा वृंदावन को नगर निगम घोषित करने के बाद वहां पर मांस मदिरा की बिक्री को पूरी तरह से प्रतिबंधित किया गया। अवैध बूचड़खाने बंद किये गये। अयोध्या से चित्रकूट तक भव्य दीपोत्सव मनाकर भगवान राम से जुड़े सभी तीर्थस्थलों को अंतरराष्ट्रीय फलक पर स्थापित किया जा रहा है। योगी सरकार में ही दिव्य और भव्य कुंभ का आयोजन हुआ। प्रदेश की जनता को पता है कि प्रदेश में योगी सरकार ही सनातन संस्कृति की रक्षा करने में समर्थ है।

जबकि राजनैतिक विश्लेषकों के अनुसार, कृषि कानूनों की वापसी के बाद चुनाव आते आते किसान आंदोलन पूरी तरह से समाप्त हो गया है और उसका कोई असर भी नहीं है। सरकार व किसानां के बीच दूरियां हैं नहीं। पिछली सपा ,बसपा की सरकारां में हिंदू धर्म व सनातन संस्कृति का कितना अपमान होता था यह सभी ने देखा है। कोई भी सेकुलर मुख्यमंत्री अयोध्या, मथुरा व काशी नहीं जाता था। आज प्रदेश का विकास हो रहा है। यही कारण है कि बीजेपी एक बार फिर यात्राओं से जनता का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए निकल पड़ी है और पार्टी को पूरा विष्वास है कि वह जनप्रिय योजनाओं के माध्यम से सीटों का लक्ष्य हासिल कर लेगी। त्रिपुरा और गुजरात के वाणी नगर निकायों के चुनाव परिणाम जिस प्रकार से आये हैं उससे भी भाजपा में एक नया उत्साह जगा है।

कमल पुष्प

सहयोग, समर्पण और संस्कार

भाजपा/जनसंघ कार्यकर्ताओं की कहानी #SevaSamarpan साझा करना चाहते हैं?
narendramodi.in

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं के सम्मान में एक अनूठे मॉड्यूल का अनावरण

गौरवशाली अतीत की नींव पर ही एक उज्ज्वल भविष्य का निर्माण होता है। भारतीय जनता पार्टी एक ऐसा संगठन है जो हमेशा हमारे देश की जड़ों से जुड़ा रहा है। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम कौन हैं और हमारा इतिहास क्या है। यही सिद्धांत हमारी अपनी पार्टी के प्रति हमारे दृष्टिकोण पर भी लागू होता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में नमो ऐप के एक नए और अनोखे मॉड्यूल का उद्घाटन किया। ये मॉड्यूल है 'कमल पुष्प'।

कमल पुष्प एक नेक पहल है, जहां लोग भारतीय जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी के उन कार्यकर्ताओं की जीवनी से जुड़े लेख अपलोड कर सकते हैं, जिन्होंने सेवा सहयोग और संस्कार की भावना से लोगों के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। प्रधानमंत्रीजी ने भारतीय जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी की पीढ़ियों के बलिदान के बारे में एक भावनात्मक भाषण दिया, जिनके अथक प्रयासों से दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी का निर्माण हुआ है। उन्होंने लोगों को अतीत के प्रेरक कार्यकर्ताओं के जीवन और समय का दस्तावेजीकरण करने के लिए कमल पुष्प मॉड्यूल का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया।

दरअसल, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने तो यहां तक कह दिया कि यह नमो ऐप का सबसे अहम हिस्सा है और वो चाहते हैं कि हैं कि हर भाजपा कार्यकर्ता इसके लिए समय निकाले और उन कार्यकर्ताओं के प्रेरक जीवनियों को संग्रहित करे। प्रधानमंत्रीजी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी एक ऐसी पार्टी है जो कैडर और परंपरा पर चलती है, न कि वंश या परिवार पर इसलिए आज के कार्यकर्ताओं के लिए पुराने कार्यकर्ताओं की कहानियों से जुड़ना बेहद जरूरी है। कमल पुष्प टेक्नोलॉजी और ट्रेडिशन का एक फ्यूजन (मिश्रण) है, जहां एक मोबाइल ऐप जैसी नवीनतम तकनीक का उपयोग करके अतीत का दस्तावेजीकरण किया जा रहा है। कार्यकर्ता इस मॉड्यूल में फोटो, वीडियो, अखबार की कटिंग, लिंक अपलोड कर सकते हैं और यहां तक कि लिख भी सकते हैं। पार्टी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए दिशा–निर्देशों का पालन करते हुए एक व्यापक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम शुरू किया है, जो राष्ट्र निर्माण के लिए खुद को समर्पित कर देने वाले कार्यकर्ताओं की पीढ़ियों की निस्वार्थ सेवा को संग्रहित करने, संगठित करने और प्रसारित करने के लिए है।

15 नवंबर जनजातीय गौरव दिवस के रूप में घोषित

यह दिन वीर आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति को समर्पित है, ताकि आने वाली पीढ़ियां देश के प्रति उनके बलिदानों के बारे में जान सकें

विगत 10 नवंबर को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में घोषित करने को मंजूरी दे दी। यह दिन वीर आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति को समर्पित है, ताकि आने वाली पीढ़ियां देश के प्रति उनके बलिदानों के बारे में जान सकें। संथाल, तामार, कोल, भील, खासी और मिज़ो जैसे कई जनजातीय समुदायों द्वारा विभिन्न आंदोलनों के जरिए भारत के स्वतंत्रता संग्राम को मजबूत किया गया था। जनजातीय समुदायों के क्रांतिकारी आंदोलनों और संघर्षों को उनके अपार साहस एवं सर्वोच्च बलिदान की वजह से जाना जाता है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ आदिवासी आंदोलनों को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा गया और इसने पूरे देश में भारतीयों को प्रेरित किया। हालांकि, देश के ज्यादातर लोग इन आदिवासी नायकों को लेकर ज्यादा जागरूक नहीं है। वर्ष 2016 के स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के भाषण के अनुरूप भारत सरकार ने देश भर में 10 जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालयों को मंजूरी दी है।

उल्लेखनीय है कि 15 नवंबर को श्री बिरसा मुंडा की जयंती होती है, जिनकी देश भर के आदिवासी समुदायों द्वारा भगवान के रूप में पूजा की जाती है। बिरसा मुंडा ने ब्रिटिश औपनिवेशिक व्यवस्था की शोषक प्रणाली के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी और 'उलगुलान' (क्रांति) का आह्वान करते हुए ब्रिटिश दमन के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व किया। मंत्रिमंडल की उपर्युक्त घोषणा आदिवासी समुदायों के गौरवशाली इतिहास और सांस्कृतिक विरासत को स्वीकृति प्रदान करती है। यह जनजातीय गौरव दिवस हर साल मनाया जाएगा और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और वीरता, आतिथ्य और राष्ट्रीय गौरव के भारतीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए आदिवासियों के प्रयासों को मान्यता देगा।

सिद्धांत और नीतियां

पं. दीनदयाल उपाध्याय

जनवरी, 1965 में विजयवाड़ा में जनसंघ के बारहवें सार्वदेशिक अधिवेशन में स्वीकृत दस्तावेज

एक जन

भारतभूमि पर निवास करनेवाला तथा उसके प्रति ममता रखनेवाला विशाल मानव समुदाय एक जन है। अनेक विविधताओं के होते हुए भी उसमें मूलभूत एकता है। विविधताएं विकृति अथवा विघटन की सूचक नहीं, उसके स्वाभाविक विकास का परिणाम एवं सांस्कृतिक समृद्धि की परिचायक हैं। भारतीय जन की एकता की रक्षा करने और उसे बढ़ाने के लिए प्रयत्न करने होंगे। परस्पर आत्मीयता और समानता के भाव जन–एकता के लिए आवश्यक है। इन भावों को विद्यालक रीतियों तथा व्यवस्थाओं को समाप्त करना होगा। ऊंच–नीच तथा छुआछूत को मिटाने के लिए प्रशासनिक और वैधानिक ही नहीं अपितु सुधारवादी एवं आंदोलनात्मक कार्यक्रम भी आयोजित करने होंगे। जाति और वर्ग के आधार पर समाज में प्रतिष्ठा की कल्पना और उस आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। सार्वजनिक मंदिरों तथा उपासनागृहों में सबको बिना किसी भेदभाव के दर्शन का अधिकार है।

सदियों से अभिशप्त, शिक्षा तथा संस्कार की दृष्टि से पिछड़े और आर्थिक रूप से अभावग्रस्त वर्गों को आगे लाने के लिए विशेष सुविधा देनी होगी। बिना उसके उनके लिए सबके साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति की राह पर चलना संभव नहीं होगा। किंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि पिछड़ेपन में लोगों का निहित स्वार्थ न बन जाए तथा जातिगत भेद मिटने के स्थान पर और रूढ़ न हो जाए।

भारत की राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा को जनसंघ सर्वोपरि प्राथमिकता देता है। राष्ट्रीय निष्ठाओं को बलवती बनाने के भावात्मक प्रयत्नों से ही राष्ट्रीय एकता को पुष्ट किया जा सकता है

महिलाओं की सामाजिक, शैक्षणिक तथा आर्थिक अयोग्यताओं को दूर करने के लिए विशेष प्रयास हों, जिससे वे घर, समाज तथा राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का भली–भांति निर्वाह कर सकें। जनजीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं को समान अवसर मिले। परदा, दहेज, बाल–विवाह, विषम–विवाह आदि कुरीतियों को समाप्त करने के लिए सुधारवादी कार्यक्रम अपनाने होंगे।

मातृत्व की प्रतिष्ठा भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा है। मातृ–कल्याण के कार्यक्रम सामाजिक सुरक्षा के महत्त्वपूर्ण अंग होने चाहिए। वेतन और भृति में स्त्री और पुरुष दोनों के समान स्तर रखे जाएं।

भारत के सभी जनों के विवाह, उत्तराधिकार, दत्तक विधान आदि का नियमन करने के लिए एक ही व्यवहार विधि होनी चाहिए।

एक संस्कृति

एक भूमि के ऊपर एक जन के रूप में जीवित भारतीय समाज ने आसेतु हिमाचल तक जिस संस्कृति का विकास किया है, वह एक है। भारत जैसे विशाल देश में यह स्वाभाविक है कि विभिन्न प्रादेशिक, स्थानीय अथवा जातिगत जीवन पद्धतियों का विकास हो। भारतीय संस्कृति में उन सबका समन्वय हुआ है। यह कभी वाद या पंथ–विशेष से बंधी नहीं रही। परंतु वे सभी भारतीय राष्ट्र के विशाल कुटुंब के अंग रहे हैं और भारतीय संस्कृति के विकास में उन सबने भाग लिया है। इसकी धारा वैदिक काल से अब तक अविच्छिन्न रूप में प्रवाहित चली आती है। समय–समय पर विभिन्न जातियों, पंथों और संस्कृतियों के संपर्क में आने पर इसने उनको इस रूप में आत्मसात् कर लिया कि वे इसके मूल प्रवाह के साथ अभिन्न हो गईं। यह भारतीय संस्कृति भारत के समान एक और अखंड है। मिली–जुली संस्कृति की चर्चा तर्क विरुद्ध ही नहीं, प्रत्युत भयावह भी है, क्योंकि वह राष्ट्रीय एकता को क्षीण कर विघटनात्मक प्रवृत्तियों को पुष्ट करती है।

एक राष्ट्र

भारत एक प्राचीन राष्ट्र है। स्वतंत्रता प्राप्ति से इसके चिरकालीन इतिहास में एक नवीन अध्याय आरंभ हुआ है, किसी नए राष्ट्र का जन्म नहीं। स्वभावतः भारतीय राष्ट्रवाद का आधार संपूर्ण भारत एवं इसकी सनातन संस्कृति के प्रति निष्ठा ही हो सकता है।

भारत की राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा को जनसंघ सर्वोपरि प्राथमिकता देता है। राष्ट्रीय निष्ठाओं को बलवती बनाने के भावात्मक प्रयत्नों से ही राष्ट्रीय एकता को पुष्ट किया जा सकता है तथा विघटन और विच्छेद की प्रवृत्तियों से रोका जा सकता है। प्रत्येक को उपासना पद्धति की पूर्ण स्वतंत्रता देते हुए भी भारतीय जनसंघ मजहब को राजनीति के साथ मिलाने अथवा सांप्रदायिक आधार पर विशेष अधिकारों की मांग करने की प्रवृत्ति का, जो

राष्ट्रीय एकात्मता में बाधक है, विरोधी है और उसे किसी प्रकार का प्रश्रय नहीं दे सकता।

अल्पमतों के प्रति सहिष्णुता एवं पूर्ण भेदभावरहित व्यवहार राष्ट्रीयता और प्रजातंत्र के अनिवार्य अंग हैं। भारतीय जनसंघ सभी प्रकार के अल्पमतों को इस बात की आश्वस्ति देता है, किंतु मजहब या अन्य आधार पर भारतीय जन को बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक वर्गों में बांटना और उसे देश की राजनीतिक, सामाजिक अथवा आर्थिक नीतियों का आधार बनाना अतर्कसंगत तथा राष्ट्रीयता को शुद्ध परिकल्पना के अज्ञान का परिचायक है। राजनीतिक तथा प्रशासन में इस प्रकार की भ्रांत धारणाओं पर आधारित वर्गीकरण के लिए कोई स्थान नहीं है।

पाकिस्तान में रहनेवाली जनता मूलतः भारतीय राष्ट्र का अंग रही है। मुसलिम लीग द्वारा द्विराष्ट्रवाद के सिद्धांत के प्रतिपादन तथा पाकिस्तान द्वारा इस्लामी राज्य को घोषणा से वहां के गैर–मुसलिम जन विधानतः दूसरे दर्जे के नागरिक बना दिए गए हैं। अन्याय और उत्पीड़न का शिकार बनकर वे भारत आने को विवश हुए हैं। भारतीय राज्य का यह दायित्व है कि वह इन बंधुओं को पाकिस्तान में समान अधिकार तथा सुरक्षा और सम्मानपूर्वक जीवनयापन की सुविधाएं दिलाने के लिए प्रयत्न करे अथवा उन्हें योजनापूर्वक भारत लाने, उनका पुनर्वास करने तथा क्षतिपूर्ति देने की व्यवस्था करे।

जब तक पाकिस्तान का अस्तित्व भारत के प्रति शत्रुभावापन्न हुए एक पृथक् इस्लामी राज्य के रूप में विद्यमान है, तब तक भारत के मुसलमानों की स्थिति नाजुक है। शासन को इस बात का विशेष प्रयत्न करना होगा कि पाकिस्तानी प्रवृत्ति को जन्म देनेवाली ऐतिहासिक प्रक्रिया बदली जाए और ऐसे कोई कारण न रहें, जिससे पाकिस्तान भारत के इन नागरिकों की निष्ठा डिगाने में सफल हो सके।

भारत स्थित ईसाई एवं अन्य मतावलंबी मिशनों को विदेशी प्रभाव एवं नियंत्रण से मुक्त करना होगा, जिससे वे विदेशी शक्तियों के हाथों के खिलौने न बन सकें।

शासन व्यवस्था

एक देश, एक जन और एक संस्कृति के आधार पर एकात्मता के लिए पोषक और उसकी अभिव्यक्ति का सफल उपकरण एकात्म राज्य संविधान ही हो सकता है। संघात्मक संविधान की कल्पना राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधक है।

भारत की राज्य व्यवस्था तथा लोकजीवन के विकास में जनपदों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। अतः वर्तमान प्रदेशों का ऐतिहासिक एवं लोक व्यवहार के आधार पर जनपदों में परिसीमन होना चाहिए। वहां निर्वाचित जनपद सभाओं को शासन के अधिकार हों। जनपदों के अंतर्गत जिले, विकासखंड तथा पंचायतें बनाई जाएं। संपूर्ण देश के लिए प्रविधान बनाने का अधिकार संसद को हो। जनपद सभाओं को अपनी क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुसार उपविधियों के निर्माण का तथा विधान–विशेष के लिए संसद् को संस्तुति करने का अधिकार हो। संवैधानिक राज्यपालों के स्थान पर विभिन्न जनपदों के कार्यों को समन्वित करने के लिए प्रदेशीय अथवा क्षेत्रीय आधार पर प्रशासक युक्त हो।

विभिन्न निकायों के बीच शक्ति एवं साधन स्रोतों का इस प्रकार विभाजन किया जाए कि प्रत्येक आत्मनिर्भर होकर उत्तरदायी स्वायत्तता का उपभोग कर सके।

प्रशासन

प्रशासन राज्य का इतना महत्त्वपूर्ण अंग है कि सामान्य जन उसी को राज्य समझकर चलते हैं। प्रशासन का सुदक्ष, सक्षम, शुचितापूर्ण, जन–भावनाओं तथा जन–आवश्यकताओं के प्रति सहानुभूतिपूर्वक जागरूक, उत्तरदायी, अनुशासित, कर्तव्यदक्ष एवं आत्मसम्मानपूर्ण होना नितांत आवश्यक है। साथ ही भृत्यवर्ग में अपनी सेवाओं और परिलाभ के संबंध में नैश्चिंत्य रहना चाहिए तथा यह विश्वास होना चाहिए कि भर्ती और पदोन्नति में पक्षपात नहीं किया जाएगा। कुशलता के लिए प्रोत्साहन और पुरस्कार तथा चूक के लिए दंड होना चाहिए।

सामान्यतः केंद्रीय, प्रांतीय और स्थानीय शासन के कर्मचारियों के वेतन और परिलाभ की दरें समान होनी चाहिए।

राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक तीनों ही कारणों से प्रशासन में मितव्ययिता एक राष्ट्रीय कर्तव्य है। सामान्य जन और प्रशासक वर्ग के जीवन स्तर में भारी अंतर असंतोष, भ्रष्टाचार, मुद्रास्फीति तथा सामाजिक विभेद पैदा करता है। इस अंतर को कम करना होगा। प्रत्युत सभी कर्मचारियों के मन में राष्ट्र निर्माण के महान् दायित्व से सहभागी होने का भाव जाग्रत होना चाहिए तथा वही उनके कर्म की मूल प्रेरणा होनी चाहिए।

राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक तीनों ही कारणों से प्रशासन में मितव्ययिता एक राष्ट्रीय कर्तव्य है

सरकारी कर्मचारियों के राजनीति संबंधी प्रजातंत्रीय अधिकारों को मतदान छोड़कर समाप्त करने की परंपरा चली आ रही है। सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार के साथ शासकीय सेवाकर्मियों का भी विस्तार होता रहा है। समाज के इस लगातार बढ़ते हुए वर्ग को राजनीति के प्रति उदासीन बनाना प्रजातंत्र के स्वस्थ विकास की दृष्टि से अनुपयुक्त है।

अतः अधिकारी वर्ग, सामान्य प्रशासन और सेना तथा पुलिस जैसे विभागों के अतिरिक्त शेष कर्मचारियों को राजनीति में भाग लेने की सुविधा होनी चाहिए।

न्याय

न्याय सस्ता, सर्वजन सुलभ तथा अविलंबित होना चाहिए। भारत की न्याय व्यवस्था अंग्रेज़ी परंपरा का अनुसरण करके ही चल रही है। उसमें सुधार और परिवर्तन करना होगा।

न्यायपालिका को कार्यपालिका से सब स्तरों पर पृथक् तथा मुक्त रहना चाहिए। न्यायपालिका की स्वतंत्रता और प्रामाणिकता में बाधक प्रवृत्तियों और व्यवस्थाओं को समाप्त किया जाए।

युवोत्थान

जनता पार्टी
उत्तर प्रदेश

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
दिसम्बर प्रथम/दिव्य काशी, भव्य काशी अंक 2021 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

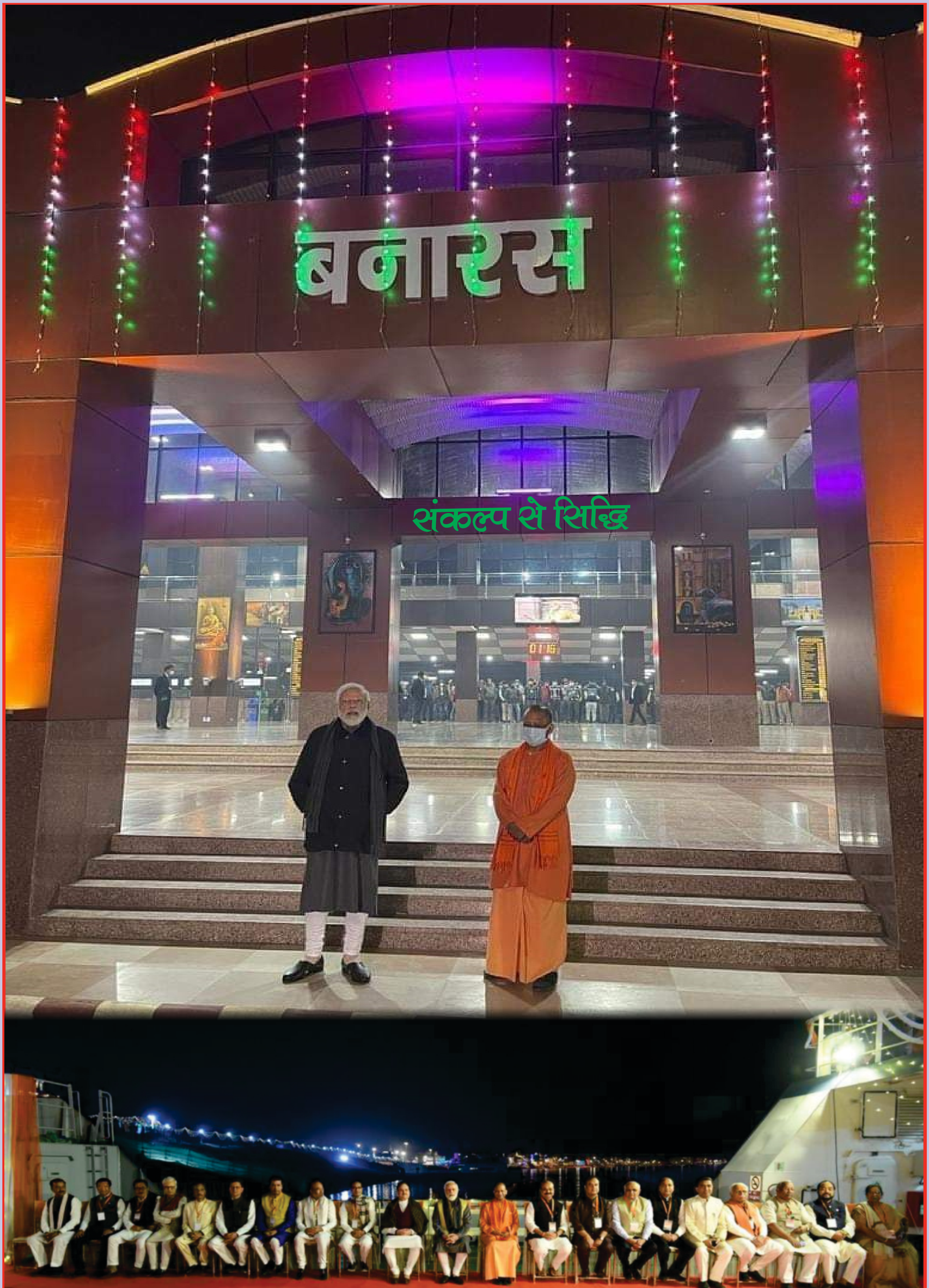

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी